वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 440
ISBN-978-93-84003-46-3

सर्वोपद्रव निवारक

श्री पार्श्वनाथ विधान

– रचयित्री –

**जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, दिव्यशक्ति,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि**

श्री ज्ञानमती माताजी

आश्विन शु. एकम् (25 सितम्बर 2014) तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के केवलज्ञानकल्याणक के शुभ अवसर पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित श्री गौतम गणधर वर्ष (2014-2015) के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वी. नि. सं. 2540, आश्विन शु. एकम्	मूल्य
1100 प्रतियाँ	25 सितम्बर 2014	48/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

ऊँ नमो मंगलं कुर्यात् , ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

जैन परम्परा में उपयोग तीन प्रकार का माना गया है। अशुभोपयोग, शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग। इन तीनों उपयोगों में से कोई न कोई उपयोग प्रतिक्षण जीव में चला ही करता है, जिसमें से अशुभोपयोग तो दुर्गति का कारण पापरूप है। जो सर्वथा हेय है। बात है उपादेयता की, शेष दोनों शुभोपयोग व शुद्धोपयोग उपादेय है। चूंकि गृहस्थ श्रावक के शुभोपयोग के अलावा शुद्धोपयोग हो नहीं सकता इसलिए शुभोपयोग ही उपादेय ठहरता है। शुद्धोपयोग वीतराग चारित्र से अविनाभावी है और वीतराग चारित्र निर्ग्रन्थ मुनियों के ही संभव है अतः श्रावकों को प्रयत्नपूर्वक शुभोपयोग की भावना में ही प्रवृत्त होना चाहिए। पूजन पाठ, सामायिक, दान आदि समस्त धार्मिक क्रियायें पुण्यरूप हैं और शुभोपयोग हैं इसलिए श्रावकों द्वारा शांति विधान, सिद्धचक्र विधान आदि मण्डल विधान करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, शांतिविधान, ऋषिमण्डल आदि छोटे–बड़े 100 विधानों की एवं 300 अन्य ग्रंथों की रचना की हैं। जिनमें से अभी कुछ विधान एवं ग्रंथ अप्रकाशित हैं। विधानों की श्रृंखला में यह **'सर्वोपद्रव निवारक श्री पार्श्वनाथ विधान'** रचकर नूतनकृति के रूप में पूज्य माताजी ने हम सबको प्रदान किया है। यह विधान सभी रोग, शोक, दुख, दारिद्र्य, संकट, सर्वोपद्रव आदि को दूर करके सुख को प्रदान करने वाला है। भक्ति करते–करते भक्त जब एक दिन भगवान बन सकता है तो भक्ति से छोटे–छोटे कार्य तो सिद्ध हो ही जाएंगे। यह नूतन विधान सभी के लिए मंगलकारी हो, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें एवं वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

आद्य वक्तव्य

–गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

अनादिकाल से इस मध्यलोक में अनंतानंत तीर्थंकर हो चुके हैं और आगे भी होते रहेंगे। वर्तमान काल में भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। इनमें से तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ हुए हैं। सभी तीर्थंकरों के अनंतानंत गुण हैं अतः उनके समस्त गुणों की पूजा करना, स्तुति करना संभव ही नहीं है। जैसा कि समन्तभद्र स्वामी ने कहा है–

गुणस्तोकं सदुल्लंघ्य, तद्बहुत्वकथास्तुतिः।
आनन्त्यात्ते गुणान् वक्तुं, अशक्यास्त्वयि सा कथम्।।86।।
तथापि ते मुनीन्द्रस्य, यतो नामापि कीर्तितम्।
पुनाति पुण्यकीर्तेर्नस्ततो ब्रूयाम किंचन।।87।।

अर्थात् किसी में गुण तो थोड़े हों और उनको बहुत बढ़ा–चढ़ाकर कहना इसका नाम स्तुति है किन्तु हे भगवन् ! आप में गुण तो अनंत हैं, उनका कहना तो शक्य ही नहीं है पुनः आपकी स्तुति कैसे की जा सकती है ? फिर भी मुनियों के अधिपति ऐसे आपके नाममात्र को लेना भी, जीवों को पवित्र कर देता है इसीलिए हम आपका किंचित् पुण्य कीर्तन–स्तवन करते हैं।

इस सर्वोपद्रव निवारक श्री पार्श्वनाथ विधान में भगवान के एक हजार आठ गुणों की स्तुति, पूजा, वन्दना की है। भगवान पार्श्वनाथ जिन्होंने क्षमाधर्म का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हुए दस भवों तक कमठ के उपसर्ग को सहा और भगवान पार्श्वनाथ बनें। वे विघ्नहरण पार्श्वनाथ, संकटहर्ता पार्श्वनाथ, कालसर्पहर भगवान पार्श्वनाथ, केतुग्रहारिष्ट निवारक पार्श्वनाथ, उपसर्गजयी पार्श्वनाथ, सर्वोपद्रव निवारक पार्श्वनाथ, सहस्रफणा पार्श्वनाथ आदि अनेक नामों से जाने जाते हैं। इनकी पूजा, भक्ति से अनेक मनोरथों की सिद्धि हो जाती है। भगवान की भक्ति से अकाल मृत्यु व असाध्य रोग भी टल जाते हैं। यह एक चमत्कारिक विधान है।

इस विधान को करके सभी भव्य जीव अपने मनोरथों की सिद्धि करें और भगवान पार्श्वनाथ के गुणों को जीवन में धारण करते हुए एक दिन अपनी आत्मा को भगवान पार्श्वनाथ के समान बना लें, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

देव असुर विद्याधर वन्दित, चरण सरोरुह पार्श्वप्रभो।
महाप्रभावी मोहमल्ल, हस्ती के लिए सिंह सम हो।।
महिमाशाली रागवृक्ष को, जड़ से कीना उन्मूलन।
कमठोपसर्गजयि पारस का, करूँ संस्तवन शुचिकर मन।।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका, राष्ट्रगौरव, दो बार डी. लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने इस 'सर्वोपद्रव निवारक श्री पार्श्वनाथ विधान' में सर्वप्रथम पृथ्वी छंद के नौ श्लोकों में भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति करते हुए उसका पद्यानुवाद भी दिया है जिससे सभी भक्तगण अर्थ को समझकर भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति कर सकें।

मंगलाचरण के बाद इस विधान में अर्हंत पूजा है। फिर सर्वोपद्रव निवारक श्री पार्श्वनाथ पूजा विधान है। इसमें भगवान पार्श्वनाथ के पंचकल्याणक के अर्घ्य के बाद में भगवान के 1008 नामों के 1008 अर्घ्य हैं। एक शतक अर्घ्य के बाद में एक-एक पूर्णार्घ्य हैं। जिसमें भगवान के सौ नामों का एक साथ अर्घ्य चढ़ाया है। जैसे–

'श्रीमान्' नाम से लेकर के, त्रिजगत्परमेश्वर' तक नामा।
सौ नाम आपके सार्थक हैं, इंद्रों से स्तुत गुणधामा।।
प्रभु पार्श्व मंत्र को जप जप के, बस 'सिद्ध' नाम इक पा जाऊँ।
प्रभु तुम सम शुद्ध अवस्था हो, नहिं बार बार जग में आऊँ।।1।।

इसी तरह से एक–एक शतक के बाद एक–एक पूर्णार्घ्य का वर्णन करते हुए अन्तिम दसवें शतक में एक सौ आठ अर्घ्य के बाद पूर्णार्घ्य एवं एक हजार आठ नामों का भी एक पूर्णार्घ्य है, जिसमें पूज्य माताजी ने लिखा है अनंत गुणों के रत्नाकर भगवान पार्श्वनाथ को अनंतों बार नमन करते हुए मैं शिवसुख को प्राप्त करूँ एवं पूजन करने वाले, कराने वाले भी मोक्षसुख को प्राप्त करें। इसके बाद भगवान पार्श्वनाथ के मंत्र की एक जाप्य लौंग से या पीले चावल से करने के बाद जयमाला है। जिसमें भगवान पार्श्वनाथ के जीवन का पूरा इतिहास आ जाता है। तत्पश्चात् बड़ी जयमाला है जिसमें पूज्य माताजी ने लिखा है कि भगवन्! आप मेरी मनोकामना पूर्ण करें जिससे कि मुझे पुनः पुनः संसार में आना न पड़े। विधान के अंत में प्रशस्ति है जिसमें माताजी ने लिखा है कि यह विधान भादों सुदी अष्टमी वी. नि. सं. 2540 को हस्तिनापुर तीर्थ पर मैंने स्वरचित विधान से संकलित किया है। प्रशस्ति के बाद भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति, आरती, एवं भजन है। **इस विधान में कुल 2 पूजा, 1008 अर्घ्य, 11 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमाला हैं।**

यह विधान सभी के लिए मंगलकारी हो। पूज्य माताजी दीर्घायु प्राप्त करें एवं स्वस्थ रहें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

दो शब्द

–आर्यिका सुव्रतमती

स्वदोष शान्त्यावहितात्मशांतिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश भयोपशान्त्यै शांतिर्जिनो मे भगवान्शरण्यः।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि, वर्तमानकालीन पिच्छीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से मैं वर्तमान में सभी भव्य जीवों को आगम के ज्ञान से, पूर्वाचार्यों की वाणी से सिंचित करूँ।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम हैं। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पंक्तियों को पढ़ते हैं तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं। भक्ति में उनके पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा कर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। जब भगवान के दर्शनमात्र से पाप कर्म निर्जीण हो जाते हैं तो उनकी पूजा भक्ति करने से तो विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है।

धवला पु.–6 में आचार्य श्री वीरसेनस्वामी ने जिनबिम्ब दर्शन के महत्त्व का कितना सुन्दर वर्णन किया है–

दर्शनेन जिनेन्द्राणां पाप संघात कुंजरम्।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा।।

अर्थात् जिनेन्द्रों के दर्शन से पाप संघातरूपी कुंजर के सौ टुकड़े हो जाते हैं, जिस प्रकार कि वज्र के आघात से पर्वत के सौ टुकड़े हो जाते हैं।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति पूजा विशेष फल को देने वाली है। पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, राष्ट्र गौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी. लिट्, आदि अनेक उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान हैं। इस विधान की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर कर शीघ्र ही श्रुतज्ञान की प्राप्ति करावे इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषय सूची

क्र.सं.		पृष्ठ सं.
1.	मंगलाचरण	1
2.	नवदेवता पूजा	5
3.	सर्वोपद्रव निवारक श्री पार्श्वनाथ पूजा विधान	10
4.	अथ पंचकल्याणक अर्घ्य	13
5.	अथ एक हजार आठ अर्घ्य	15
6.	जयमाला	135
7.	बड़ी जयमाला	137
8.	प्रशस्ति	140
9.	श्री पार्श्वजिन स्तोत्र	141
10.	भगवान श्री पाश्र्वनाथ की आरती	142
11.	भजन	143
12.	भजन	144

सर्वोपद्रव निवारक श्री पार्श्वनाथ विधान का मंडल

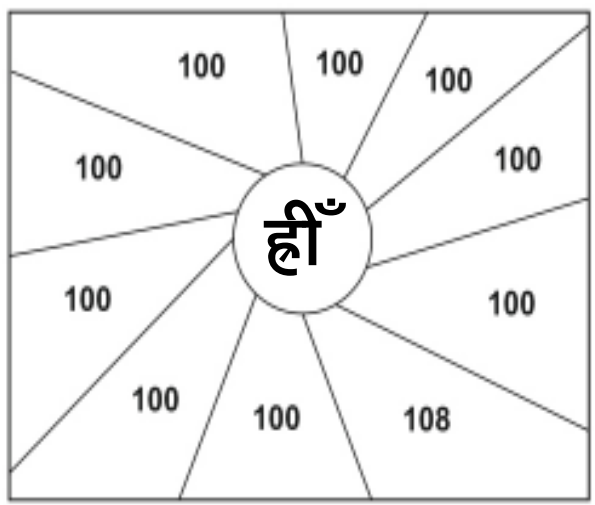

कुल १० कोष्ठक। प्रत्येक कोष्ठक में १००–१०० अर्घ्य, अन्तिम दसवें कोष्ठक में १०८ अर्घ्य। कुल मिलाकर १००८ अर्घ्य।

कुल पूजा–२, अर्घ्य–१००८, पूर्णार्घ्य–११, जयमाला–३।

सर्वोपद्रव निवारक

श्री पार्श्वनाथ विधान

मंगलाचरण

–पृथ्वी छंद–

सुरासुर–खगेन्द्रवंद्य–चरणाब्जयुग्मं प्रभुं।
महामहिम–मोहमल्ल–गजराज–कंठीरवं।।
महामहिम–रागभूमिरुह–मूलमुत्पाटनं।
स्तवीमि कमठोपसर्गजयि–पार्श्वनाथं जिनं।।1।।

देव असुर विद्याधर वन्दित, चरण सरोरुह पार्श्व प्रभो।
महा प्रभावी मोहमल्ल, हस्ती के लिए सिंह सम हो।।
महिमाशाली राग वृक्ष को, जड़ से कीना उन्मूलन।
कमठोपसर्गजयि पारस का, करूँ संस्तवन शुचिकर मन।।1।।

दुरंतघनमोह–कुंभिमद–सिंहपार्श्वो जयी।
मुनीन्द्र–गणसेवितस्त्रिभुवनैकसूर्यो महान्।।
कठोरकमठारिणा भवभवे कृतं संकटं।
महार्णवमनः ! क्षमाधर ! विभो ! त्वया सह्यत।।2।।

पापरूप घनमोह हस्तिपद, नाश करन को सिंह जयी।
हे पारस ! सुर मुनिगण सेवित ! त्रिभुवन के इक सूर्य तुम्हीं।।
क्रूर कमठ शत्रू ने तुमको, दश भव तक बहु कष्ट दिये।
क्षमाशील ! हे महासमुद्रमनः ! प्रभु तुमने सभी सहे।।2।।

स्वदोषरजसां क्षयाय शुचिशांतभावं श्रितः।
अनंतभव–संगताष्टविध–कर्मवृक्षांतकः।।
स्वमोहविजयी जितेन्द्रियमना मदेर्ष्याविजित्।
ममापि जिनपार्श्वनाथ ! कुरु मोहनाशं त्वरं।।3।।

निज के दोष नाश करने को, निर्मल शांत भाव धरकर।
भव अनंत के अष्टकर्म तरु, को निर्मूल किया प्रभुवर।।
मोह द्वेष विजयी इन्द्रिय मन–विजयी ईर्ष्या मानजयी।
हे प्रभु पार्श्वनाथ ! मेरा भी, मोह नाश झट करो सही।।3।।

नमोऽस्तु गतजन्मने भवसमुद्रसंशोषिणे।
नमोऽस्तु गतमृत्यवे सकलसौख्यसंपोषिणे।।
नमोऽस्तु गतकर्मणे सकलभव्यसंतोषिणे।
नमोऽस्तु जिनपार्श्व ! ते सकल मोहसंहारिणे।।4।।

नमोऽस्तु तुमको जन्मरहित, भवसागर के शोषणकारी।
नमोऽस्तु तुमको मृत्युरहित, सबको सुखमयपोषणकारी।।
नमोऽस्तु तुमको कर्मरहित सब, जन को सन्तोषित करते।
नमोऽस्तु तुमको हे पारसजिन ! सब जन मोह नाश करते।।4।।

हिनस्तु विधिभूभृतां मम समस्तसंतापहृत्।
पिनष्टु ममसंकटं विविधकर्मपाकोदितं।।

लुनातु भवबीजतः विविधरागदुःखांकुरान्।
पुनातु भवपंकतः जिनप ! मां पवित्रः पुमान्।।5।।

जग संतापहरन मेरे सब, कर्माचल को चूर करो।
विविधकर्म के उदय जनित मम, भव संकट को चूर्ण करो।
जन्म बीज से विविध रागमय, दुःखांकुर उन्मूल करो।
जिन ! पवित्र ! प्रभु भव कीचड़ से, मुझे निकाल पवित्र करो।।5।।

त्वदीयगुणरत्नराशि–जलधेर्गृहीत्वा गुणान्।
अनन्तजनता त्वदीयसदृशं पदं प्राप्नुयात्।।
तथापि गुणलेशमात्रमपि न व्यय प्राप्तवान्।
ततो हि गुणसागर ! त्रिभुवनैकनाथो महान्।।6।।

तव गुणरत्नसिंधु से भगवन् ! अनंतगुण को लेकर के।
हे प्रभु ! अनंतभविजन तुम, सदृश शिवपद को पा जाते।।
फिर भी गुण का लेश मात्र भी, नहिं कम होता तव गुण में।
हे त्रिभुवनपति ! आप अतः, अनुपम अनंत गुण सागर हैं।।6।।

जिनेन्द्र ! तवभक्तिभारवशतः फणी धारयन्।
फणातपनिवारणं महति कष्टकाले त्वयि।।
सुमेरुहृदयो जिनस्त्वदुपकारि नो तस्य तत्।
सुखाय भुवनैकबोधशुचिकेवलं त्वं श्रितः।।7।।

हे जिन ! तेरी भक्ति भारवश, से धरणेन्द्र झटिति आकर।
तव उपसर्ग काल में शिर पर, फण को छत्र किया सुखकर।।
मेरुहृदय प्रभु ! तव उपकारी, नहिं उनही को है सुखकर।
प्रभु को त्रिभुवन सूर्य ज्ञानकैवल्य प्राप्त हो गया प्रखर।।7।।

नमोऽस्तु निजसूर्य ! विश्वनुत ! विश्वतत्त्वज्ञ ! ते।
नमोऽस्तु जिनपार्श्वचंद्र ! कुमुदैकबंधो ! प्रभो।।
विधेहि करुणांबुधे ! मयि कृपां भवात् पाहि च।
पुनीहि भगवंस्त्वमेव शरणागतं मां त्वरं।।8।।

नमोऽस्तु तुमको हे जिन भास्कर ! जगनुत ! विश्वतत्त्वज्ञानी।
नमोऽस्तु तुमको हे जिन पारसचन्द्र ! कुमुदबंधो स्वामी।।
करुणाह्रद ! मुझ पर करुणा, करिये भव से रक्षा करिये।
हे भगवन् ! शरणागत मुझको, आप हि झट पवित्र करिये।।8।।

पार्श्वनाथ ! स्तवीमि त्वां, भक्त्या सिद्ध्यै त्रिशुद्धितः।
चतुर्ज्ञानमतिक्रांत – पंचमज्ञानलब्धये।।9।।

हे जिन पार्श्वप्रभो ! भक्ती से, मन वच तन की शुद्धी से।
सकलसिद्धि अरु मुक्ति के लिए, करूँ तुम्हारी संस्तुति मैं।।
चार ज्ञान से रहित पाँचवें, ज्ञान प्राप्ति के लिए नमूं।
मम अज्ञान ''ज्ञानमती'' हरिये, पंचमगति को शीघ्र गमूं।।9।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं. १

नवदेवता पूजन

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।

वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

–दोहा –

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

पूजा नं. २
सर्वोपद्रव निवारक
श्री पार्श्वनाथ पूजा विधान

अथ स्थापना

(तर्ज–जहाँ डाल डाल पर....)

श्री पार्श्वनाथ जी की पूजन से, मिटता भव भव का फेरा।
है वंदन उनको मेरा.....2।।
जहाँ काल अनंतानंतों तक, रहता निज में हि बसेरा।
है वंदन उनको मेरा.....2।।
जिनके गुणमणियों की माला, गूंथ गूंथ कर लाते।
सुरपति चक्रवर्ति हर्षित हो, प्रभु चरणों में चढ़ाते।।
उनके चरण कमल अर्चन से, होता ज्ञान सबेरा।
है वंदन उनको मेरा.....2।।श्री पार्श्व.।।
ऐसे जिनवर का आह्वानन, कर हम धन्य बनेंगे।
हृदय कमल में प्रभों! विराजो, पूजन नमन करेंगे।।
नाथ! आपका सन्निध पाकर, जन्म सफल है मेरा।
है वंदन उनको मेरा.....2।।श्री पार्श्व.।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकश्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकश्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकश्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टकं-भुजंगप्रयात छंद

तृषा चाह की है बुझी ना कभी भी।
इसी हेतु से नीर लाया प्रभु जी।।

जजूँ पार्श्व भगवंत के पदकमल को।
मिटाऊँ स्वयं के जनम और मरण को।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

महाताप संसार में मोह का है।
इसी हेतु से पीत चंदन घिसा है।।
जजूँ पार्श्व भगवंत के पदकमल को।
मिटाऊँ स्वयं के जन्म और मरण को।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ सौख्य मेरा क्षणिक नाशवंता।
इसी हेतु से शालि को धोय संता।।जजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोभू जगत में सभी को भ्रमावे।
इसी हेतु से पुष्प चरणों चढ़ावें।।जजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधारोग सबसे बड़ा है जगत में।
इसी हेतु नैवेद्य लाया सरस मैं।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाघोर अंधेर अज्ञान का है।
इसी हेतु से दीप लौ जगमगा है।।जजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

महादुष्ट आठों करम संग लागे।
इसी हेतु से धूप खेऊँ यहाँ पे।।जजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववाञ्छीत फल हेतु घूमा अभी तक।
फलों को इसी हेतु अर्पूं प्रभू अब।।
जजूँ पार्श्व भगवंत के पदकमल को।
मिटाऊँ स्वयं के जन्म और मरण को।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

महा अर्घ्य ले आपको पूजता हूँ।
महामोह के फंद से छूटता हूँ।।जजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौबोल छंद–

(तर्ज–धन्य हस्तिनापुर की नगरी.....)

धन्य आज का दिवस धन्य ये, प्रभू अर्चना बेला है।
धन्य जन्म है सभी जनों का, लगा भक्त का मेला है।।
कंचन झारी में गंगा जल, प्रासुक शीतल मीठा है।
प्रभु चरणों में धारा देते, मिलता सौख्य अनूठा है।।
इसी शांतिधारा करने से, तीनों जग में शांती हो।
मुझको ऐसी शांति मिले प्रभु, फिर ना कभी अशांती हो।।
प्रभो! आपकी दया दृष्टि से, मिटे जगत का मेला है।
धन्य आज का दिवस धन्य ये, प्रभू अर्चना बेला है।।1।।

शांतये शांतिधारा।

धन्य आज का दिवस धन्य ये, प्रभू अर्चना बेला है।
धन्य जनम है सभी जनों का, लगा भक्त का मेला है।।

कमल केतकी जुही चमेली, सुरभित पुष्प चुनाये हैं।
जिनवर चरण कमल में, पुष्पांजली चढ़ाने आये हैं।।
पुष्पांजलि से धन सुख संपति, संतति वृद्धि समृद्धी हों।
जनम जनम के क्लेश दूर हों, नवनिधि रिद्धी सिद्धी हों।।
नाथ! आपकी दया दृष्टि बिन, बहुत दुखों को झेला है।
धन्य आज का दिवस धन्य ये, प्रभू अर्चना बेला है।।2।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका गर्भ कल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।

पार्श्वनाथ.।।टेक0।।

अश्वसेन पितु वामा माता, तुमको पाकर धन्य हुए।
तिथि वैशाख वदी द्वितिया को, गर्भ बसे जगवंद्य हुए।।
प्रभु का गर्भकल्याणक पूजत, मिले निजातम सार है।।

पार्श्वनाथ.।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका जन्मकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।

पार्श्वनाथ.।।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि उत्तम, वाराणसि में जन्म हुआ।
श्री सुमेरु की पांडुशिला पर, इन्द्रों ने जिन न्हवन किया।।
जो ऐसे जिनवर को जजते, हो जाते भव पार हैं।।

पार्श्वनाथ.।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका तपकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।

पार्श्वनाथ.।।

पौषवदी ग्यारस जाति स्मृति, से बारह भावन भाया।
विमलाभा पालकि में प्रभु को, बिठा अश्ववन पहुँचाया।।
स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, जजत मिले भव पार है।।

पार्श्वनाथ.।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका ज्ञानकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।

पार्श्वनाथ.।।

चैत्रवदी सुचतुर्थी[1] प्रातः, देवदारु तरु के नीचे।
कमठ किया उपसर्ग घोर तब, फणपति पद्मावति पहुँचे।।
जित उपसर्ग केवली प्रभु का, समवसरण हितकार है।।

पार्श्वनाथ.।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका मोक्षकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।

पार्श्वनाथ.।।

श्रावण शुक्ल सप्तमी पारस, सम्मेदाचल पर तिष्ठे।
मृत्युजीत शिवकांता पायी, लोकशिखर पर जा तिष्ठे।।

---

1. उत्तरपुराण में चौदश है। कल्याणमाला पुस्तक में चतुर्थी तिथि है।

सौ इन्द्रों ने पूजा करके, लिया आत्म सुखसार है।।
पार्श्वनाथ.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

पार्श्वनाथ पादाब्ज को, पूजूँ बारम्बार।
पूर्ण अर्घ्य से जजत ही, पाऊँ सौख्य अपार।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ एक हजार आठ अर्घ्य

(1008 अर्घ्य)

–दोहा–

पार्श्वनाथ भगवंत के, गुणमणि नंतानंत।
नाम मंत्र उनके जजूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।

।।अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।।

(1) प्रथम शतक

नान्त्य चतुष्टय पति प्रभो! आप नाम 'श्रीमान्'।
केवलज्ञान विभूति युत, जजूँ पार्श्व भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवच बिन प्रतिबुद्ध हों, अतः'स्वयंभू' आप।
परमानन्दामृत निमित, जजत बनूँ निष्पाप।।2।।

ॐ ह्रीं स्वयंभुवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमादि धर्म से, शोभित होकर नाथ।
'वृषभ' नाम युत आपको, जजूं नमाऊं माथ।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंभव' सुखदाता तुम्हीं, श्रेष्ठ जन्म ले नाथ।
जजूँ पार्श्व परमातमा, नमूँ नमाकर माथ।।4।।

ॐ ह्रीं शंभवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभव परमानंद सुख, अनुभव करो हमेश।
स्वात्मसुखामृत हेतु मैं, जजूँ पार्श्व परमेश।।5।।

ॐ ह्रीं शंभवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा चिन्मय शुद्ध बुध, उससे प्रगटे आप।
अतः 'आत्मभू' पार्श्व को, जजत बनूँ निष्पाप।।6।।

ॐ ह्रीं आत्मभुवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शोभते गुण सहित, आप 'स्वयंप्रभ' देव।
निजगुण प्रगटन हेतु मैं, जजूँ करूँ भव छेव।।7।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी आप 'प्रभु', मम दुख हरण समर्थ।
जजूँ सर्वसुख हेतु मैं आप नाम अन्वर्थ।।8।।

ॐ ह्रीं प्रभवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगें परमानंदसुख, 'भोक्ता' पार्श्व जिनंद।
भव में दुख भोगे बहुत, जजत मिटे भव फंद।।9।।

ॐ ह्रीं भोक्त्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान सुचक्षु से, त्रिभुवन में हो व्याप्त।
अतः 'विश्वभू' आप हैं, नमूँ पार्श्व दिन रात।।10।।

ॐ ह्रीं विश्वभुवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनः न भव को धारते, हे 'अपुनर्भव' सिद्ध।
पुनर्जन्म के नाशने, जजूँ आपको नित्त।।11।।

ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व आत्मा निज सदृश, लख 'विश्वात्मा' आप।
पूर्ण ज्ञानमय आपको, जजत मिटे संताप।।12।।

ॐ ह्रीं विश्वात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के जीव के, स्वामी पार्श्व जिनेश।
मेरी भी रक्षा करो, जजूँ 'विश्व लोकेश'।।13।।
ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी तरफ में चक्षु हैं, केवल दर्शनरूप।
नमूँ 'विश्वतश्चक्षु' को, पाऊँ स्वात्मस्वरूप।।14।।
ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी क्षरण या क्षय नहीं, जग में आप प्रधान।
'अक्षर' पार्श्व प्रभों तुम्हें, जजत मिले निजथान।।15।।
ॐ ह्रीं अक्षराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल जगत को जानते, अतः 'विश्ववित्' नाथ।
सकल ज्ञान मेरा करो, सदा नमाऊँ माथ।।16।।
ॐ ह्रीं विश्वविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विमल कैवल्य के, स्वामी नमूँ हमेश।
सब विद्यापति के पती, आप 'विश्वविद्येश'।।17।।
ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पदार्थ को जानकर सबको दें उपदेश।
'विश्वयोनि' को नित जजूँ, मिटे सकल भव क्लेश।।18।।
ॐ ह्रीं विश्वयोनये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप को नाश नहिं, अविनाशी प्रभु नित्य।
अतः 'अनश्वर' पार्श्वप्रभु, जजत लहूँ सुख नित्य।।19।।
ॐ ह्रीं अनश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जग को देखा अतः सकलदर्शि हो आप।
नाम 'विश्वदृश्वा' प्रभो, जजत मिटे भव ताप।।20।।
ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान प्रकाश से, व्याप्त किया सब विश्व।
नाम मंत्र 'विभु' आपका, जजत दिखे सब विश्व।।21।।
ॐ ह्रीं विभवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँगति भ्रमते जीव को, पहुँचाते शिवमाहिं।
'धाता' परम दयालु हो, पूजत दुःख नशाहिं।।22।।
ॐ ह्रीं धात्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के ईश तुम, कर्मदूर 'विश्वेश'।
रत्नत्रय निधि हेतु मैं, वंदूँ भक्ति हमेश।।23।।
ॐ ह्रीं विश्वेशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित उपदेशक जीव के, नेत्र समान महान्।
अतः 'विश्वलोचन' प्रभो, पार्श्व नमूँ सुखखान।।24।।
ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अलोक समस्त को, ज्ञान ज्योति से व्याप।
अतः 'विश्वव्यापी' प्रभो, जजत मिटे भव ताप।।25।।
ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मविधी कहते 'विधू' कर्मदूर जिनराज।
ज्ञानकिरण से मोहतम, हरो जजूँ मैं आज।।26।।
ॐ ह्रीं विधवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज सृष्टी को निर्मिता, 'वेधा' जग विख्यात।
धर्मसृष्टि सर्जन किया, नमत मिटे भव आर्त।।27।
ॐ ह्रीं वेधसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शाश्वत' कभी न नष्ट हों, पार्श्व प्रभो अमलान।
निज पद शाश्वत दीजिये, जजूँ सदा धर ध्यान।।28।।
ॐ ह्रीं शाश्वताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में चहुँदिशी, मुख दीखे प्रभु आप।
अतः 'विश्वतोमुख' तुम्हीं, नमत हरूँ संताप।।29।।
ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्रावक के भेद से, उपदेशा द्वयधर्म।
अतः 'विश्वकर्मा' तुम्हीं, जजत मिले निजशर्म[1]।।30।।
ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सुख।

जग में सब में ज्येष्ठ तुम, 'जगज्येष्ठ' भगवान।
जजूँ भक्ति से नित्य मैं, करो मुझे अमलान।।31।
ॐ ह्रीं जगज्ज्येष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आपके ज्ञान में, सब पदार्थ झलकंत।
'विश्वमूर्ति' तुमको जजत, निज गुणमणि विलसंत।।32।।
ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को जीतते, सद्दृष्टी मुनि आदि।
उनके ईश्वर को नमूँ, पार्श्व! 'जिनेश्वर' सादि।।33।।
ॐ ह्रीं जिनेश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जगत इक समय में अवलोकें प्रभु आप।
नमूँ 'विश्वदृक्' को सतत, समकित हो निष्पाप।।34।।
ॐ ह्रीं विश्वदृशे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब प्राणी के ईश तुम, अतः 'विश्वभूतेश'।
नमत ज्ञान कलिका खिले, मिलता सौख्य अशेष।।35।।
ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विश्व को तेज से, व्याप्त किया भगवान।
'विश्वज्योति' को नित नमूँ, नशें कर्म बलवान।।36।।
ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम से बढ़कर नहिं कोई, जग में ईश्वर होय।
नमूँ 'अनीश्वर' को सतत, कर्मकालिमा धोय।।37।।
ॐ ह्रीं अनीश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक अरि जीत के, हुये पार्श्व 'जिन' सिद्ध।
ज्ञानादिक आनन्त्य गुण, जजत लहूँ नव निद्ध।।38।।
ॐ ह्रीं जिनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्कृष्ट स्वभाव से, जो नित ही जयशील।
'जिष्णु' पार्श्व भगवान को, नमत बनूँ जयशील।।39।।
ॐ ह्रीं जिष्णवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंत गुण आपके, माप सके ना कोय।
नाथ 'अमेयात्मा' अतः, नमत सिद्धपद होय।।40।।
ॐ ह्रीं अमेयात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी के ईश्वर तुम्हीं, 'विश्वरीश' शुभ नाम।
जिनगुण संपद हेतु मैं, पूजूँ करूँ प्रणाम।।41।।
ॐ ह्रीं विश्वरीशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जगत के जीव के, रक्षक हो भगवंत।
नमूँ 'जगत्पति' आपको जजत, करूँ भव अंत।।42।।
ॐ ह्रीं जगत्पतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अनंत संसार को, जीता धर ध्यानास्त्र।
प्रभु 'अनंतजित्' हो गये, जजत मिले धर्मास्त्र।।43।।
ॐ ह्रीं अनंतजिते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच के गोचर नहीं, आत्मस्वरूप अचिन्त्य।
प्रभो 'अचिन्त्यात्मा' तुम्हीं, पूजत सौख्य अनिंद्य।।44।।
ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों का उपकार कर, 'भव्यबंधु' हो आप।
रत्नत्रय संपत् भरो, जजूँ करो निष्पाप।।45।।
ॐ ह्रीं भव्यबन्धवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह आवरण द्वय तथा अन्तराय को घात।
नाथ 'अबन्धन' हो गये, नमत मिले सुख सात।।46।।
ॐ ह्रीं अबन्धनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि युग को किया, हुये तीर्थकर देव।
जजत 'युगादीपुरुष' को, मिले स्वपद स्वयमेव।।47।।
ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानादिक अतुल, गुणगण वृद्धि करंत।
'ब्रह्मा' हो प्रभु आप ही, जजत बने गुणवंत।।48।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच ज्ञानमय आप हैं, पंच परमगुरु आप।
'पंचब्रह्ममय' आपको, नमत मिटे भवताप।।49।।
ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षरूप आनंदमय, 'शिव' कहलाये आप।
ज्ञानानंद मिले मुझे, जजत करूँ भव घात।।50।।
ॐ ह्रीं शिवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद–

भविजन का पालन करते, सब गुण को पूरण करते।
'पर' नाम मंत्र पूजूँ मैं, पर पुद्गल से छूटूँ मैं।।51।।
ॐ ह्रीं पराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' हो नाथ तुम्हीं हो, जग में उत्कृष्ट तुम्हीं हो।
तुम नाम मंत्र पूजन से, निज में समरससुख प्रगटे।।52।।
ॐ ह्रीं परतराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय से गम्य न तुम हो, प्रभु 'सूक्ष्म' नामधर तुम हो।
तुम नाम मंत्र मैं पूजूँ, सब जन्म मरण से छूटूँ।।53।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्माय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुस्थित हो परमसुपद में, 'परमेष्ठी' नाम जगत में।
तुम नाम मंत्र की अर्चा, जिनगुण की संपति भर्ता।।54।।
ॐ ह्रीं परमेष्ठिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सदा एक से रहते, इसलिये 'सनातन' कहते।
मन वच तन से मैं वंदूँ, यमराज दुःख को खंडूँ।55।।
ॐ ह्रीं सनातनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'स्वयंज्योति' हो जग में, आत्मा रवि सम चमके है।
एकाग्रमना पूजूँ मैं, सब दुःखों से छूटूं मैं।।56।।
ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अज' हो उत्पन्न कभी ना, प्रभु तुम मृत्यू से हीना।
मैं पूजूँ श्रद्धा धरके, मुझ में रत्नत्रय प्रगटे।।57।।
ॐ ह्रीं अजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं गर्भवास है प्रभु को, अत एव 'अजन्मा' तुम हो।
मैं पूजूँ भक्ति सहित हो, परमानंदामृत भर दो।।58।।
ॐ ह्रीं अजन्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश अंगों की रचना, तुम से ही है उत्पन्ना।
हो 'ब्रह्मयोनि' भगवंता, पूजत होऊँ सुखवंता।।59।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योनी हैं लाख चुरासी, उनमें उत्पत्ति न होती।
इसलिये 'अयोनिज' भगवन्! पूजूँ नहिं घूमूँ भववन।।60।।
ॐ ह्रीं अयोनिजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह अरी को जीते, 'मोहारि विजयी'[1] हो नीके।
मैं अशुभ कर्म को नाशूं, निज में सज्ज्ञान प्रकाशूँ।।61।।
ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोत्कर्ष से जयते, 'जेता' इससे मुनि कहते।
मैं पूजूँ तुम्हें रुची से, आत्मा में जयश्री प्रगटे।।62।।
ॐ ह्रीं जेत्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब श्रीविहार प्रभु का हो, वृषचक्र अग्र चलता हो।
अतएव 'धर्मचक्री' हो, जजते निजवृषचक्री हो।।63।।
ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दया ध्वजा अतिशायी, तुम नाम मंत्र सुखदायी।
अतएव 'दयाध्वज' पूजूँ, हो दया तभी मैं छूटूँ।।64।।
ॐ ह्रीं दयाध्वजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब शांत हुये कर्मारी, पूजत हो सुख अविकारी।
अतएव 'प्रशांतारी' को, में नमूँ दुःखहारी को।।65।।
ॐ ह्रीं प्रशांतारये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1.टीका में 'मोहारिः' और 'विजयी' ऐसे दो पद लिखे हैं। आगे 'सिद्धसिद्धान्तवित्' एक किया है।

प्रभु हो अनंत ज्ञानात्मा, नहिं अंत कभी हो आत्मा।
अतएव 'अनन्तात्मा' हो, पूजत मम शुद्धात्मा हो।।66।।
ॐ ह्रीं अनन्तात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुक्ल ध्यान को धरके, 'योगी' हो जग में चमके।
मुझमें समतारस छलके, मैं पूजूँ बहुरुचि धरके।।67।।
ॐ ह्रीं योगिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर देवादि मुनीशा, उनसे अर्चित जगदीशा।
हे 'योगिश्वरार्चित' नाथा, मैं नमूँ नमाऊँ माथा।।68।।
ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा-आत्मा को जाने, अतएव 'ब्रह्मविद्' मानें।
निज आत्मज्ञान के हेतू, तुम भक्ती भवदधि सेतू।।69।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्म मर्म को जाने, करुणा का मर्म पिछाने।
'ब्रह्मातत्त्वज्ञ' बखाने, मैं नमूँ मोहतम हानें।।70।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो केवलज्ञान स्वविद्या, जाने अनंतगुणविद्या।
'ब्रह्मोद्यावित्' वे स्वामी, मैं नमूँ बनूँ शिवगामी।।71।
ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवहेतु यत्न करें जो, यतिवर उनके ईश्वर जो।
मैं नमूँ 'यतीश्वर' आत्मा, पूजत प्रगटे अंतरात्मा।।72।।
ॐ ह्रीं यतीश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्म कलंक विदूरा, अतएव 'शुद्ध' गुणपूरा।
मैं पूजूँ भक्ति बढ़ाके, हर्षूं पारस गुण पाके।।73।।
ॐ ह्रीं शुद्धाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो केवलज्ञान स्वरूपी, बुद्धी से 'बुद्ध' बने जी।
मुझमें ज्ञानामृत भरिये, मैं पूजूँ भव दुःख हरिये।।74।।
ॐ ह्रीं बुद्धाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शुद्ध ज्ञान से चमके, अतएव 'प्रबुद्धात्मा' हैं।
निज पर का ज्ञान प्रगट हो, अतएव नमूँ प्रमुदित हो।।75।।
ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कारज सिद्ध तुम्हारे, पूर्ती कर मुक्ति पधारे।
'सिद्धार्थ' ख्यात हैं जग में, पूजत ही सुख हो निज में।।76।।
ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शासन सिद्ध कहा है, वह दया धर्म की जड़ है।
मैं नमूँ 'सिद्धशासन' को, करूँ आत्मा पर शासन जो।।77।।
ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतकृत्य हुये जिनराजा, लोकाग्र विराजें जो जा।
उन 'सिद्ध'[1] प्रभू को पूजूँ, संपूर्ण कर्म से छूटूँ।।78।।
ॐ ह्रीं सिद्धाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादशांग सिद्धांता वह कहा अनादि अनन्ता।
'सिद्धांतसुवित्'[2] कहलाये, हम भक्ती से गुण गायें।।79।।
ॐ ह्रीं सिद्धान्तविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों ने नित आराध्या, अगणित गुणमणि को साध्या।
तुम 'ध्येय' ध्यान के योग्या, पूजत होते आरोग्या।।80।।
ॐ ह्रीं ध्येयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सिद्ध देवगण माने, उनके आराध्य बखाने।
हो 'सिद्धसाध्य' परमात्मा, पूजत प्रगटे परमात्मा।।81।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो सब जग के हितकारी, सुखकारी सब अघहारी।
श्रीपार्श्व 'जगद्धित' स्वामी, पूजत होऊँ शिवगामी।।82।।
ॐ ह्रीं जगद्धिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सहस्रनामटीका पुस्तक में 'सिद्ध' पाठ है।
2. सहस्रनामटीका में 'सिद्धसिद्धांतवित्' पाठ है।

गुण क्षमा आप में शोभे, शिवतिय का भी मन लोभें।
अतएव 'सहिष्णु' तुम्हीं हो, मेरे में यह गुण भर दो।।83।।

ॐ ह्रीं सहिष्णवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं निज स्वरूप से च्युत हो, अतएव आप 'अच्युत' हो।
परमात्मनिष्ठ पद पाऊँ, इसलिये आपको ध्याऊँ।।84।।

ॐ ह्रीं अच्युताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं होता अन्त कभी भी, अतएव 'अनंत' तुम्हीं ही।
मेरे अनंतगुण चमकें, दर्पणवत् सब जग झलके।।85।।

ॐ ह्रीं अनन्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभविष्णु' समर्थ तुम्हीं हो, शक्ती अनंतयुत ही हो।
मैं भी समर्थ हो जाऊँ, निज गुण पंकज विकसाऊँ।।86।।

ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्ट जन्मधर स्वामी, भवपंच विनाशी नामी।
इसलिये 'भवोद्भव' ध्याऊँ, नहिं अन्य शरण अब जाऊँ।।87।।

ॐ ह्रीं भवोद्भवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'प्रभूष्णु' कहाये, गणधर मुनिगण गुण गायें।
शक्तीशाली तुम पूजा, इस सम नहिं सुकृत दूजा।।88।।

ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गई जरा भी जीर्णा, अतएव 'अजर' गुणपूर्णा।
है अजर अमर निज आत्मा, पूजत पाऊँ शुद्धात्मा।।89।।

ॐ ह्रीं अजराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं पूजा शक्य तुम्हारी, इससे 'अयज्य'[1] गुणधारी।
मैं ग्रहण करूँ निज आत्मा, ध्याऊँ वंदूँ शुद्धात्मा।।90।।

ॐ ह्रीं अयज्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अजर्यःपाठ है। आदि पु.,पर्व 25 में।

रवि शशि करोड़ की आभा, उनसे भी अधिक गुणाभा।
'भ्राजिष्णु' पार्श्व भगवंता, पूजत हो सौख्य अनंता।।91।।

ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल बुद्धी के स्वामी, 'धीश्वर' हो अंतर्यामी।
मैं केवलज्ञान उपाऊँ, अतएव प्रभो! गुणगाऊँ।।92।।

ॐ ह्रीं धीश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं नाश कभी भी होता, 'अव्यय' गुण भव दुख धोता।
व्ययरहित हमारी आत्मा, चिंतामणि शुद्ध चिदात्मा।।93।।

ॐ ह्रीं अव्ययाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मेंधन दहन किया है, स्व 'विभावसु' नाम लिया है।
या शशि अमृत बर्षाते, पूजत ही कर्म जलाते।।94।।

ॐ ह्रीं विभावसवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में नहिं जन्म धरें जो, श्री 'असंभूष्णु' प्रभु हैं वो।
पूजत ही साम्य बसेरा, नहिं पुनर्जन्म हो मेरा।।95।।

ॐ ह्रीं असंभूष्णवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयमेव पार्श्व बन प्रगटे, मुनि 'स्वयंभूष्णू' हैं कहते।
मैं स्वयं स्वयंपद पाऊँ, भव भव के दुःख नशाऊँ।।96।।

ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग का ही धर्म चलाते, अतएव 'पुरातन' कहते।
मैं वंदूं निजसुख हेतू, पाऊँ भवदधि का सेतू।।97।।

ॐ ह्रीं पुरातनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्ट केवली ज्ञानी, परमात्मा अंतर्यामी।
वंदूं धर मन अभिलाषा, पूरी हो शिवपद आशा।।98।।

ॐ ह्रीं परमात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्ट नेत्र त्रिभुवन में, हो 'परंज्योति' मुनिगण में।
मैं आत्मज्योति के हेतू, पूजूँ तुम हो भवसेतू।।99।।

ॐ ह्रीं परंज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेश्वर तीनों जग के, 'त्रिजगत्परमेश्वर' कहते।
मैं नमूँ पार्श्व प्रभु पद में, रत्नत्रय प्रगटे निज में।।100।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

'श्रीमान्' नाम से लेकर के, 'त्रिजगत्परमेश्वर' तक नामा।
सौ नाम आपके सार्थक हैं, इंद्रों से स्तुत गुणधामा।।
प्रभु पार्श्व मंत्र को जप जप के, बस 'सिद्ध' नाम इक पा जाऊँ।
प्रभु तुम सम शुद्ध अवस्था हो, नहिं बार बार जग में आऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामसमन्वित–श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

(1) द्वितीय शतक

–सोरठा–

दिव्यध्वनी के नाथ, अठरह महभाषा कही।
लघू सात सौ भाष, मैं पूजूँ वसु अर्घ्य ले।।101।।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सुंदर आप, अतः 'दिव्य' गणधर कहें।
नशें कर्म अभिशाप, पूजत हो निजसंपदा।।102।।

ॐ ह्रीं दिव्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पावन वाच, 'पूतवाक्' प्रभु पार्श्व हैं।
नमत मिले गुण सांच, स्वात्म सुधारस की नदी।।103।।

ॐ ह्रीं पूतवाचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन परम पवित्र, प्रभो! पार्श्व का लोक में।
कर्मारांति लवित्र, पूजत आत्म पवित्र हो।।104।।

ॐ ह्रीं पूतात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन आत्मा नाथ, मुझको भी पावन करो।
नमूँ नमूँ नत माथ, अर्घ चढ़ाकर पूजहूँ।।105।।

ॐ ह्रीं पूतात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमज्योति' भगवान, केवलज्ञान प्रकाशमय।
नमूँ नमूँ गुणखान, लहूँ ज्ञानज्योति परम।।106।।

ॐ ह्रीं परमज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित में अध्यक्ष, 'धर्माध्यक्ष' प्रसिद्ध हो।
धर्म न हो विध्वस्त, पूजूँ नित्य परोक्ष ही।।107।।

ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय दमन करंत, प्रभो! 'दमीश्वर' आप हैं।
शम दम धर्म दिशंत, नमूँ जितेन्द्रिय हेतु हैं।।108।।

ॐ ह्रीं दमीश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीपति' शिवश्री नाथ, स्वर्गमोक्ष श्री देत हो।
मिले सभी गुण साथ, पूजूँ मन वच काय से।।109।।

ॐ ह्रीं श्रीपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य ऐश्वर्य, धरें आप 'भगवान' हैं।
पुनः मोक्ष स्थैर्य, लिया जजूँ प्रभु पार्श्व को।।110।।

ॐ ह्रीं भगवते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्रों से पूज्य, 'अर्हन्' सिद्ध स्वरूप हो।
पाऊँ निजपद पूज्य, पूजूँ तुम पदपद्म को।।111।।

ॐ ह्रीं अर्हते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानदर्शनावर्ण, रज हैं धूली के सदृश।
इनका कीना नाश, 'अरज' आपको नित जजूँ।।112।।

ॐ ह्रीं अरजसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आवरण विनाश, समवसरण में राजते।
पूर्ण करो मम आश, जजूँ 'विरज' पद हेतु मैं।।113।।

ॐ ह्रीं विरजसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन तीर्थ विशुद्ध, 'शुचि' ब्रह्मा में लीन हो।
मेरा मन हो शुद्ध, पूजूँ त्रिकरण शुद्धि से।।114।।

ॐ ह्रीं शुचये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवदधि तिरते भव्य, जिससे तीर्थ प्रसिद्ध है।
प्रभो 'तीर्थकृत' नव्य, जजूँ तिरूँ भवसिंधु से।।115।।
ॐ ह्रीं तीर्थकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान अनंत, गुण अनंत के तुम धनी।
नमूँ नमूँ भगवंत, अविकल गुणनिधि हेतु मैं।।116।।
ॐ ह्रीं केवलिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रों के पति आप, मुनि 'ईशान' तुम्हें कहें।
भक्त बने निष्पाप, पूजूँ समरस हेतु मैं।।117।।
ॐ ह्रीं ईशानाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट विधार्चन योग्य, मुनि 'पूजार्ह' तुम्हें कहें।
पाऊँ निजपद योग्य, इसी हेतु पूजा करूँ।।118।।
ॐ ह्रीं पूजाहार्य श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घात घातिया कर्म, आप 'स्नातक' मान्य हैं।
मिले मोक्ष का मर्म, तुम पद पूजूँ भक्ति से।।119।।
ॐ ह्रीं स्नातकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म, त्रिविध मलों विरहित प्रभो!।
नमूँ 'अमल' दें शर्म, मेरा मन पावन करें।।120।।
ॐ ह्रीं अमलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमित दीप्ति से कांत, हे 'अनंतदीप्ति' प्रभो!।
हो गुणदीप्ति अनंत, नमूँ तुम्हें बहु प्रीति से।।121।।
ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण सुज्ञान स्वरूप, 'ज्ञानात्मा' लोकाग्र में।
नमूँ नमूँ चिद्रूप, ज्ञानज्योति प्रगटित करूँ।।122।।
ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंबुद्ध' भगवान्, गुरु बिन ज्ञान अपूर्व था।
रत्नत्रय निधिमान, बनूँ आपकी भक्ति से।।123।।
ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन जन के नाथ, आप 'प्रजापति' मान्य हो।
मुझको करो सनाथ, चिन्मय गुण विकसित करो।।124।।
ॐ ह्रीं प्रजापतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवबंधन से 'मुक्त', पूर्ण स्वतंत्र तुम्हीं प्रभो।
मुझको करिये मुक्त, चरणों में आश्रय चहूँ।।125।।
ॐ ह्रीं मुक्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमठ किया उपसर्ग, सहने में सक्षम हुये।
अतः कहाये 'शक्त', सहन शक्ति हित मैं जजूँ।।126।।
ॐ ह्रीं शक्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब बाधा उपसर्ग, रहित आप परमातमा।
'निराबाध' संसर्ग, मेरी सब बाधा हरे।।127।।
ॐ ह्रीं निराबाधाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल कला से शून्य, रत्नवृष्टि माँ के महल।
कवलाहार विशून्य, 'निष्कल' की पूजा करूँ।।128।।
ॐ ह्रीं निष्कलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवेनश्वर' त्रैलोक्य, ईश्वर पूज्य त्रिलोक में।
हो जाऊँ अक्षोभ्य, भेदविज्ञान प्रकाश से।।129।।
ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्माञ्जन से शून्य, अठरह दोष विमुक्त हो।
हो जाऊँ भव शून्य, जजूँ 'निरञ्जन' देव को।।130।।
ॐ ह्रीं निरञ्जनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्योति' चिद्रूप, लोक अलोक विलोकते।
चिन्मय ज्योतिस्वरूप, पाऊँ आतम ज्योति मैं।।131।।
ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वापर अविरोध, स्याद्वादमय हैं वचन।
'निरुक्तोक्ति' गतशोच, नमूँ स्वात्मसंपति मिले।।132।।
ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'निरामय' आप, सभी रोग से दूर हो।
नमत नशें सब पाप, पूर्ण स्वस्थता प्राप्त हो।।133।।

ॐ ह्रीं निरामयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचलस्थिति' भगवान, लोकशिखर पर तिष्ठते।
मिले भेद विज्ञान, नमते मन एकाग्र हो।।134।।

ॐ ह्रीं अचलस्थितये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्गों से नाथ! नहीं चलित हों स्वप्न में।
ज्ञानपूर्णतया साथ, प्रभु 'अक्षोभ्य' जजूँ सदा।।135।।

ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकशिखर के अग्र, तिष्ठ रहे 'कूटस्थ' हो।
मोह शैल को वज्र, स्थिररूप तुम्हें जजूँ।।136।।

ॐ ह्रीं कूटस्थाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमनागमन विहीन, 'स्थाणु' जन्म मृत्यू रहित।
रोग शोक हो क्षीण, पूजत सुस्थिर पद मिले।।137।।

ॐ ह्रीं स्थाणवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षय' नाश विहीन, इन्द्रिय विरहित आप हो।
अक्षय पद सुख लीन, नमूँ पूर्ण सुख हेतु मैं।।138।।

ॐ ह्रीं अक्षयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन ऊपर आप, ले जाते हैं 'अग्रणी'।
मुझको भी हे नाथ! चरणों में स्थान दो।।139।।

ॐ ह्रीं अग्रण्ये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों को प्रभु मोक्ष, पहुँचाते हो 'ग्रामणी'।
नमत मिले सब सौख्य, शिवपुर मार्ग प्रशस्त हो।।140।।

ॐ ह्रीं ग्रामण्ये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नेता' आप महान्, शिवपथ दिखलाते सदा।
हमें करो धनवान, रत्नत्रय निधि देय के।।141।।

ॐ ह्रीं नेत्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांगमय शास्त्र, कहा 'प्रणेता' हो प्रभो!।
मिले ध्यानमय शस्त्र, मोहमल्ल नाशूँ त्वरित।।142।।

ॐ ह्रीं प्रणेत्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्याय-नीति के शास्त्र, उपदेशा है विश्व को।
'न्यायशास्त्रकृत' नाथ! जजत न्याय मुझ को मिले।।143।।

ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित उपदेशी देव, 'शास्ता' गुरु जग मान्य हो।
मेटो अहित कुटेव, नमूँ स्वात्महित मैं तुम्हें।।144।।

ॐ ह्रीं शास्त्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तुस्वभावी धर्म, क्षमादि रत्नत्रय दया।
'धर्मपती' दो शर्म, चउविध धर्म प्रचार हो।।145।।

ॐ ह्रीं धर्मपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसहित हो 'धर्म्य' धर्मरूप परिणत हुये।
मिले मोक्ष का मर्म, नमूँ प्रभो! सुख शांति दो।।146।।

ॐ ह्रीं धर्म्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मस्वरूप जिनेश, 'धर्मात्मा' त्रिभुवन गुरु।
पूजन करूँ हमेश, धर्मरूप मैं भी बनूँ।।147।।

ॐ ह्रीं धर्मात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित तीर्थ महान, उसके कर्ता नाथ हैं।
'धर्मतीर्थकृत्' नाम, स्वात्म शुद्धि हेतू नमूँ।।148।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मध्वजा है नित्य, 'वृषध्वज' माने लोक में।
आत्मधर्म हो नित्य, मैं पूजूँ गुणहेतु नित।।149।।

ॐ ह्रीं वृषध्वजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अहिंसा रूप, उसके स्वामी आप ही।
मिले स्वात्म चिद्रूप, 'वृषाधीश' तुमको नमूँ।।150।।

ॐ ह्रीं वृषाधीशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोमराजी छंद–

महापुण्य का चिन्ह है आपका ही।
नमूँ नित्य 'वृषकेतु' रोगादि नाशो।।151।।

ॐ ह्रीं वृषकेतवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषायुध' महामृत्यु मारा धरम से।
जरा मृत्यु नाशो, हमारे जजूँ मैं।।152।।

ॐ ह्रीं वृषायुधाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया धर्म वर्षा, अतः 'वृष' तुम्हीं हो।
हमें बोधि देवो, नमूँ भक्ति से मैं।।153।।

ॐ ह्रीं वृषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'वृषपती' हो, अहिंसा के स्वामी।
नमूँ मैं मुझे पूर्ण आरोग्य देवो।।154।।

ॐ ह्रीं वृषपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा भव्य को पोषते आप भर्ता।
नमूँ सद्गुणों को, भरो नाथ मुझमें।।155।।

ॐ ह्रीं भर्त्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप वृषभांक सद्धर्म चिन्हित।
नमूँ धर्म मेरे, अनंते मिलेंगे।।156।।

ॐ ह्रीं वृषभांकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषोद्भव' धरा धर्म पूरब भवों में।
जजूँ मैं मुझे आत्म संपत्ति देवो।।157।।

ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'हीरण्यनाभी' नमूँ मैं।
सुनाभी सभी से अधिक श्रेष्ठ सुंदर।।158।।

ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! ज्ञान से व्याप्त आत्मा जगत में।
नमूँ 'भूतआत्मा' सभी शोक नाशो।। 159।।

ॐ ह्रीं भूतात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी जीव रक्षो, प्रभो! 'भूतभृद्' हो।
दयादृष्टि कीजे, पुनर्जन्म ना हो।।160।।

ॐ ह्रीं भूतभृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ 'भूतभावन' दरश शुद्धि आदी।
धरीं सोलहों भावना, श्रेष्ठ स्वामी।।161।।

ॐ ह्रीं भूतभावनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभव' आपका जन्म उत्कृष्ट माना।
नमूँ मैं बनूँ श्लाघ्य शिवमार्ग पाके।।162।।

ॐ ह्रीं प्रभवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभव' दूर संसार से आप हैं ही।
सफल जन्म मेरा करो शीश नाऊँ।।163।।

ॐ ह्रीं विभवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विभा ज्ञानदीप्ती, अतः आप 'भास्वान्'।
मुझे पूर्ण विज्ञान दो याचना ये।।164।।

ॐ ह्रीं भास्वते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय में हुये भव्य के 'भव' कहाये।
सदा चित्त में आप तिष्ठो नमूँ मैं।।165।।

ॐ ह्रीं भवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी के हृदय में रहों 'भाव' तुम हो।
हमारे हृदय के तिमिर को विनाशो।।166।।

ॐ ह्रीं भावाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भवांतक' स्वामी, किया अंत भव का।
भवांभोधि से भक्ति ही तारती है।।167।।

ॐ ह्रीं भवान्तकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रसू सौध में मास नौ रत्न वर्षे।
प्रभू नाम 'हीरण्यगर्भा' नमूँ मैं।।168।।

ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें सेव माँ की, सुरी श्री ह्रि आदी।
नमूँ नाथ 'श्रीगर्भ' श्री प्राप्त होवे।।169।।

ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकैक साम्राज्य पाया तुम्हीं ने।
नमूँ मैं 'प्रभूताविभव' सौख्य देवो।।170।।

ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभव' आप संसार से हीन स्वामी।
नमूँ पंच संसार का नाश कीजे।।171।

ॐ ह्रीं अभवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंप्रभु' चिदात्मा, स्वयं नाथ सबके।
स्वयं सिद्ध कीजे, नमूँ भक्ति से मैं।।172।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभूतातमा' आप, अस्ती स्वभावी।
मुझे सिद्धि दीजे नमूँ शीश नाके।।173।।

ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'भूतनाथा', सभी पे दयालू।
दया दान दीजे, सुचारित्र पूरो।।174।।

ॐ ह्रीं भूतनाथाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्प्रभु' त्रिलोकेश सुख शांति दीजे।
नमूँ मैं सभी रोग शोकादि नाशो।।175।।

ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं नाथ 'सर्वादि' हो श्रेष्ठ सबमें।
नमूँ मैं सुसम्यक्त्व निधि दान दीजे।।176।।

ॐ ह्रीं सर्वादये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकैवल्यदृक् से सभी विश्व देखा।
नमूँ 'सर्वदृक्' शुद्ध सम्यक्त्व कीजे।।177।।

ॐ ह्रीं सर्वदृशे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी जीव हितकारि, हो 'सार्व' जग में।
नमूँ चार आराधना, पूर्ण कीजे।।178।।

ॐ ह्रीं सार्वाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकं त्रिकालं, सभी वस्तु ज्ञाता।
जजूँ आप 'सर्वज्ञ' मेटो असाता।।179।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'सर्वदर्शन' सुसम्यक्त्व क्षायिक।
मेरे ज्ञानचारित्र सत्यार्थ कर दो।।180।।

ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी वस्तु प्रतिबिंबती आप में ही।
मेरा ज्ञान कैवल्य कीजे जजूँ मैं।।181।।

ॐ ह्रीं सर्वात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी प्राणि के ईश, वंदूं सदा मैं।
प्रभो 'सर्वलोकेश' भवदुःख मेटो।।182।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी लोक को जानते 'सर्ववित्' हो।
प्रभो ज्ञानज्योति मुझे दो जजूँ मैं।।183।।

ॐ ह्रीं सर्वविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयी पंच संसार के हो जजूँ मैं।
प्रभो 'सर्वलोकैकजित्' शोक नाशो।।184।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगति' मुक्ति पंचम गती प्राप्त की है।
सुगति में गमन हो इसी हेतु पूजूँ।।185।।

ॐ ह्रीं सुगतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत' शास्त्र सम्यक् प्रगट आपसे है।
तथा आप विख्यात जग में जजूँ मैं।।186।।

ॐ ह्रीं सुश्रुताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी की सुनी प्रार्थना आप 'सुश्रुत'।
मुझे स्वात्म संपत्ति दीजे नमूँ मैं।।187।।

ॐ ह्रीं सुश्रुते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुवाक्' सप्तभंगी युता दिव्य वाणी।
उसी में रमूं मैं इसी हेतु वंदूँ।।188।।

ॐ ह्रीं सुवाचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! पंच आचार से 'सूरि' माने।
नमूँ आपको बुद्धि सम्यक् करीजे।।189।।

ॐ ह्रीं सूरये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बहुश्रुत' सभी शास्त्र के मर्मज्ञाता।
तुम्हीं से हुआ श्रुत नमूँ ज्ञान हेतू।।190।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ आप 'विश्रुत' जगत में प्रसिद्धा।
सभी इन्द्र धरणेन्द्र से वंद्य वंदूँ।।191।।

ॐ ह्रीं विश्रुताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधो मध्य ऊरध त्रिजग व्याप्त कीना।।
नमूँ 'विश्वतःपाद' ज्ञानी किरण से।।192।।

ॐ ह्रीं विश्वतःपादाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिजग में हि मस्तक त्रिलोकाग्र राजें।
नमूँ 'विश्वशीर्षा' करो मेरी रक्षा।।193।।

ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी प्राणियों की सुनी आप अर्जी।
नमूँ मैं 'शुचिश्रव' हमें बोधि देवो।।194।।

ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सहसशीर्ष' भगवन्! अनंते सुखी हो।
मुझे स्वात्म सुख दीजिये मैं जजूँ अब।।195।।

ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजात्मा को जाना चराचर सभी भी।
नमूँ आप 'क्षेत्रज्ञ', मैं स्वस्थ हेतु ।।196।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंते पदारथ तुम्हीं जानते हो।
'सहस्राक्ष' स्वामिन्! नमूँ प्रीति से मैं।।197।।

ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंते बली नंत किरणों सुव्यापी।
'सहसपात्' वंदूं मुझे शक्ति दीजे।।198।।

ॐ ह्रीं सहस्रपदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं भूतभावी व संप्रति के स्वामी।
नमूँ 'भूतभव्यभवद्भर्तृ' तुमको।।199।।

ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविद्या अखिल के तुम्हीं नाथ माने।
अतः 'विश्वविद्यामहेश्वर' नमूँ मैं।।200।।

ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

दिवभाषापति से ले करके, सुविश्वविद्यामाहेश्वर तक।
सौ नाम मंत्र तुम जपने से, शतखंड खंड हो जावें अघ।।
मैं अतिशय भक्ती श्रद्धा से, प्रभु पार्श्वनाथ को नित पूजूँ।
निज आतम अमृतरस पीकर, सब जन्म मरण दुःख से छूटूँ।।2।।

ॐ ही दिव्यभाषापत्यादिशतनामसमन्वितश्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। **शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।**

(3) तृतीय शतक

–दोहा–

समीचीन गुण के निमित्त, अतिशय स्थूल महान्।
'स्थविष्ठ' प्रभु को नमूँ, बनूँ शीघ्र गुणवान्।।201।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादिकगुण वृद्ध प्रभु, इससे 'स्थविर' आप।
दर्शन ज्ञान चारित्र हित, नमूँ जोड़ युग हाथ।।202।।
ॐ ह्रीं स्थविराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में सुप्रशस्त हो, 'ज्येष्ठ' सिद्ध भगवान्।
आत्म सुधारस प्राप्त हो, नमते निज पर ज्ञान।।203।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबमें अग्रेसर तुम्हीं, 'प्रष्ठ' नाम से ख्यात।
आत्म सुरभि फैले जगत, नमत आत्मसुख सात्।।204।।
ॐ ह्रीं प्रष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब भव्यों को प्रिय अधिक, 'प्रेष्ठ' आप जगमीत।
गुण अनन्तयुत आत्मनिधि, मिले नमूँ धर प्रीत।।205।।
ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुबुद्धि तुम, अति विस्तीर्ण प्रसिद्ध।
प्रभु 'वरिष्ठधी' तुम नमूँ, गुणमणि धरुँ समृद्ध।।206।।
ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अग्र पर तिष्ठते, अतिशय स्थिर नित्य।
इसीलिये 'स्थेष्ठ' हो, नमत लहूँ सुख नित्य।।207।।
ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के गुरु आप हैं, नाथ 'गरिष्ठ' प्रधान।
स्वात्मामृत के पान से, बनूँ स्वस्थ अमलान।।208।।
ॐ ह्रीं गरिष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणपेक्षा बहुरूप को, धारण करते नाथ।
प्रभु 'बंहिष्ठ' तुम्हें नमूँ, मिले सौख्य श्रीसाथ।।209।।
ॐ ह्रीं बंहिष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु प्रशंसनीया सुगुण, प्रभो 'श्रेष्ठ' तुम नाम।
अनुपम गुणनिधि हेतु मैं, नमूँ पार्श्व शिवधाम।।210।।
ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्मचक्षु से आप हैं, अतिशय सूक्ष्म जिनेश।
प्रभु 'अणिष्ठ' तुमको नमूँ, मिटे जगत का क्लेश।।211।।
ॐ ह्रीं अणिष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत्पूज्य वाणी विमल, प्रभु 'गरिष्ठगी' नाम।
मम रसना हो रसवती, शत शत करूँ प्रणाम।।212।।
ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती संसार को, नष्ट किया भगवान्।
नमूँ 'विश्वमुट्' आपको, पाऊँ सौख्य निधान।।213।।
ॐ ह्रीं विश्वमुचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म सृष्टि रचना किया, आप 'विश्वसृट्' मान्य।
धर्म संपदा पूर्ण हो, नमते सुख धन धान्य।।214।।
ॐ ह्रीं विश्वसृजे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल लोक के शीश हो, अतः प्रभो! 'विश्वेट्'।
सप्तपरम स्थान हित, वंदूँ मस्तक टेक।।215।।
ॐ ह्रीं विश्वेशे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जग की रक्षा करो, अभय दान दे नाथ।
नाम 'विश्वभुक्' मैं नमूँ पूजत बनूँ सनाथ।।216।।
ॐ ह्रीं विश्वनायकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले जाते शुचिकर्म में, सब जीवों को नाथ।
प्रभो! 'विश्वनायक' तुम्हीं, नमूँ नमाऊँ माथ।।217।।
ॐ ह्रीं विश्वनायकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुरश्मि से व्यापा लोकाकोक।
'विश्वाशी' भगवान को वंदूँ देऊँ धोक।।218।।
ॐ ह्रीं विश्वाशिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वरूप आत्मा' तुम्हीं, सकल विश्व में आप।
व्याप्त लोकपूरण प्रथित, समुद्घात से नाथ।।219।।
ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विश्व से पार हैं, आप 'विश्वजित्' नाम।
सकल गुणों की राशि हित, करूँ अनंत प्रणाम।।220।।

ॐ ह्रीं विश्वजिते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजितान्तक' मृत्यूजयी, नमूँ नमूँ रुचि धार।
शक्ती दो प्रभु मोह यम, काम मल्ल दूं मार।।221।।

ॐ ह्रीं विजितान्तकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नष्ट किया भव भ्रमण तुम, नाथ 'विभव' जग मान्य।
जन्ममरण दुख क्षय करो, तुम जग में प्राधान्य।।222।।

ॐ ह्रीं विभवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात भयों से दूर प्रभु, 'विभय' करो भय दूर।
सर्वकर्म जीता तुम्हें, नमत मिले सुखपूर।।223।

ॐ ह्रीं विभयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंत बलशालि तुम, 'वीर' नाम से ख्यात।
मेरी नंतचतुष्टयी, दीजे श्रुत विख्यात।।224।।

ॐ ह्रीं वीराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'विशोक' त्रिलोक में, किया शोक को दूर।
मेरे शोक हरो सभी, नमूँ अमित गुणपूर।।225।।

ॐ ह्रीं विशोकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृद्धावस्था से रहित, 'विजर' नाम से ख्यात।
जरा जीर्ण मेरी करो, मेटो भव भव त्रास।।226।।

ॐ ह्रीं विजराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं जीर्ण होते कभी, 'अजरन्'[1] नाम धरंत।
सभी व्याधि दुख क्षीण हों, नमूँ नाथ शिवकंत।।227।।

ॐ ह्रीं अजरते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग रहित हो देव तुम, अतः 'विराग' प्रसिद्ध।
नमूँ विरागी मैं बनूँ, पाऊँ निजगुण रिद्धि।।228।।

ॐ ह्रीं विरागाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. आदिपुराण में 'जरन्' पद है।

सर्पपाप से 'विरत' हो, भवसुख विरत महान्।
मेरे महाव्रत पूरिये, नमूँ तपोधनवान।।229।।

ॐ ह्रीं विरताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वपरिग्रह शून्य हो, नाथ! 'असंग' अनूप।
परिग्रह ग्रंथि से छुटूं, पाऊँ निज चिद्रूप।।230।।

ॐ ह्रीं असंगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विषयों से भिन्न हो, पूर्ण पवित्र 'विविक्त'।
मुझको भेदविज्ञान दो, होऊँ पर से रिक्त।।231।।

ॐ ह्रीं विविक्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मत्सर आदिक दोष से, रहित गुणों की राशि।
नमूँ 'वीतमत्सर' तुम्हें, पाऊँ निज सुख राशि।।232।।

ॐ ह्रीं वीतमत्सराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिष्यों के बांधव सहज, हित उपदेशी सूर्य।
'विनेयजनताबंधु' को, नमूँ तमोहर सूर्य।।233।।

ॐ ह्रीं विनेयजनताबंधवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कल्मष से दूर हो, नमत पाप हो क्षीण।
'विलीन अशेष कल्मष' तुरत, करो सौख्य अक्षीण।।234।।

ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिरमा के साथ में, योग 'वियोग' महान।
इष्टवियोगादिक सभी, दुःख हरो भगवान।।235।।

ॐ ह्रीं वियोगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अंग लक्षण कहा, योग 'योगवित्' नाथ।
ध्यानयोग के हेतु मैं, नमूँ जोड़ द्वय हाथ।।236।।

ॐ ह्रीं योगविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पदार्थ को जानते, आप श्रेष्ठ 'विद्वान्'।
विद्याधन मुझको मिले, नमूँ नंत गुणवान्।।237।।

ॐ ह्रीं विदुषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म उभय सृष्टी किया, प्रभो 'विधाता' सिद्ध।
मुनीधर्म मुझको मिले, नमूँ करूँ यमविद्ध।।238।।
ॐ ह्रीं विधात्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरतिचार चारित्रधर, 'सुविधि' कहाये आप।
पंचम चारित हेतु मैं, नमूँ हरो भव ताप।।239।।
ॐ ह्रीं सुविधये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ध्यानी थे तुम्हीं, 'सुधी' जगत में श्रेष्ठ।
धर्म शुक्ल की सिद्धि हो, नमूँ नमूँ प्रभु ज्येष्ठ।।240।।
ॐ ह्रीं सुधिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमारूप हो क्रोधरिपु, का करके संहार।
'क्षांतिभाक्' को नमत ही, बनूँ क्षमा भंडार।।241।।
ॐ ह्रीं क्षांतिभाजे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पृथिवीमूर्ति' स्वरूप हो, सर्वंसहा महेश।
सहनशीलता गुण मिले, नमूँ हरो भव क्लेश।।242।।
ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्यंतिक शांति सहित, 'शांतिभाक्' जिनराज।
परम शांति मुझको मिले, नमत पूर्ण हो काज।।243।।
ॐ ह्रीं शांतिभाजे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलसम शीलत स्वच्छ हो, किया कर्म मल दूर।
'सलिलात्मक' मन स्वच्छ कर, भरो ज्ञानसुखपूर।।244।।
ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों के प्राणसम, 'वायुमूर्ति' भगवान।
मैं निसंग बन जाऊँ प्रभु, नमूँ नमूँ सुखदान।।245।।
ॐ ह्रीं वायुमूर्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर बाहर उपाधि से, रहित अमूर्त असंग।
नमूँ 'असंगात्मा' तुम्हें, रहूँ मुक्ति के संग।।246।।
ॐ ह्रीं असंगात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मकाष्ठ को भस्म कर, 'वह्निमूर्ति' श्रुतमान्य।
ध्यान अग्नि मुझको मिले, नमूँ आप गुरु मान्य।।247।।
ॐ ह्रीं वह्निमूर्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसा आदिक पाप सब, जला दिये प्रभु शीघ्र।
प्रभु 'अधर्मधक्' सिद्ध हो, नमूँ भक्ति है तीव्र।।248।।
ॐ ह्रीं अधर्मदहे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप सामग्रि को, होमा सम्यक् आप।
प्रभो! 'सुयज्वा' मैं नमूँ, मैं होमूं सब पाप।।249।।
ॐ ह्रीं सुयज्वने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव आराधते, 'यजमानात्मा' सिद्ध।
आराधूं निज तत्त्व मैं, पाऊँ नवनिधि रिद्धि।।250।।
ॐ ह्रीं यजमानात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रेखता छंद–

प्रभो! स्वात्मासुखाम्बुधि में, किया अभिषेक नित उसमें।
अतः 'सुत्वा' कहाते हो, जजत ही सौख्य भरते हो।।251।।
ॐ ह्रीं सुत्वने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! इन्द्रादि पूजित हो, अतः 'सूत्रामपूजित' हो।
जजत ही दृगविशुद्धी हो, मुझे बोधी समाधी हो।।252।।
ॐ ह्रीं सूत्रामपूजिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुशल 'ऋत्विक्' तुम्हीं सच में, यज्ञ ज्ञानैक करने में।
स्व कर्मेधन दहन कर दूं, प्रभो यह शक्ति दो वंदूँ।।253।।
ॐ ह्रीं ऋत्विजे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं हो 'यज्ञपति' जग में, प्रमुख हो यज्ञ की विधि में।
जलाकर ध्यान अग्नी को, हवन कर लूँ नमत तुमको।।254।।
ॐ ह्रीं यज्ञपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतेन्द्रों ने किया पूजा, न तुम सम अन्य है दूजा।
इसी से 'याज्य' हो स्वामी, नमूँ मैं आप अभिरामी।।255।।
ॐ ह्रीं याज्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हवन के अंग परधाना, अतः 'यज्ञांग' शिवधामा।
नमूँ मैं पार्श्व जिनवर को, तपोग्नी प्राप्त हो तुम से।।256।।
ॐ ह्रीं यज्ञांगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न मरते आप 'अमृत' हैं, परम अमृत रसायन हैं।
प्रभो! तुमको नमन करके, विषय तृष्णा व दुःख भगते।।257।।
ॐ ह्रीं अमृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजात्मानंद में रत हो, अशुद्धी हवन करते हो।
नमूँ 'हवि' आपको रुचि से, सुखामृत प्राप्त हो तुम से।।258।।
ॐ ह्रीं हविषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगनवत् व्याप्त हो जग में, केवलज्ञान किरणों से।
इसी से 'व्योममूर्ती' हो, नमत सुज्ञान मुझमें हो।।259।।
ॐ ह्रीं व्योममूर्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण रस गंध से रहिता, 'अमूर्तात्मा' ज्ञानसहिता।
अमूर्तिक मैं बनूँ स्वामी, तुम्हें पूजूँ जगन्नामी।।260।।
ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मल लेप से हीना, प्रभो! 'निर्लेप' गुणलीना।
बनूं निर्लेप मैं पर से, करूँ पूजा अतः रुचि से।।261।।
ॐ ह्रीं निर्लेपाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी रागादिमल शून्या, तुम्हीं 'निर्मल' बने पूर्णा।
आधि व्याधी सभी विनशे, नमत ही पूर्ण सुख विलसे।।262।।
ॐ ह्रीं निर्मलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचल' हो आप सुस्थिर हो, लोक के अग्र अविचल हो।
अचल हो जाऊँ मैं निज में, यही फल प्राप्त कर लूँ मैं।।263।।
ॐ ह्रीं अचलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र सम शांति देते हो, परम आल्हाद भरते हो।
'सोममूर्ती' नमूँ तुमको, स्वात्म आल्हाद दो मुझको।।264।।
ॐ ह्रीं सोममूर्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौम्यरूपी 'सुसौम्यात्मा', पार्श्व प्रभु आप परमात्मा।
नमूँ मैं आत्म शुचि हेतु, साम्यगुण पूर्ण कर दीजे।।265।।
ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्यसम पूर्ण तेजस्वी, ज्ञान किरणों से ओजस्वी।
'सूर्यमूर्ती' नमूँ तुमको, स्वात्म का तेज दो मुझको।।266।।
ॐ ह्रीं सूर्यमूर्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभ' केवली प्रभु हो, धर्म किरणों सहित तुम हो।
नमूँ मैं आपको शुचि हो, प्रगट कर लूं स्वात्म रवि को।।267।।
ॐ ह्रीं महाप्रभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्रों के ज्ञाता हो, 'मंत्रवित्' नाम पाते हो।
नमूँ मैं मुक्ति के हेतु, मंत्र मिल जाय भवसेतू।।268।।
ॐ ह्रीं मंत्रविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र चारों हि अनुयोगा, उन्हीं के आप उपदेष्टा।
'मंत्रकृत्' आप को प्रणमूँ, ज्ञान वाराशि को पाऊं।।269।।
ॐ ह्रीं मंत्रकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्रमय मंत्ररूपी हो, प्रभो! 'मंत्री' मंत्रतनु हों
हमें भी मंत्र दे दीजे, नमूँ मैं मुक्ति श्री दीजे।।270।।
ॐ ह्रीं मंत्रिणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंत्रमूर्ती' तुम्हीं भगवन्, मंत्र अक्षरमयी तुम तन।
नमूँ तुम नाम मंत्रों को, प्राप्त कर लूं स्वात्म पद को।।271।।
ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतग' मोक्ष में राजें, ज्ञान से विश्व में व्यापें।
नमूँ मैं मोक्ष प्राप्ती हित, यही भक्ती फलेगी नित।।272।।
ॐ ह्रीं अनंतगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण स्वातन्त्रय् हो करके, 'स्वतंत्रात्मा' तुम्हीं चमके।
नमूँ मैं स्वात्म संपति दो, सभी विपदा दूर कर दो।।273।।
ॐ ह्रीं स्वतंत्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तंत्रकृत्' शास्त्र के कर्ता, तुम्हीं प्रभु भावश्रुत कर्ता।
दिव्यध्वनि द्वादशांगी है, नमत ही स्वात्म निधिकर है।।274।।
ॐ ह्रीं तंत्रकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुशोभन है निकट प्रभु का, अतः तुम 'स्वन्त' हो शिवदा।
नमूँ मैं दुख दरिद नाशूं, तुम्हें पा निज को परकाशूं।।275।।
ॐ ह्रीं स्वन्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु का अंत कर दीना, 'कृतान्तान्त' नाम लीना।
नमूँ मैं सर्व दुख भागें, मृत्यु भयभीत हो भागे।।276।।
ॐ ह्रीं कृतान्तान्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन सिद्धांत के कर्ता, सभी के क्षेम सुख भर्ता।
नमत 'कृतान्तकृत्' प्रभु को, जगत में सौख्य शांती हो।।277।।
ॐ ह्रीं कृतान्तकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृती' हो पुण्य फल पायो, पुण्यराशी मुनी गायो।
नमूँ मैं पाप को नाशूं, पुण्य से स्वात्म को भासूं।।278।।
ॐ ह्रीं कृतिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार पुरुषार्थ को कह के, 'कृतार्था' नाम पा करके।
आप ने मोक्ष पद पाया, नमूँ मैं स्वस्थ हो काया।।279।।
ॐ ह्रीं कृतार्थाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सत्कृत्य' हो जग में, सत्य कर्तव्यप्रद सच में।
प्रज्ञा पोषण किया तुमने, नमूँ मैं स्वात्म रुचि मन में।।280।।
ॐ ह्रीं सत्कृत्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया सब आत्म कार्यों को, प्रभो! 'कृतकृत्य' तुमही हो।
बनूं कृतकृत्य प्रभु मैं भी, इसी से पूजहूँ नित ही।।281।।
ॐ ह्रीं कृतकृत्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपस्या यज्ञ कर करके, प्रभो! 'कृतक्रतु' ज्ञानधरके।
तपस्या पूर्ण कर पाऊँ, इसी से आपको ध्याऊँ।।282।।
ॐ ह्रीं कृतक्रतवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा अस्तित्व से स्थित हो, 'नित्य' प्रभु तीन जग में हो।
नमूँ निज आत्म गुण पाऊँ, स्वस्थ हो नित्य बन जाऊँ।।283।।
ॐ ह्रीं नित्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम मृत्यु को जीता, सु 'मृत्युंजय' कर्म जीता।
नमूँ मैं भक्ति धर नित ही, बनूं मृत्यंजयी झट ही।।284।।
ॐ ह्रीं अमृत्यवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं है अन्त इस जग में, 'अमृत्यू' नाम श्रुत वर्णे।
मोक्ष पद प्राप्त है तुमको , नमूँ मैं कालजयि प्रभु को।।285।।
ॐ ह्रीं अमृत्यवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतसम शांति पुष्टी कर, प्रभो! 'अमृतात्मा' जिनवर।
ज्ञान अमृत पिऊँ निश दिन, तुम्हें पूजूँ नमूँ प्रतिदिन।।286।।
ॐ ह्रीं अमृतात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष में आप जन्में हो, प्रभो! 'अमृतोद्भव' तुम हो।
धर्म अमृत झराते हो, जजत समरस पिलाते हो।।287।।
ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा शुद्धात्म में तन्मय, प्रभो! तुम 'ब्रह्मनिष्ठा' मय।
मुझे भी स्वात्मतन्मयता, मिले इस हेतु मैं जजता।।288।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परंब्रह्मा' जगत्पति हो, निजात्मा रूप परिणत हो।
नमूँ निज ब्रह्मपद पाऊँ, जगत् के दुःख विनशाऊँ।।289।।
ॐ ह्रीं परंब्रह्मणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! कैवल्य ज्ञानादी, गुणों से पूर्ण वृद्धी की।
नमूँ 'ब्रह्मात्मा' नित ही, प्राप्त कर लूं स्वगुण नित ही।।290।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं तो 'ब्रह्मसंभव' हो, स्वात्म से आप उत्पन्न हो।
आत्म के ज्ञानचारित को, प्राप्त कर लूं नमन तुम को।।291।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाब्रह्मपती' तुमही, सिद्ध परमेष्ठी नित ही।
नमः सिद्धेभ्यः कह करके, धरी दीक्षा नमूँ रुचि से।।292।।
ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं तो मोक्ष के स्वामी, अतः 'ब्रह्मेट्' जगनामी।
स्वात्म सुख ज्ञान मुझ को दो, नमूँ मैं ब्रह्मपद दे दो।।293।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मेजे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाब्रह्मापदेश्वर' हो, गणाधिप साधु वंदित हो।
समवसृति में विराजे हो, नमूँ प्रमुदितमना तुमको।।294।।
ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हास्यमुख 'सुप्रसन्ना' हो, स्वर्गमुक्ती प्रदाता हो।
दुःखशोकादि हरने को, नमूँ प्रमुदित मना तुमको।।295।।
ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रसन्नात्मा' स्वामी, स्वच्छ निर्मल गुण अभिरामी।
स्वच्छ शीतल मेरा मन हो, नमत ही स्वात्मसमरस हो।।296।।
ॐ ह्रीं सुप्रसन्नात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानधर्मदमप्रभु' हो, दयालु इन्द्रिय विजयी हो।
केवली धर्मदम स्वामी, नमूँ मैं धर्म पथगामी।।297।।
ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशमात्मा' तुम्हीं भगवन्, क्रोध रिपु का किया मर्दन।
शांति से कर्म को जीता, नमूँ मैं जगत् से भीता।।298।।
ॐ ह्रीं प्रशमात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तात्मा' तुम्हीं तो हो, घातिकर्मारि विजयी हो।
नमूँ मैं शांति सुख पाऊँ, निजात्मा में हो रम जाऊँ।।299।।
ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'पुराणपुरुषोत्तम', पुराने सब में हो उत्तम।
मुक्तिलक्ष्मीपती विष्णू, नमूँ मैं होऊँ भविजष्णू।।300।।
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

प्रभु स्थविष्ठ से पुराण पुरुषोत्तम तक नाम जपें जो भी।
वे शतक नाम धारें जग में, फिर जीवनमुक्त बनें वे भी।।
मैं नामगोत्र विघ्नादि रहित, निज शुद्ध आत्मपद पा जाऊँ।
इसलिये पार्श्व पदपद्म भक्ति, करता हूँ फिर फिर शिर नाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनामसमन्वितश्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

(1) चतुर्थ शतक

–सोरठा–

'महाशोकध्वज' नाम, महाशोकतरु चिन्ह है।
करूँ अनंत प्रणाम, शोक हरूँ निज सुख भरूँ।।301।।
ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र स्त्री मित्रादि, रहित शोक अणुमात्र ना।
नाथ! 'अशोक' सुपाद, नमत शोक दुख नाश हो।।302।।
ॐ ह्रीं अशोकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् ब्रह्मा आप, 'क' प्रसिद्ध परमात्मा।
जजत हरें जन पाप, सर्वसौख्य पावें सदा।।303।।
ॐ ह्रीं काय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सृष्टा' नमूँ त्रिकाल, निंदित दुर्गति दुख लहें।
वीतराग जगपाल, पूजत जन दिव मोक्ष लें।।304।।
ॐ ह्रीं सृष्ट्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलासन पर नाथ, तिष्ठ 'पद्मविष्टर' बने।
नमूँ जोड़ जुग हाथ, यश सौरभ जग में भ्रमें।।305।।
ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी के पति देव, कहलाये 'पद्मेश' तुम।
नमते हो दुख छेव, मिले नवों निधि संपदा।।306।।
ॐ ह्रीं पद्मेशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीविहार में देव, स्वर्णकमल सुरभित रचें।
चरण तले जिनदेव, नमूं 'पद्मसंभूति' जिन।।307।।
ॐ ह्रीं पद्मसंभूतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभी कमल समान, 'पद्मनाभि' कहते मुनी।
धरूँ आपका ध्यान, कमल बनाकर नाभि में।।308।।
ॐ ह्रीं पद्मनाभये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सम कोई न अन्य, नाम 'अनुत्तर' ऋषि कहें।
जजत बने जन धन्य, सम्यग्दर्शन शुद्धि से।।309।।
ॐ ह्रीं अनुत्तराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी हो उत्पन्न, प्रभो! आपकी भक्ति से।
'पद्मयोनि' अन्वर्थ, नमत मिले गुण संपदा।।310।।
ॐ ह्रीं पद्मयोनये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म जगत का जन्म, हुआ आप से हे प्रभो!।
'जगत्योनि' शुभनाम, जजत जगत से पार हों।।311।।
ॐ ह्रीं जगद्योनये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से भविजन आप, प्राप्त करें रुचि मन धरें।
'इत्य' नाम निष्पाप, शरणागत मैं आपकी।।312।
ॐ ह्रीं इत्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादिक से नित्य, स्तुति योग्य तुम्हीं प्रभो!।
त्रिभुवन में 'स्तुत्य', मैं स्तवन करूँ सदा।।313।।
ॐ ह्रीं स्तुत्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्तुति के तुम ईश, साधु 'स्तुतीश्वर' कहें।
नमूँ नमाकर शीश, गुण गाऊँ हर्षितमना।।314।।
ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिगण के स्तुति योग्य, 'स्तवनार्ह' प्रसिद्ध हो।
मिले मुक्ति संयोग, जजते भेदविज्ञान हो।।315।।
ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया पंचेन्द्रिय वश्य, 'हृषीकेश' श्रुतमान्य हो।
जो जन जजें अवश्य, सौख्य अतीन्द्रिय लें भले।।316।।
ॐ ह्रीं हृषीकेशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहादिक अरिजीत, कहलाये 'जितजेय' तुम।
जो पूजें धर प्रीत, मोह हरें निर्मम बनें।।317।।
ॐ ह्रीं जितजेयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करने योग्य समस्त, क्रिया पूर्ण कर शिव गये।
वंदत चित्त प्रशस्त, 'कृतक्रिया' प्रभु पार्श्व को।।318।।
ॐ ह्रीं कृतक्रियाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशगण के नाथ, समवसरण में आप ही।
मुझ को करो सनाथ, जजूँ 'गणाधिप' आपको।।319।।
ॐ ह्रीं गणाधिपाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी गणों में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ गुणाकर आप हैं।
नमूँ तुम्हें 'गणज्येष्ठ', गुणमणि को पाऊँ अबे।।320।।
ॐ ह्रीं गणज्येष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में प्रभु आप, गणना करने योग्य हैं।
वंदत नशते पाप, 'गण्य' तुम्हें मैं भी जजूँ।।321।।
ॐ ह्रीं गण्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको किया पवित्र, 'पुण्य' तुम्हें मुनिगण कहें।
मुझको करो पवित्र, पुनः पुनः याञ्चा करूँ।।322।।
ॐ ह्रीं पुण्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपथ में ले जांय, सभी भक्त को आप ही।
'गणाग्रणी' तुम पांय, वंदूं निज नेता बनूँ।।323।।
ॐ ह्रीं गणाग्रण्ये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंतगुणखान, साधु 'गुणाकर' कह रहे।
वंदत हों गुणवान, जो तुम गुण वर्णन करें।।324।।
ॐ ह्रीं गुणाकराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण में आप समुद्र, 'गुणाम्भोधि' हो विश्व में।
नमत बने उन्निद्र, पावें निज के गुण सभी।।325।।
ॐ ह्रीं गुणाम्भोधये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण के ज्ञाता सिद्ध तुम 'गुणज्ञ' जग ख्यात हो।
मुझ गुण सर्वप्रसिद्ध, होवेंगे तुम भक्ति से।।326।।
ॐ ह्रीं गुणज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' भगवान, तुमको जो वंदे सदा।
निजगुण से धनवान, हो जाते वे शीघ्र से।।327।।
ॐ ह्रीं गुणनायकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणादरी' प्रभु सिद्ध, मैं भी गुण आदर करूँ।
पूजत हो नव निद्ध, क्रम से जिनगुण संपदा।।328।।
ॐ ह्रीं गुणादरिणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक बहुभाव, वैभाविक गुण जगत में।
नाश धरा निजभाव, नमूँ 'गुणोच्छेदी' तुम्हें।।329।।
ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विभावगुण शून्य, 'निर्गुण' कहलाये प्रभो!।
नमत मिले गुण पूर्ण, पूजूँ मन वच काय से।।330।।
ॐ ह्रीं निर्गुणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुण्यगी' सिद्ध, दिव्यध्वनी के तुम धनी।
तुम वचसुधा समृद्ध, भविजन स्वस्थ पवित्र हों।।331।।
ॐ ह्रीं पुण्यगिरे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण से सहित प्रधान, 'गुण' कहलाये शास्त्र में।
स्वात्म सुधारस पान, हेतु नमूँ प्रभु सिद्ध को।।332।।
ॐ ह्रीं गुणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमसे भय हो दूर, शरणागत के नाथ हों।
मिले ज्ञान भरपूर, नमूँ 'शरण्य' जिनेश को।।333।।
ॐ ह्रीं शरण्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यवाक्'[1] जिन सिद्ध, पूर्वापर अविरुध वचन।
होवे चारित रिद्ध, इसी हेतु वंदन करूँ।।334।।
ॐ ह्रीं पुण्यवाचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावकर्ममल शून्य, पूर्ण पवित्र तुम्हीं प्रभो!।
रत्नत्रय निधि पूर्ण, हेतु 'पूत' भगवन् नमूँ।।335।।
ॐ ह्रीं पूताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिरमा को आप, वरण किया भवनाश के।
प्रभु 'वरेण्य' गुरु आप, जजूँ आप सम निधि मिले।।336।।
ॐ ह्रीं वरेण्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करता आत्म पवित्र, पुण्य वहीं है लोक में।
मुझ मन करो पवित्र, जजूँ 'पुण्यनायक' तुम्हीं।।337।।
ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुणगण गणना ना शक्य, नहीं कभी गणधर कहें।
इससे तुम्हीं 'अगण्य' जजते अगणित सौख्य हो।।338।।
ॐ ह्रीं अगण्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पुण्यधी' नाथ, शुद्ध बुद्ध ज्ञानी तुम्हीं।
नमूँ नमूँ नत माथ, शुद्ध निरंजन पद मिले।।339।।
ॐ ह्रीं पुण्यधिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह गण के नाथ, सबके हितकारी तुम्हीं।
मिले महाव्रत सार्थ, 'गण्य'[2] तुम्हें वंदन करूँ।।340।।
ॐ ह्रीं गण्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. 'पूतवाक्' यह पाठांतर आदि पु. में है। 2. 'गुण्य' यह पाठांतर आदिपुराण में है।

पुण्यतीर्थ करतार, आप 'पुण्यकृत्' सिद्ध हैं।
नमूँ अनंतों बार, एक मुक्ति के हेतु मैं।।341।।

ॐ ह्रीं पुण्यकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्षदातार, आप 'पुण्यशासन' कहे।
मिले ज्ञान भंडार, प्रभु तुम मत की शरण है।।342।।

ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'धर्माराम', नंदनवन सम धर्म है।
मिले स्वात्म सुखधाम, वंदन करते भव नशे।।343।।

ॐ ह्रीं धर्मारामाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे अनंतानंत, गुण समूह भगवान तुम।
'गुणग्राम' भगवंत, पूजत ही गुणमणि मिले।।344।।

ॐ ह्रीं गुणग्रामाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यपाप के द्वार, संवर से रोका प्रभो!।
वंदूं मैं शत बार, 'पुण्यपापरोधक' तुम्हीं।।345।।

ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पापापेत' महान् , हिंसादिक से शून्य हो।
नमत बनूं धनवान्, संयमनिधि को पूर्ण कर।।346।।

ॐ ह्रीं पापापेताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्मजन्य सुख प्राप्त, प्रभो 'विपापात्मा' नमूँ।
समकित निधि हो प्राप्त, मिले शुद्ध उपयोग झट।।347।।

ॐ ह्रीं विपापात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को नाश, सिद्ध 'विपात्मा' हो गये।
शिवलक्ष्मी की आश, धर मन में वंदन करूँ।।348।।

ॐ ह्रीं विपात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलिमल किया विनाश, नाथ 'वीतकल्मष' तुम्हीं।
नहिं भवसुख की आश, नमत अतीन्द्रिय सुख मिले।।349।।

ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जगद्वंद विभाव, परिग्रह विरहित सिद्ध हो।
प्रभु 'निर्द्वंद्व' स्वभाव, जजत कलह दुख दूर हो।।350।।

ॐ ह्रीं निर्द्वंद्वाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चित्रपदा छंद–

'निर्मद' सिद्ध तुम्हीं हो , मान कषाय जयी हो।
वंदत हो निज संपत, नाथ! जजूँ धर प्रीती।।351।।

ॐ ह्रीं निर्मदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांत' स्वभाव जिनेशा, पूर्ण शांति तुममें ही।
पूजत विपद् नशेगी, शांति अपूर्व मिलेगी।।352।।

ॐ ह्रीं शांताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो 'निरमोही', मोह ध्वांत मुझ नाशो।
मोक्षपुरी मिल जावे, नाथ! तुम्हें मैं पूजूँ।।353।।

ॐ ह्रीं निर्मोहाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व उपद्रव नाशा, 'निरुपद्रव' कहलाये।
शोक वियोग नशेंगे, जो जजते धर भक्ती।।354।।

ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र पलक ना झपकें, 'निर्निमेष' भगवंता।
दर्शन करूँ तुम्हारा, नेत्र सफल हों मेरे।।355।।

ॐ ह्रीं निर्निमेषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवलाहार तुम्हें ना, नाथ 'निराहारी' हो।
क्षुधा तृषा की व्याधी, पूजन से नशती है।।356।।

ॐ ह्रीं निराहाराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्क्रिय' सिद्ध महंता, नंता गुणों के कंता।
पूजत हो सुख साता, स्वात्म सुधारस पाके।।357।।
ॐ ह्रीं निष्क्रियाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'निरूपप्लव' हो, बाध विकार नहीं है।
कर्म नशें सब मेरे, वंदन से सुख संपत्।।358।।
ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कलंक' अभिरामा, शीघ्र वरी शिवरामा।
दुःख दरिद्र विनाशो, वंदत ज्ञान प्रकाशो।।359।।
ॐ ह्रीं निष्कलंकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! निरस्तैना हो, सर्व कर्म हीना हो।
मैं प्रभु अपराधी हूँ, दृष्टि कृपा की कीजे।।360।।
ॐ ह्रीं निरस्तैनसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप नहीं अपराधी, 'निर्धूतागस' मानें।
मुझ अपराध क्षमा हो, जन्म मरण से छूटूं।।361।।
ॐ ह्रीं निर्धूतागसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कर्म आस्रव से, शून्य 'निरास्रव' ही हो।
आस्रव का रोधन हो, पूजत संवर प्रगटे।।362।।
ॐ ह्रीं निरास्रवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विशाल' तुम्हीं हो, श्रेष्ठ महान जगत में।
पूजत सौख्य विशाला, ज्ञान विशाल बनेगा।।363।।
ॐ ह्रीं विशालाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुज्योती, नाथ! 'विपुलज्योती' हो।
भेदविज्ञान मिलेगा, वंदन से पूजन से।।364।।
ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अतुल' नहिं तुलना, नंत गुणों की गणना।
ज्ञान सुखामृत पाऊँ, वंदत पाप नशाऊँ।।365।।
ॐ ह्रीं अतुलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अचिन्त्यवैभव' युत, चिंतन करते योगी।
भक्ति करें जो जन भी, बोधि समाधि लहें वो।।366।।
ॐ ह्रीं अचिन्त्यवैभवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव कर्म रुके हैं, नाथ! 'सुसंवृत' माने।
संवर मुझे मिलेगा, भक्ति सहाय बनेगी।।367।।
ॐ ह्रीं सुसंवृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'सुगुप्तात्मा' हो, तीन गुप्तिसंयुत हो।
काय वचन मनगुप्ती, देकर देवो तृप्ती।।368।।
ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पदार्थ सुज्ञाता, 'सुभुत'[1] सिद्ध भगवंता।
ज्ञान हमारा पूरो, सब अज्ञान निवारो।।369।।
ॐ ह्रीं सुभुजे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान नयों का सम्यक्, 'सुनयतत्त्ववित्' स्वामी।
सत्य सुनय को जानूँ, स्यात्पद जजते मुक्ती।।370।।
ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकविद्य' भगवंता, केवल ज्ञान धरंता।
एक ज्ञान मुझ दीजे, कर्म कलंक हरीजे।।371।।
ॐ ह्रीं एकविद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाविद्य' जिनदेवा, विद्या बहुत तुम्हीं में।
वंदत पाप नशेंगे, केवलबोध खिलेगा।।372।।
ॐ ह्रीं महाविद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत् चराचर जानो, आप मुनी परधाना।
उत्तम 'मुनी' बनूं मैं, पूजत आश फलेगी।।373।।
ॐ ह्रीं मुनये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर आप सभी के, शास्त्र 'परिवृढ' कहते।
वंदन पादकमल का, नाश करे सब विपदा।।374।।
ॐ ह्रीं परिवृढाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. 'सुबुध्' पाठांतर है टीका में।

संसृति दुख से रक्षो, प्राणिमात्र पे करुणा।
आप 'पती' कहलाये, जग के नाथ तुम्हीं हो।।375।।

ॐ ह्रीं पतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीश' बुद्धि के पति हो, शुद्ध करो मुझ बुद्धी।
मैं तुम पादकमल की, पूजन करूँ रुची से।।376।।

ॐ ह्रीं धीशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्यानिधि' श्रुतनिधि हो, शास्त्र स्वपर के वेत्ता।
ज्ञानगुणाम्बुधि माने, मैं रुचि से नित पूजूँ।।377।।

ॐ ह्रीं विद्यानिधये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'साक्षी' तीन भुवन के, देख लिया प्रभु साक्षात्।
वंदत केवल लक्ष्मी, भव्य करें निज कर में।।378।।

ॐ ह्रीं साक्षिणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नम्र किया शिवपथ में, नाथ! 'विनेता' जग में।
वंदन शत शत मेरा, दूर करो भव फेरा।।379।।

ॐ ह्रीं विनेत्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु कहे 'विहतान्तक', मृत्यु विनाश किया है।
नाश करूँ यम का मैं, स्वात्म निधी मिल जावे।।380।।

ॐ ह्रीं विहतान्तकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गति से रक्षक हो, आप 'पिता' त्रिभुवन के।
पूजन से निज लब्धी, सर्व दुःखों से मुक्ती।।381।।

ॐ ह्रीं पित्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जगत् के गुरु हैं, नाम 'पितामह' ख्याता।
मैं गुरु तुम्हें बनाऊँ, फेर न भव में आऊँ।।382।।

ॐ ह्रीं पितामहाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक रोग आदिक से , 'पाता' करते रक्षा।
हे प्रभु! जिन को पाके, स्वस्थ बनूं गुण गाके।।383।।

ॐ ह्रीं पात्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पवित्र' तुम्हीं हो, पावन करते प्राणी।
पावन हो मुझ आत्मा, पूजन से फल प्राप्ती।।384।।

ॐ ह्रीं पवित्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पावन' सिद्ध कहाये, वंदत सौख्य बढ़ायें।
हो मन पावन मेरा, काय वचन भी शुचि हों।।385।।

ॐ ह्रीं पावनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'गती' हैं जग में, आर्त दूर कर देते।
ज्ञानमात्र हो स्वामी, पूजत पंचमगति हो।।386।।

ॐ ह्रीं गतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जनों के 'त्राता', भक्ती इसी से जजते।
काय वचन मन से मैं, ध्यान धरूँ प्रभु तेरा।।387।।

ॐ ह्रीं त्रात्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'भिषग्वर' तुम ही, पूर्ण स्वस्थ कर देते।
जन्म मरण रोगों से, भक्त छुटें निश्चित ही।।388।।

ॐ ह्रीं भिषग्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति रमा को वरके, 'वर्य' कहाये जग में।
इंद्रगणों से वेष्टित, मैं नत हूँ श्रीपद में।।389।।

ॐ ह्रीं वर्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित फल देते हो, नाथ 'वरद' कहलाये।
बोधि समाधि मुझे दो, एक यही वर मांगूँ।।390।।

ॐ ह्रीं वरदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पालन पोषण कर्ता, आप 'परम' भव्यों के।
इष्ट फलों को देकर, पूजन का फल मिलता।।391।।

ॐ ह्रीं परमाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मा पावन कर, आप 'पुमान' कहाये।
भाक्तिक जन मन शुद्धी, वंदन से झट होती ।।392।।

ॐ ह्रीं पुंसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अधर्म निरूपा, नाथ 'कवी' मुनि गायें।
मैं तुम गुण गा गाके, सफल करूँ निज रसना।।393।।

ॐ ह्रीं कवये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध 'पुराणपुरूष' हो, आदि अंत नहिं होता।
प्रभु पुरुषार्थ करूँ मैं, मोक्ष मिले अर्चन से।।394।।

ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्षीयान्' गुणों से, अतिशय वृद्ध कहाये।
स्वात्मगुणों की वृद्धी, हो मुझ में यह मांगूँ।।395।।

ॐ ह्रीं वर्षीयसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'ऋषभ' माने हो, पूर्ण जगत् को जानो।
श्रेष्ठ ज्ञान गुण दीजे, मोह अंधेर हरीजे।।396।।

ॐ ह्रीं ऋषभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरु' महान भगवंता, वंदन करूँ तुम्हारा।
दान अभय का दीजे, दूर करो भव फेरा।।397।।

ॐ ह्रीं पुरवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रतिष्ठाप्रभवा', उत्पत्ती तुम से ही।
सुस्थिरता प्रगटेगी, वंदन करूँ सदा मैं।।398।।

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रभवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हेतु' तुम्हीं जो जग में, भुक्ति मुक्ति प्रद माने।
रत्नत्रय निधि दीजे, वंदत सुख संपत् हो।।399।।

ॐ ह्रीं हेतवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप एक त्रिभुवन के, कहे पितामह स्वामी।
एकमात्र गुरु माने, पूजत ही भव हानें।।400।।

ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्यं–

प्रभु महाशोकध्वज आदि नाम, से पार्श्वनाथ सुर पूजित हो।
सौ इंद्रों से वंदित गणधर, मुनिगण से वंदित संस्तुत हो।।

प्रभु सात परमस्थान हेतु, मैं नितप्रति तुम गुण को गाऊँ।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तुमपद में ही मैं रम जाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादिशतनामसमन्वित श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

(5) पंचम शतक

–दोहा–

'श्रीवृक्षलक्षण' प्रभो! तरु अशोक से सिद्ध।
शोक दुःख दारिद नशे, नमत मिले नव निद्धि।।401।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत लक्ष्मी से तुम्हीं, आलिंगित हो 'श्लक्षण'।
गुण अनंत मेरे सभी, मिलते नाथ! प्रसन्न।।402।।

ॐ ह्रीं श्लक्षणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ महा व्याकरण में, साधु कुशल 'लक्षण्य'।
वाङ्मय विद्या प्राप्त हो, नमत जन्म हो धन्य।।403।।

ॐ ह्रीं लक्षण्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार सुआठ हैं, लक्षण श्रुत में मान्य।
'शुभलक्षण' इनसे सहित, नमत मिले गुण साम्य।।404।।

ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय सुख अरु ज्ञान से, रहित 'निरक्ष' जिनेश।
सौख्य अतीन्द्रिय हेतु मैं, नमत हरूँ भव क्लेश।।405।।

ॐ ह्रीं निरक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल सदृश वर नेत्र हैं, अतः 'पुण्डरीकाक्ष'।
पूजत मन पंकज खिले, आप भक्ति है साक्षि।।406।।

ॐ ह्रीं पुण्डरीकाक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म गुणों की पुष्टि से, 'पुष्कल' पूर्ण महान्।
नमत मिले धन धान्य सुख, भक्त बनें भगवान्।।407।।

ॐ ह्रीं पुष्कलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खिले सुरोरुह नेत्र हैं, करिये दृष्टि प्रसन्न।
नमूँ 'पुष्करेक्षण' तुम्हें, मुझ मन होय प्रसन्न।।408।।
ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्मा की उपलब्धि हो, तुम भक्ती से नाथ!।
नमूँ 'सिद्धिदा' आपको, भव भव में हो नाथ।।409।।
ॐ ह्रीं सिद्धिदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धोऽहं संकल्प से, तुम्हीं 'सिद्धसंकल्प'।
तुम अर्चा से दूर हों, सब संकल्प विकल्प।।410।।
ॐ ह्रीं सिद्धसंकल्पाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धात्मा' भगवान को, नमते जो त्रयकाल।
स्वयं सिद्ध बन वे पुरुष, बनते जग प्रतिपाल।।411।।
ॐ ह्रीं सिद्धात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सिद्धसाधन' प्रभो! भव्य मुक्ति के हेतु।
निश्चय रत्नत्रय निमित, मिलें आप भवसेतु।।412।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाधनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्धबोध्य' भगवंत तुम नमूँ नमूँ धर प्रीति।
ज्ञान जानने योग्य ही, प्राप्त किया जग मीत।।413।।
ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाबोधि' वैराग्य है, अरु रत्नत्रय प्राप्ति।
अति दुर्लभ इस विश्व में, नमत मुझे हो प्राप्ति।।414।।
ॐ ह्रीं महाबोधये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्द्धमान' विज्ञान से, वृद्धिंगत भगवंत।
ज्ञानपूर्ण मेरा करो, नमूँ तुम्हें शिवकांत।।415।।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय ऋद्धि समेत प्रभु, नाम 'महर्द्धिक' सिद्ध।
सर्व ऋद्धि सिद्धी मिले, यश भी जगत प्रसिद्ध।।416।।
ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा कल्प व व्याकरण, निरुक्त ज्योतिष छन्द।
वेद अंगमय को नमूँ, शिव उपाय 'वेदांग'।।417।।
ॐ ह्रीं वेदांगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा पृथक् शरीर से, यही भेद विज्ञान।
नमूँ 'वेदवित्' आप से, मिले मुझे सज्ज्ञान।।418।।
ॐ ह्रीं वेदविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वेद्य' मुनिगम्य तुम, केवलज्ञान धरंत।
स्वसंवेद्य अनुभव मिले, नमूँ नमूँ भगवंत।।419।।
ॐ ह्रीं वेद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जातरूप' जिनदेव तुम, निर्विकार निर्ग्रंथ।
नग्न दिगम्बर वेष युत, नमत मिले शिवपंथ।।420।।
ॐ ह्रीं जातरूपाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउज्ञानी विद्वन् मुनी, उनमें श्रेष्ठ जिनेंद्र।
नाम 'विदांवर' मैं नमूँ, मिले ध्यान का केन्द्र।।421।
ॐ ह्रीं विदांवराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदवेद्य' प्रभु आप ही, द्वादशांग के ईश।
पूर्ण ज्ञान दीजे मुझे, नमूँ नमाकर शीश।।422।।
ॐ ह्रीं वेदवेद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मा से ज्ञेय तुम, 'स्वसंवेद्य' भगवान्।
निज समरस सुख हेतु मैं, नमूँ नमूँ गुणखान।।423।।
ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद चार तुमसे हुये, अरु विशिष्ट ज्ञानैक।
नमूँ 'विवेद' जिनेन्द्र को, पाऊँ निज सुख एक।।424।।
ॐ ह्रीं विवेदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तार्किकजन में श्रेष्ठ तुम, 'वदताम्बर' जिनराज।
न्याय तर्क विद्या निपुण, बनूँ सरें सब काज।।425।।
ॐ ह्रीं वदताम्बराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अनादी निधन' हो, जन्म मरण से शून्य।
श्री अनंत शाश्वत धरो, नमत बनूँ दुख शून्य।।426।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थ प्रगट कराते प्रभो! केवलज्ञान से आप।
'व्यक्त' नाम तुमको नमूँ, दूर करूँ यम ताप।।427।।

ॐ ह्रीं व्यक्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह महाभाषा लघू, सात शतक सुस्पष्ट।
दिव्यध्वनी खिरती नमूँ, 'व्यक्तवाक्' तुम इष्ट।।428।।

ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ 'व्यक्तशासन' विमल, मत विरोध से हीन।
सब प्रमाण से प्रगट है, इससे हो दुख क्षीण।।429।।

ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादिकृत' आपने, धर्मसृष्टि उपदेश।
जग को संरक्षण दिया, नमत न हो दुख लेश।।430।।

ॐ ह्रीं युगादिकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि को प्रगट कर, भक्तों के अधार।
'युगाधार' तुमको नमूँ, धर्म तीर्थ अवतार।।431।।

ॐ ह्रीं युगाधाराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादि' कृतयुग का प्रथम, धर्म वही उपदेश।
शिवपथ दिखलाया हुये, सिद्ध नमूँ सुख हेतु।।432।।

ॐ ह्रीं युगादये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' जग में प्रभो !, तीर्थंकर अवतार।
मोक्षमार्ग के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।433।।

ॐ ह्रीं जगदादिजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय स्वामी इन्द्र से, बढ़कर आप 'अतीन्द्र'।
शत इन्द्रों से वंद्य प्रभु, नमत बनूँ ज्ञानीन्द्र।।434।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय ज्ञान व सुख रहित, आप 'अतीन्द्रिय' नाम।
स्वात्म अतीन्द्रिय सौख्य हित, कोटि कोटि प्रणाम।।435।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीन्द्र' सुकेवल ज्ञान से, परमात्मा अभिराम।
नमूँ भक्ती से शीघ्र मुझ, मिले स्वात्म विश्राम।।436।।

ॐ ह्रीं धीन्द्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमैश्वर्य समेत प्रभु, नाम 'महेन्द्र' धरंत।
पूजूँ श्रद्धा से तुम्हें, अनुपम सुख विलसंत।।437।।

ॐ ह्रीं महेन्द्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म अंतरित दूर की, वस्तु अतीन्द्रिय सर्व।
'अतीन्द्रियार्थदृक्' देखते, नमत मिले गुण सर्व।।438।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांचों इन्द्रिय से रहित, आप 'अनिन्द्रिय' मान।
अशरीरी प्रभु पार्श्व को, नमत मिले सुख साम्य।।439।।

ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिद्रों से पूज्य हो, 'अहमिन्द्रार्च्य' जिनेश।
स्वात्म सौख्य संपति मिले, शीघ्र मिटे भव क्लेश।।440।।

ॐ ह्रीं अहमिन्द्राच्यार्य श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस इन्द्रों से महित, नाम 'महेन्द्रमहीत'।
मैं भी पूजूँ प्रीतिधर, मिले स्वात्म नवनीत।।441।।

ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा के योग्य तुम, जग में श्रेष्ठ 'महान्'।
महाव्रतों की प्राप्ति हो, अतः नमूँ भगवान्।।442।।

ॐ ह्रीं महते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उद्भव' भव उत्कृष्ट तुम, या जग में उत्कृष्ट।
पूजन से सब भक्त के, मिट जाते सब कष्ट।।443।।

ॐ ह्रीं उद्भवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि के बीज हो, 'कारण' नाम धरंत।
धर्मनिधि मुझ को मिले आतम सुख विलसंत।।444।।

ॐ ह्रीं कारणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में आपने, उपदेशा द्वयकर्म।
'कर्ता' कहलाये प्रभो! नमत मिटे भव भर्म।।445।।

ॐ ह्रीं कर्त्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमहा संसार से, पार हुये भगवंत।
'पारग' तुमको मुनि कहे, तारो मुझे तुरंत।।446।।

ॐ ह्रीं पारगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती भव दुःख से, तारक नाव समान।
'भवतारक' की शरण ले, तिरते भव्य प्रधान।।447।।

ॐ ह्रीं भवतारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत का पार नहिं, पा सकते गणईश।
नमूँ 'अग्राह्य' प्रभो तुम्हें, नित्य नमाकर शीश।।448।।

ॐ ह्रीं अग्राह्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगी जन से भी 'गहन' आप अलक्ष्यस्वरूप।
स्वात्म गुणों के हित नमूँ, प्राप्त करुँ निज रूप।।449।।

ॐ ह्रीं गहनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगगम्य योगीश के, 'गुह्य' आप का नाम।
मुक्ति रहस्य मिले मुझे, नमूँ नमूँ शिवधाम।।450।।

ॐ ह्रीं गुह्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रमणी छंद–

भगवन्! 'परार्घ्य' सुख ऋद्धि धरा।
मुझको सुख दो, कर जोड़ नमूँ।।451।।

ॐ ह्रीं परार्घ्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमेश्वर' हो, शिव श्री पति हो।
नमते मुझको, परमामृत दो।।452।।

ॐ ह्रीं परमेश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अनंतर्द्धी' जग में।
मुझ में अनंत गुण ऋद्धि भरो।।453।।

ॐ ह्रीं अनंतर्द्धये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं माप 'अमेयर्द्धी' गुण तुम।
सुख ज्ञान भरो, मुझमें जजहूँ।।454।।

ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अचिन्त्यर्द्धी' नत मैं।
नहिं चिंतन कर सकते मुनि भी।।455।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यर्द्धये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रणमूं 'समग्रधी' केवल धी।
जजते मिलती, निज सौख्य निधी।।456।।

ॐ ह्रीं समग्रधिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्राग्र्य' नमूँ, जग मुख्य तुम्हीं।
मुझ जन्म जरा, मरणादि हरो।।457।।

ॐ ह्रीं प्राग्र्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्राग्रहरा', सब मंगल कृत।
नमते मुझको, निज संपति दो।।458।।

ॐ ह्रीं प्राग्रहराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभ्यग्र' तुम्हीं, शिव सन्मुख हो।
त्रयलोक उपरि, निवसो प्रणमूँ।।459।।

ॐ ह्रीं अभ्यग्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रत्यग्र' विलक्षण हो जग में।
नत हूँ नित मैं, चरणांबुज में।।460।।

ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब में प्रमुखा, प्रभु 'अग्र्य' तुम्हीं।
तुमको जजते, शत इन्द्र सदा।।461।।

ॐ ह्रीं अग्र्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब में अग्रेसर 'अग्रिम' हो।
प्रभु अंत समाधी, दो मुझको।।462।।

ॐ ह्रीं अग्रिमाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–उपजाति छंद–

हो ज्येष्ठ सबमें, 'अग्रज' कहाते।
त्रैलोक्य में नाथ तुम्हीं बड़े हो।।
पूजूँ तुम्हें नाम सुमंत्र गाऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।463।।

ॐ ह्रीं अग्रजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातपा' घोर सुतप किया है।
बारह तपों को मुझको भि देवो।।पूजूँ.।।464।।

ॐ ह्रीं महातपसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजोमयी पुण्य प्रभो! धरे हो।
'महासुतेजा' तुम तेज फैला।।पूजूँ.।।465।।

ॐ ह्रीं महातेजसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महोदर्क' तुम्हें कहे हैं।
महान तप का फल श्रेष्ठ पाया।।पूजूँ.।।466।।

ॐ ह्रीं महोदर्काय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐश्वर्य भारी प्रभु आपका है।
अतः 'महोदय' जग में तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।467।।

ॐ महोदयाय ह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ती चहुँदिश प्रभु की सुफैली।
'महायशा' नाम कहा इसी से।।पूजूँ.।।468।।

ॐ ह्रीं महायशसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाधाम' तुम्हीं कहाते।
विशाल ज्ञानी सुप्रताप धारी।।
पूजूँ तुम्हें नाम सुमंत्र गाऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।469।।

ॐ ह्रीं महाधाम्ने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासत्त्व' अपार शक्ती।
हे नाथ! मुझको निज शक्ति देवो।।पूजूँ.।।470।।

ॐ ह्रीं महासत्त्वाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृती' धैर्य असीम धारी।
आपत्ति में धैर्य रहे मुझे भी।।।पूजूँ.।।471।।

ॐ ह्रीं महाधृतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाधैर्य' त्रिलोक में भी।
महान तेलोबल वीर्य शाली।।पूजूँ.।।472।।

ॐ ह्रीं महावीर्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महावीर्य' अनंतशक्ती।
महान तेजोबल वीर्य शाली।।पूजूँ.।।473।।

ॐ ह्रीं महावीर्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासंपत्' सर्वसंपत्।
समोसरण में तुम पास शोभे।।पूजूँ.।।474।।

ॐ ह्रीं महासंपदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो!'महाबल' तनु शक्ति भारी।
ऐसी जगत् में नहिं अन्य के हो।।पूजँ.।।475।।

ॐ ह्रीं महाबलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–प्रमाणिक छंद–

'महानशक्ति' धारते, त्रिलोक के गुरु तुम्हीं।
नमूँ अनंत शक्ति हेतु, आपको सदा यहीं।।476।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान ज्योति' नाथ हो, अनंत ज्ञान रूप हो।
सुज्ञान ज्योति दीजिये, जजूँ तुम्हें सुप्रीति से।।477।।
ॐ ह्रीं महाज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाविभूति तीन लोक की अनंत संपदा।
तथापि हो अधर तम्हीं, नमूँ निजात्म सौख्य दो।।478।।
ॐ ह्रीं महाविभूतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाद्युती' असंख्य रत्नकांति से भि कांत हो।
जजूँ तुम्हें स्वकांति से मुझे प्रकाश दीजिये।।479।।
ॐ ह्रीं महाद्युतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामती' महान पूर्ण बुद्धि से त्रिलोक को।
जिनेन्द्र! एक साथ आप जानते नमूँ तुम्हें।।480।।
ॐ ह्रीं महामतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाननीति' न्याय आप सर्व भव्य का करें।
समस्त दुष्ट कर्म से छुड़ाइये जजूँ तुम्हें।।481।।
ॐ ह्रीं महानीतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान क्षांति' कमठ को क्षमा किया क्षमामयी।
मुझे भि शक्ति दीजिये क्षमास्वरूप मैं बनूँ।।482।।
ॐ ह्रीं महाक्षांतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादयो' समस्त जीव पे दया किया तुम्हीं।
दया करूँ निजात्म पे यही कृपा करो नमूँ।।483।।
ॐ ह्रीं महादयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानप्राज्ञ' नाथ केवली अनंतज्ञान से।
सुभेदज्ञान दीजिये तिरूँ भवोदधी अबे।।484।।
ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान भाग' सर्व सौख्य पूर्ण हो त्रिलोक में।
सुरेन्द्र पूजते तुम्हें नमंत श्रेष्ठ भाग्य हो।।485।।
ॐ ह्रीं महाभागाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाअनंद' स्वात्म जन्य सौख्य में निमग्न हो।
मुझे निजात्म सौख्य दीजिये नमूँ नमूँ तुम्हें।।486।।
ॐ ह्रीं महानन्दाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकवी' समस्त सौख्यदायि आपके वचन।
नमूँ कृपा करो सुवाक्य सिद्धि प्राप्त हो मुझे।।487।।
ॐ ह्रीं महाकवये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामहान्' देव इंद्र आप अर्चना करें।
महान तेज धारते नमूँ सुज्ञान तेज दो।।488।।
ॐ ह्रीं महामहान श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानकीर्ति' से समस्त लोक में सुव्याप्त हो।
पदाब्ज को जजूँ निजात्म कीर्ति व्याप्त हो यहाँ।।489।।
ॐ ह्रीं महाकीर्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान कांति' से अपूर्व कांतिमान हो तुम्हीं।
समस्त आधि व्याधि नाश स्वस्थ कीजिये जजूँ।।490।।
ॐ ह्रीं महाकान्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावपू' असंख्य भी प्रदेश व्याप्त लोक में।
सुकेवली समुद्सुघात से तुम्हें नमूँ यहीं।।491।।
ॐ ह्रीं महावपुषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान दान' अभय दान सर्वप्राणि को दिया।
प्रभो हमें उबारिये कृपालु रक्षिये जजूँ।।492।।
ॐ ह्रीं महादानाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान ज्ञान' से अलोक लोक जानते सदा।
सुज्ञान की कली खिले जजूँ इसीलिये तुम्हें।।493।।
ॐ ह्रीं महाज्ञानाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान योग' नाम है स्वशुद्ध आत्म ध्यान से।
अनंत धाम पा लिया नमूँ निजात्म ध्यान दो।।494।।
ॐ ह्रीं महायोगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महागुणी' अनंत गुण समेत इन्द्रवंद्य हो।
गुणों की राशि दीजिये समस्त दोष दूर हों।।495।।

ॐ ह्रीं महागुणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमेरु पे न्हवन करें सुरेंद्र वंद्य भक्ति से।
'महान महपती' नमूँ दरिद्र दुख दूर हो।।496।।

ॐ ह्रीं महामहपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्राप्त महा पंचकल्याणक' सुरेंन्द्र वृंद से।
जिनेन्द्र एक ही कल्याण दीजिये नमूँ तुम्हें।।497।।

ॐ ह्रीं प्राप्तमहाकल्याणकपंचकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभु' समस्त जीव के अपूर्व नाथ हों।
निवारिये समस्त मोह दुःखदायि मैं जजूँ।।498।।

ॐ ह्रीं महाप्रभवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान प्रातिहार्य के अधीश' छत्र आदि से।
शतेन्द्र वंद्य आपको नमूँ अपूर्व सौख्य दो।।499।।

ॐ ह्रीं महाप्रतिहार्याधीशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेश्वरा' त्रिलोक के अधीश्वरा जिनेश्वरा।
सुभक्ति से नमूँ तुम्हें महान संपदा मिले।।500।।

ॐ ह्रीं महेश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

श्री वृक्षलक्षणादिक सौ ये, तुम नाममंत्र अतिशयकारी।
मैं पूजूँ आप पार्श्वप्रभु को, पा जाऊँ निज संपति सारी।।
बहिरात्म अवस्था छोड़ नाथ! अंतर आतम शुद्धात्म बनूँ।
तुम भक्ति युक्ति से शक्ति पाय, मुक्तिपद पा जिनराज बनूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणादिशतनामसमन्वित–श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

(6) षष्ठ शतक

–सोरठा–

'महामुनि' प्रभु आप, मुनियों में उत्तम कहे।
नाममंत्र तुम नाथ! पूजत ही सुखसंपदा।।501।।

ॐ ह्रीं महामुनये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि हो मौन धरंत, प्रभु 'महामौनी' तुम्हीं।
नाम मंत्र पूजंत, रोग शोक संकट टले।।502।।

ॐ ह्रीं महामौनिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म शुक्लद्वय ध्यान, धार 'महाध्यानी'[1] हुये।
नाममंत्र का ध्यान, करते ही सब सुख मिले।।503।।

ॐ ह्रीं महाध्यानिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण जिनेन्द्रिय आप, नाम 'महादम' धारते।
नाममंत्र तुम नाथ! पूजत आतम निधि मिले।।504।।

ॐ ह्रीं महादमाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ क्षमा के ईश, नाम 'महाक्षम' सुर कहें।
नाममंत्र नत शीश, पूजूं मैं अतिभाव से।।505।।

ॐ ह्रीं महाक्षमाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह सहस सुशील, 'महाशील' तुम नाम है।
पूरण हो गुण शील, पार्श्वनाथ मैं पूजहूँ।।506।।

ॐ ह्रीं महाशीलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप अग्नी में आप, कर्मेंधन को होमिया[2]।
'महायज्ञ' तुम नाथ, पूजूँ भक्ति बढ़ाय के।।507।।

ॐ ह्रीं महायज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पूज्य जिनेश! नाम 'महामख' धारते।
पूजूँ भक्ति समेत, पार्श्वनाथ प्रभु सुख मिले।।508।।

ॐ ह्रीं महामखाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. महाध्यानो पाठ आदि पु. में है। 2. होम कर दिया।

पाँच महाव्रत ईश, नाम 'महाव्रतपति' धरा।
जजूँ नमाकर शीश, पार्श्वनाथ प्रभु आपको।।509।।

ॐ ह्रीं महाव्रतपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मह्य' आप जगपूज्य, गणधर साधूगण नमें।
मिलें स्वात्मपद पूज्य, पार्श्वनाथ को पूजते।।510।।

ॐ ह्रीं मह्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकान्तिधर' आप अतिशय कांतिनिधान हो।
नाममंत्र तुम जाप, करे अतुल सुखसंपदा।।511।।

ॐ ह्रीं महाकांतिधराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी इष्ट, अतः 'अधिप' सुरगण कहें।
नाशो सर्व अनिष्ट, पार्श्वनाथ तुम पूजहूँ।।512।।

ॐ ह्रीं अधिपाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामैत्रिमय' नाथ! सबसे मैत्रीभाव है।
पार्श्वनाथ तुम जाप, त्रिभुवन को वश में करे।।513।।

ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनवधि गुण के नाथ, तुम्हें 'अमेय' मुनी कहें।
पूजत बनूँ सनाथ, पार्श्वनाथ प्रभु आपको।।514।।

ॐ ह्रीं अमेयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोपाय' तुम नाथ! शिव के श्रेष्ठ उपाययुत।
जजत सर्व सुखसाथ, पार्श्वनाथ को नित जपूँ।।515।।

ॐ ह्रीं महोपायाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ!'महोमय' आप, अति उत्सव अरु ज्ञानयुत।
पार्श्वनाथ तुम जाप, सर्व उपद्रव नाशता।।516।।

ॐ ह्रीं महोमयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकारुणिक' आप, दया धर्म उपदेशिया।
पार्श्वनाथ का जाप, करत जन्म मृत्यु टले।।517।।

ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंता' आप महान, सब पदार्थ को जानते।
जजूँ पार्श्व गुणखान, पूर्ण ज्ञान संपति मिले।।518।।

ॐ ह्रीं मंत्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व मंत्र के ईश, 'महामंत्र' तुम नाम है।
तुम्हें नमें गणधीश, पार्श्वनाथ मैं भी जजूँ।।519।।

ॐ ह्रीं महामंत्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतिगण में अतिश्रेष्ठ, नाम 'महायति' आपका।
पूजत ही पद श्रेष्ठ, पार्श्वनाथ को पूजहूँ।।520।।

ॐ ह्रीं महायतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानाद' प्रभु आप, दिव्यध्वनी गंभीर धर।
नमत बनूँ निष्पाप, पार्श्वनाथ भी मैं जजूँ।।521।।

ॐ ह्रीं महानादाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनी गंभीर, योजन तक सुनते सभी।
जजत मिले भवतीर, 'महाघोष' तुम नाम को।।522।।

ॐ ह्रीं महाघोषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'महेज्य' सुनाम, महती पूजा पावते।
सौ इन्द्रों से मान्य, पार्श्वनाथ मैं पूजहूँ।।523।।

ॐ ह्रीं महेज्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महसांपति' प्रभु आप, सर्व तेज के ईश हो।
तुम प्रताप भवताप, हरण करे मैं पूजहूँ।।524।।

ॐ ह्रीं महसांपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान यज्ञ को धार, नाम 'महाध्वरधर' प्रभु।
मिले सर्व सुखसार, पार्श्वनाथ मैं पूजहूँ।।525।।

ॐ ह्रीं महाध्वरधराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

'धुर्य' हो मुक्ति के मार्ग में श्रेष्ठ हो।
धर्म उपदेश में सर्व में ज्येष्ठ हो।।

आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।526।।

ॐ ह्रीं धुर्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महौदार्य' अतिशायि ऊदार हो।
आप निर्ग्रन्थ भी इष्ट दातार हो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।527।।

ॐ ह्रीं महौदार्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य वाक्याधिपति सु 'महिष्ठवाक्' हो।
दिव्यवाणी सुधावृष्टि कर्ता सु हो।।आप.।।528।।

ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक आलोक व्यापी 'महात्मा' तुम्हीं।
अंतरात्मा पुनः सिद्ध आत्मा तुम्हीं।।आप.।।529।।

ॐ ह्रीं महात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व तेजोमयी 'महसांधाम' हो।
आत्म के तेज से सर्व जग मान्य हो।।आप.।।530।।

ॐ ह्रीं महासांधाम्ने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ऋषि में प्रमुख हो 'महर्षि' तुम्हीं।
ऋद्धि सिद्धी धरो आप सुख ही मही।।आप.।।531।।

ॐ ह्रीं महर्षये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ भव धार के आप 'महितोदया'।
तीर्थकर नाम से पूज्य धर्मोदया।।आप.।।532।।

ॐ ह्रीं महितोदयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महाक्लेश अंकुश' परीषहजयी।
क्लेश के नाश हेतू सुअंकुश सही।।आप.।।533।।

ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शूर' हो कर्मक्षय दक्ष हो लोक में।
नाथ! मेरे हरो कर्म आनंद हो।।आप.।।534।।

ॐ ह्रीं शूराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाभूतपति' गणधराधीश हो।
नाथ! रक्षा करो आप जगदीश हो।।आप.।।535।।

ॐ ह्रीं महाभूतपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपही हो 'गुरु' धर्म उपदेश दो।
तीन जग में तुम्हीं श्रेष्ठ हो सौख्य दो।।आप.।।536।।

ॐ ह्रीं गुरवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'महापराक्रम' के धनी।
केवलज्ञान से सर्ववस्तू भणी।।आप.।।537।।

ॐ ह्रीं महापराक्रमाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अनंत' आपका अंत ना हो कभी।
नाथ! दीजे अनंतों गुणों को अभी।।आप.।।538।।

ॐ ह्रीं अनन्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाक्रोधरिपु' क्रोध शत्रू हना।
सर्व दोषारिनाशा सुमृत्यु हना।।आप.।।539।।

ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप इंद्रिय 'वशी' लोक तुम वश्य में।
आत्मवश मैं बनूँ चित्त को रोक के।।आप.।।540।।

ॐ ह्रीं वशिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! हो 'महाभवाब्धिसंतारि' भी।
आप संसार सागर तरा तारते।।आप.।।541।।

ॐ ह्रीं महाभवाब्धिसंतारिणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही 'महामोहाद्रिसूदन' कहे।
मोह पर्वत सुभेदा सुज्ञाता बनें।।आप.।।542।

ॐ ह्रीं महामोहाद्रिसूदनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'महागुणाकर' लोक में।
रत्नत्रय की खनी भव्य पूजें तुम्हें।।आप.।।543।।

ॐ ह्रीं महागुणाकराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्त' हो कमठ के सब उपद्रव सहा।
आपकी भक्ति से हो क्षमा गुण महा।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।544।।

ॐ ह्रीं क्षान्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महायोगिश्वर' गणधरादी पती।
योगियों में धुरंधर जगत के पती।।आप.।।545।।

ॐ ह्रीं महायोगिश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शमी' शांत परिणाम से विश्व में।
पूर्ण शांती मिले पूजहूँ नाथ! मैं।।आप.।।546।।

ॐ ह्रीं शमिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाध्यानपति' शुक्लध्यानीश हो।
शुक्ल परिणाम हो नाथ! वरदान दो।।आप.।।547।।

ॐ ह्रीं महाध्यानपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्यातमहाधर्म' सब जीव रक्षा करी।
शुभ अहिंसामयी धर्म के हो धुरी।।आप.।।548।।

ॐ ह्रीं ध्यातमहाधर्माय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाव्रत' प्रभो! पाँच व्रत श्रेष्ठ धर।
पूर्ण होवें महाव्रत बनूँ मुक्तिवर।।आप.।।549।।

ॐ ह्रीं महाव्रताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाकर्म अरिहा' महावीर हो।
कर्म अरि को हना आप अरिहंत हो।।आप.।।550।।

ॐ ह्रीं महाकर्मारिघ्ने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सुन्दरी छंद–

निज स्वरूप विदित 'आत्मज्ञ' हो।
सब चराचर लोक सुविज्ञ हो।।

जजतहूँ प्रभु पार्श्व सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।551।।

ॐ ह्रीं आत्मज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व देवन मधि 'महादेव' हो।
सुर असुर पूजित महादेव हो।।जजतहूँ.।।552।।

ॐ ह्रीं महादेवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महत समरथवान 'महेशिता'।
सकल ऐश्वर धारि जिनेशिता।।जजतहूँ.।।553।।

ॐ ह्रीं महेशित्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरबक्लेशापह' दुख नाशिये।
सकल ज्ञान सुधामय साजिये।।जजतहूँ.।।554।।

ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज हितंकर 'साधु' कहावते।
स्वपर हित साधन बतलावते।।जजतहूँ.।।555।।

ॐ ह्रीं साधवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरबदोषहरा' जिन आप हो।
सकल गुणरत्नाकर नाथ हो।।जजतहूँ.।।556।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषहराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हर' तुम्हीं सब पाप विनाशते।
प्रभु अनंतसुखाकर आप ही।।जजतहूँ.।।557।।

ॐ ह्रीं हराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'असंख्येय' प्रभु आप ही।
गिन नहीं सकते गुण साधु भी।।जजतहूँ.।।558।।

ॐ ह्रीं असंख्येयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रमेयात्मा' जिन आप हो।
अनवधी शक्तीधर नाथ हो।।जजतहूँ.।।559।।

ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'शमात्मा' शांतस्वरूप हो।
सकल कर्मक्षयी शिवभूप हो।।
जजतहूँ प्रभु पार्श्व सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।560।।

ॐ ह्रीं शमात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगट 'प्रशमाकर' शमखानि हों
जगत शांतिसुधा बरसावते।।जजतहूँ.।।561।।

ॐ ह्रीं प्रशमाकराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरबयोगीश्वर' मुनि ईश हो।
गणधरादि नमावत शीश को।।जजतहूँ.।।562।।

ॐ ह्रीं सर्वयोगीश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुवन में तुम ईश! 'अचिन्त्य' हो।
नहिं किसी जन के मन चिन्त्य हो।।जजतहूँ.।।563।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'श्रुतात्मा' सब श्रुतरूप हो।
सकल भाव श्रुतांबुधि चन्द्र हो।।जजतहूँ.।।564।।

ॐ ह्रीं श्रुतात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल जानत 'विष्टरश्रव' कहे।
धरम अमृतवृष्टि करो सदा।।जजतहूँ.।।565।।

ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश किया मन 'दान्तात्मा' प्रभो।
सुतप क्लेश सहा जिन आपने।।जजतहूँ.।।566।।

ॐ ह्रीं दान्तात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं 'दमतीरथईश' हो।
सकल इन्द्रियनिग्रह तीर्थ हो।।जजतहूँ.।।567।।

ॐ ह्रीं दमतीर्थेशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल ध्यावत 'योगात्मा' तुम्हीं।
शुकल योगधरा जिन आपने।।जजतहूँ.।।568।।

ॐ ह्रीं योगात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सदा तुम 'ज्ञानसुसर्वगा'।
जगत व्याप्त किया निज ज्ञान से।।जजतहूँ.।।569।।

ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रधान' तुम्हीं त्रय लोक में।
प्रमुख हो निज आतम ध्यान से।।जजतहूँ.।।570।।

ॐ ह्रीं प्रधानाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमहि 'आत्मा' ज्ञान स्वरूप हो।
सकल लोक अलोक सुजानते।।जजतहूँ.।।571।।

ॐ ह्रीं आत्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रकृति' हो तिहुँलोक हितैषि हो।
प्रकृतिरूप धरम उपदेशि हो।।जजतहूँ.।।572।।

ॐ ह्रीं प्रकृतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम' हो सबमें उत्कृष्ट हो।
परम लक्ष्मीयुत जिनश्रेष्ठ हो।।जजतहूँ.।।573।।

ॐ ह्रीं परमाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत 'परमोदय' जिननाथ हो।
परम वैभव से तुम ख्यात हो।।जजतहूँ.।।574।।

ॐ ह्रीं परमोदयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रक्षीणबंध' जिनेश हो।
सकल कर्म विहीन तुम्हीं कहे।।जजतहूँ.।।575।।

ॐ ह्रीं प्रक्षीणबंधाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–मोतीदाम छंद–

प्रभो! तुम 'कामारी' जग सिद्ध।
किया तुम काम महाअरि विद्ध।।

जजूँ प्रभु पार्श्व महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्।।576।।

ॐ ह्रीं कामारये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'क्षेमकृता' अभिराम।
जगत् कल्याण किया सुखधाम।।जजूँ.।।577।।

ॐ ह्रीं क्षेमकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'क्षेमसुशासन' सिद्ध।
किया मंगल उपदेश समृद्ध।।जजूँ.।।578।।

ॐ ह्रीं क्षेमशासनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणव' तुमही ओंकार स्वरूप।
सभी मंत्रों मधि शक्तिस्वरूप।।जजूँ.।।579।।

ॐ ह्रीं प्रणवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणय' सबका तुम्ही में प्रेम।
नहीं तुम बिन होता सुख क्षेम।।जजूँ.।।580।।

ॐ ह्रीं प्रणयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं प्रभु 'प्राण' जगत् के त्राण।
दिया सब ही को जीवन दान।।जजूँ.।।581।।

ॐ ह्रीं प्राणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'प्राणद' सुखदातार।
सभी जन रक्षक नाथ उदार।।जजूँ.।।582।।

ॐ ह्रीं प्राणदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रणतेश्वर' भव्यन ईश।
नमें तुमको उनके प्रभु ईश।।जजूँ.।।583।।

ॐ ह्रीं प्रणतेश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रमाण' तुम्हीं जग ज्ञान धरंत।
तुम्हें भवि पा होते भगवंत।।जजूँ.।।584।।

ॐ ह्रीं प्रमाणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रणिधी' निधियों के स्वामि।
अनंत गुणाकर अंतर्यामि।।जजूँ.।।585।।

ॐ ह्रीं प्रणिधये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं प्रभु 'दक्ष' समर्थ सदैव।
करो मुझ कर्म अरी का छेव।।जजूँ.।।586।।

ॐ ह्रीं दक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'दक्षिण' हो सर्व प्रवीण।
सरल अतिशायि महागुणलीन।।जजूँ.।।587।।

ॐ ह्रीं दक्षिणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'अध्वर्यु' सुयज्ञ करंत।
महा शिवमार्ग दिया भगवंत।।जजूँ.।।588।।

ॐ ह्रीं अध्वर्यवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अध्वर' शिवपथ दर्शंत।
सदा ऋजु ही परिणाम धरंत।।जजूँ.।।589।।

ॐ ह्रीं अध्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुमही 'आनंद' अनूप।
मुझे सुखदेव सदा सुखरूप।।जजूँ.।।590।।

ॐ ह्रीं आनन्दाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा सबको आनंद करंत।
तुम्हीं प्रभु 'नंदन' नाम धरंत।।जजूँ.।।591।।

ॐ ह्रीं नंदनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'नन्द' समृद्धि निधान।
सदा करते तुम ज्ञान सुदान।।जजूँ.।।592।।

ॐ ह्रीं नन्दाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'वंद्य' सुरासुर पूज्य।
सभी वंदन करते अनुकूल्य।।जजूँ.।।593।।

ॐ ह्रीं वंद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनिंद्य' तुम्हीं सब दोष विहीन।
अनंत गुणों के पुंज प्रवीण।।
जजूँ प्रभु पार्श्व महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्।।594।।

ॐ ह्रीं अनिंद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अभिनंदन' जग आनंद।
प्रशंसित हो त्रिभुवन में वंद्य।।जजूँ.।।595।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'कामह' काम हनंत।
विषयविषमूर्च्छित को सुखकंद।।जजूँ.।।596।।

ॐ ह्रीं कामघ्ने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'कामद' हो जग इष्ट।
सभी अभिलाष करो तुम सिद्ध।।जजूँ.।।597।।

ॐ ह्रीं कामदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोहर 'काम्य' सभी जन इष्ट।
तुम्हें नित चाहत साधु गणीश।।जजूँ.।।598।।

ॐ ह्रीं काम्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोरथ पूरण 'कामसुधेनु'।
करो मुझ वांछित पूर्ण जिनेन्द्र।।जजूँ.।।599।।

ॐ ह्रीं कामधेनवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अरिंजय' आप करम अरि जीत।
हरो मुझ कर्म तुम्हीं जगमीत।।जजूँ.।।600।।

ॐ ह्रीं अरिंजयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्यं–

प्रभु महामुनी से ले करके, सौ नाम तुम्हारे जग पूजें।
जो भक्ति वंदना नित्य करें, वो भव भव के दुख से छूटें।।

मैं पूजूँ पार्श्वनाथ प्रभु को, मेरी भव भव की व्याधि हरो।
प्रभु सात परमस्थान देय, जिनगुण संपत्ती पूर्ण करो।।6।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामसमन्वित–श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(7) सप्तम शतक

–भुजंगी छंद–

'असंस्कृतसुसंस्कार' नामा तुम्हीं।
बिना संस्कारे सुसंस्कृत तुम्हीं।।
जजूँ नाम पारस प्रभो ! भक्ति से।
पिऊँ आत्म पीयूष भी युक्ति से।।601।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्राकृत'[1] तुम्हीं तो स्वभावीक हो।
धरा अष्टमें वर्ष व्रत[2] देश को।।जजूँ.।।602।।

ॐ ह्रीं अप्राकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'वैकृतांतकृत' आप ही।
विकारादि दोषा विनाशा तुम्हीं।।जजूँ.।।603।।

ॐ ह्रीं वैकृतांतकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अंतकृत' दुःख को नाशिया।
जनम मृत्यु का भी समापन किया।।जजूँ.।।604।।

ॐ ह्रीं अंतकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'कांतगू' श्रेष्ठ वाणी धरो।
मुझे हो वचोसिद्धि ऐसा करो।।जजूँ.।।605।।

ॐ ह्रीं कांतगवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महारम्य सुंदर प्रभो! 'कांत' हों।
त्रिलोकीपती साधु में मान्य हो।।जजूँ.।।606।।

ॐ ह्रीं कांताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. 'प्राकृत' है आदि पु. में। 2. आठवें वर्ष में तीर्थंकर भगवान स्वयं देशव्रती हो जाते हैं।

प्रभो! पार्श्व 'चिंतामणी' रत्न हो।
सभी इच्छती वस्तु देते सदा।।
जजूँ नाम पारस प्रभो ! भक्ति से।
पिऊँ आत्म पीयूष भी युक्ति से।।607।।

ॐ ह्रीं चिंतामणये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभीष्टद' अभीप्सित लहें भक्त ही।
मुझे दीजिये नाथ! मुक्ती मही।।जजूँ.।।608।।

ॐ ह्रीं अभीष्टदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न जीते गये हो 'अजित' आप हो।
प्रभो! मोह जीतूँ यही शक्ति दो ।।जजूँ.।।609।।

ॐ ह्रीं अजिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जितकाम अरि' लोक में।
विषय काम क्रोधादि जीता तुम्हीं।।जजूँ.।।610।।

ॐ ह्रीं जितकामारये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमित' माप होता नहीं आपका।
अनंते गुणों की खनी आप हो।।जजूँ.।।611।।

ॐ ह्रीं अमिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितशासना' धर्म अनुपम कहा।
मुझे आप सम नाथ कीजे अबे।।जजूँ.।।612।।

ॐ ह्रीं अमितशासनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्रोध' हो आप शांती सुधा।
महा शांति से क्रोध जीता सभी।।जजूँ.।।613।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितामित्र' कोई न शत्रु रहा।
प्रभो! आप ही सर्वप्रिय लोक में।।जजूँ.।।614।।

ॐ ह्रीं जितामित्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्लेश' सब क्लेश जीता तुम्हीं।
सभी क्लेश मेरे निवारो अबे।।जजूँ.।।615।।

ॐ ह्रीं जितक्लेशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितांतक' प्रभो! मृत्यु को नाशियां।
समाधी मिले अंत में भी मुझे।।जजूँ.।।616।।

ॐ ह्रीं जितांतकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जिनेन्द्र' हो विश्व में।
तुम्हीं श्रेष्ठ हो कर्मजयि साधु में।।।जजूँ.।।617।।

ॐ ह्रीं जिनेंद्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो आप ही 'परमआनंद' हो।
मुझे आत्म आनंद दीजे अबे।।जजूँ.।।618।।

ॐ ह्रीं परमानंदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'मुनींद्र' हो लोक में।
मुनीनाथ मानें नमें साधु भी ।।जजूँ.।।619।।

ॐ ह्रीं मुनींद्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'दुंदुभीस्वन्' ध्वनी आपकी।
सुगंभीर दुंदुभि सदृश ही खिरे।।जजूँ.।।620।।

ॐ ह्रीं दुंदुभिस्वनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेन्द्रैःसुवंद्या' प्रभो आप ही।
सभी इंद्र से वंद्य हो पूज्य हो।।जजूँ.।।621।।

ॐ ह्रीं महेन्द्रवंद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'योगीन्द्र' हो विश्व में।
सभी ध्यानियों में तुम्हीं श्रेष्ठ हो।।जजूँ.।।622।।

ॐ ह्रीं योगीन्द्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'यतीन्द्रा' मुनी साधु में।
सदा श्रेष्ठ मानें गणाधीश में।।जजूँ.।।623।।

ॐ ह्रीं यतीन्द्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'नाभिनन्दन' तुम्हीं मान्य हो।
धरो नाभि सुंदर विख्यात हो।।
जजूँ नाम पारस प्रभो ! भक्ति से।
पिऊँ आत्म पीयूष भी युक्ति से।।624।।

ॐ ह्रीं नाभिनंदनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'नाभेय' हो पूज्य हो।
विधाता धर्म सृष्टि से जन्य हो।।जजूँ.।।625।।

ॐ ह्रीं नाभेयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाराच छंद–इसे दो ही लाइन रखने से प्रमाणिक छंद हो जाता है।*)*

जिनेन्द्र! आप 'नाभिजा' शतेंद्रवृन्द पूज्य हो।
त्रिलोक में महान् हो सभासरोज सूर्य हो।।
मुनीन्द्र पार्श्वनाथ मंत्र ध्यावते सुध्यान में।
जजूँ सदैव मैं यहाँ लहूँ निजात्म धाम मैं।।626।।

ॐ ह्रीं नाभिजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजात' हो जिनेश! जन्मशून्य आप सिद्ध हो।
मुझे प्रभो! भवाब्धि से निकालिये समर्थ हो।।मुनीन्द्र.।।627।।

ॐ ह्रीं अजाताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'सुव्रत' आप श्रेष्ठ संयमादि धारियो।
महाव्रतादि पूर्ण कीजिये मुझे सुतारियो।।मुनीन्द्र.।।628।।

ॐ ह्रीं सुव्रताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'मनू' द्विभेद धर्म भूमि को सुथापिया।
सुतीर्थनाथ जन्म लेय तीर्थ चक्र धारिया।।मुनीन्द्र.।।629।।

ॐ ह्रीं मनवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'उत्तमा' त्रिलोक में महान श्रेष्ठ हो।
मुनीशवृन्द पूज्य हो असंख्य जीव ज्येष्ठ हो।।मुनीन्द्र.।।630।।

ॐ ह्रीं उत्तमाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभेद्य' हो किन्हीं जनों से छेद भेद योग्य ना।
समस्त जन्म मृत्यु रोग नाश के सुखी घना।।मुनीन्द्र.।।631।।

ॐ ह्रीं अभेद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनत्ययो' न नाश हो अनंत काल आपका।
मुझे सुखी सदा करो न अंत हो सुज्ञान का।।मुनीन्द्र.।।632।।

ॐ ह्रीं अनत्ययाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनाशवान्' भोजनादि से विहीन आप हैं।
महान तप किया प्रभो समस्त विश्वास्य हैं।।मुनीन्द्र.।।633।।

ॐ ह्रीं अनाश्वते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अधीक' उत्कृष्ट आत्मा तुम्हीं कहे।
सुपाय वास्तवीक सौख्य का अधिक तुम्हीं रहें।।मुनीन्द्र.।।634।।

ॐ ह्रीं अधिकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक के गुरु 'अधीगुरु' तुम्ही महान हो।
नमाय माथ को सदा सुआप को प्रणाम हो।।मुनीन्द्र.।।635।।

ॐ ह्रीं अधिगुरवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगी' सुवाणि आपकी अतीव शोभना कही।
अनंत दुख से निकाल मोक्ष में धरे वही।।मुनीन्द्र.।।636।।

ॐ ह्रीं सुगिरे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुमेधसा' महान् बुद्धि से सुकेवली भये।
प्रभो! अपूर्व ज्ञान दो अनंत गुण मिले भये।।मुनीन्द्र.।।637।।

ॐ ह्रीं सुमेधसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पराक्रमी समस्त कर्म नाशहेतु शूर हो।
अतेव 'विक्रमी' कहावते अपूर्व सूर्य हो।।मुनीन्द्र.।।638।।

ॐ ह्रीं विक्रमिणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक 'स्वामि' हो समस्त भव्य जीव पालते।
अनंत धाम में धरो भवाब्धि से निकालते।।मुनीन्द्र.।।639।।

ॐ ह्रीं स्वामिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुरादिधर्ष' कोई ना अनादरादि कर सके।
प्रभो! तुम्हीं समस्त भव्य बन्धु हो जगत् विषे।।
मुनीन्द्र पार्श्वनाथ मंत्र ध्यावते सुध्यान में।
जजूँ सदैव मैं यहाँ लहूँ निजात्म धाम मैं।।640।।

ॐ ह्रीं दुराधर्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'निरुत्सुको' तुम्हीं समस्त आश शून्य हो।
सुमुक्तिवल्लभा विषे हि औत्सुक्य पूर्ण हो।।मुनीन्द्र.।।641।।

ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विशिष्ट' आप ही विशेष रूप श्रेष्ठ विश्व में।
गणीन्द्र शीश नावते न फेर विश्व में भ्रमें।।मुनीन्द्र.।।642।।

ॐ ह्रीं विशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'शिष्टभुक्' तुम्हीं सुसाधुलोक पालते।
अनिष्ट को निकाल सत्य ज्ञान आप धारते।।मुनीन्द्र.।।643।।

ॐ ह्रीं शिष्टभुजे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'शिष्ट' श्रेष्ठ आचरण तुम्हीं धरा यहाँ।
अशेष मोहशत्रु नाश के अनष्टि को दहा।।मुनीन्द्र.।।644।।

ॐ ह्रीं शिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'प्रत्ययो' प्रतीति योग्य आप एकही।
समस्त ज्ञानरूप हो पुनीत पुण्य रूप ही।।मुनीन्द्र.।।645।।

ॐ ह्रीं प्रत्ययाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरम्य 'कामनो' प्रभो! त्रिलोक चित्तहारि हो।
न आपके समान रूप इंद्र नेत्रहारि हो।।मुनीन्द्र.।।646।।

ॐ ह्रीं कामनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनघ' जिनेश! पापहीन पुण्य के निधान हो।
अनंत जीवराशि आपको नमें प्रमाण हो।।मुनीन्द्र.।।647।।

ॐ ह्रीं अनघाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'क्षेमि' सर्वक्षेम युक्त आप विश्व में।
समस्त रोग शोक दुःख मेट दो तुम्हें नमें।।मुनीन्द्र.।।648।।

ॐ ह्रीं क्षेमिणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'क्षेमंकरो' त्रिलोक क्षेमकारि हो।
दरिद्र दुःख मेट सौख्य दो सदैव भारि हो।।मुनीन्द्र.।।649।।

ॐ ह्रीं क्षेमंकराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'अक्षयो' तुम्हीं सदैव क्षय विहीन हो।
मुझे अखंडधाम दो सदा स्वयं अधीन जो।।मुनीन्द्र.।।650।।

ॐ ह्रीं अक्षयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–श्री छंद–

'क्षेमधरमपति' क्षेम करो हो, सर्व अमंगल दोष हरो हो।
पारस नाम जजूँ मन लाके, सर्व अमंगल दूर भगाके।।651।।

ॐ ह्रीं क्षेमधर्मपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'क्षमी' सुसहिष्णु कहे हो।
श्रेष्ठ क्षमा उपदेश रहे हो।।पारस.।।652।।

ॐ ह्रीं क्षमिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जिनेश! 'अग्राह्य' कहाते।
अल्प सुज्ञानी जान न पाते।।पारस.।।653।।

ॐ ह्रीं अग्राह्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञान निग्राह्य' प्रभो! जग में हो।
ज्ञान स्वसंविद से ग्रह ही हो।।पारस.।।654।।

ॐ ह्रीं ज्ञाननिग्राह्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानसुगम्य' सुध्यान करें जो।
नाथ तभी तुम जान सके वो।।पारस.।।655।।

ॐ ह्रीं ज्ञानगम्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'निरुत्तर' आप कहे हो।
सर्व जगत उत्कृष्ट भये हो।।पारस.।।656।।

ॐ ह्रीं निरुत्तराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुकृती' तुम पुण्य धरन्ता। पुण्य करें जन भक्ति करन्ता।।
पारस नाम जजूँ मन लाके, सर्व अमंगल दूर भगाके।।657।।

ॐ ह्रीं सुकृतिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धातु' तुम्हीं सब शब्द जनंता।
चिन्मय धातु तनू भगवंता।।पारस.।।658।।

ॐ ह्रीं धातवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'इज्यार्ह' कहाये।
इन्द्र मुनी गण पूज्य सुगायें।।पारस.।।659।।

ॐ ह्रीं इज्यार्हाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'सुनय' सहपेक्ष नयों से।
सत्य सुधर्म कहा अति नीके।।पारस.।।660।।

ॐ ह्रीं सुनयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीसुनिवास' तुम्हीं प्रभु माने।
सम्पति धाम तुम्हें मुनि जाने।।पारस.।।661।।

ॐ ह्रीं श्रीनिवासाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'चतुरानन' ब्रह्मा।
दीख रहे मुख चार सभा मा।।पारस.।।662।।

ॐ ह्रीं चतुराननाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुर्वक्त्र' तुमको सुर पेखें।
नाथ! समोसृति में तुम देखें।।पारस.।।663।।

ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'चतुरास्य' तुम्हें भवि वंदे।
जन्म जरामृति तीनहिं खंडे।।पारस।।664।।

ॐ ह्रीं चतुरास्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'चतुर्मुख' चौमुख धर्ता।
द्वादश गण जनता मन हर्ता।।पारस।।665।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यात्मा' प्रभु सत्य स्वरूपी।
दिव्यध्वनी मय वाक्य निरूपी।।पारस.।।666।।

ॐ ह्रीं सत्यात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यविज्ञान' प्रभो! तुम ही हो।
केवलज्ञान लिये चिन्मय हो।।पारस।।667।।

ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुवाक्' प्रभो सत भंगी।
वाक्यसुधा तुम गंगतरंगी।।पारस.।।668।।

ॐ ह्रीं सत्यवाचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुशासन' नाथ तुम्हारा।
भव्य जनों हित एक सहारा।।पारस.।।669।।

ॐ ह्रीं सत्यशासनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्याशिष्' शुभ आशिस देते।
सर्व अमंगल भी हर लेते।।पारस.।।670।।

ॐ ह्रीं सत्याशिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुसन्धान' विभु नामा।
सत्य प्रतिज्ञ तुम्हें सुर माना।।पारस.।।671।।

ॐ ह्रीं सत्यसंधानाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्य' प्रभो! तुम सत्पथदर्शी।
भव्य जनों हित वाक्य प्रदर्शी।।पारस.।।672।।

ॐ ह्रीं सत्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यपरायण' नाथ! हितैषी।
तीन जगत के हित उपदेशी।।पारस.।।673।।

ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेयान्' प्रभु नित स्थिर हो।
नाथ! मुझे स्थिर धाम दिला दो।।पारस.।।674।।

ॐ ह्रीं स्थेयसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थवीयान्' प्रभु आप बड़े हो। सर्व गणी गण में भि बड़े हो।
पारस नाम जजूँ मन लाके, सर्व अमंगल दूर भगाके।।675।।
ॐ ह्रीं स्थवीयसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–तोटक छंद–

प्रभु 'नेदिययान' निज भक्तन के।
अति सन्निधि हो मन में बसते।।
प्रभु पार्श्व सुमंत्र जपूँ नित ही।
भव वारिध पार करो अब ही।।676।।
ॐ ह्रीं नेदीयसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'दवीयान्' पाप हना।
निज आत्म सुधारस पीय घना।।प्रभु.।।677।।
ॐ ह्रीं दवीयसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'दूरसुदर्शन' हो तुम ही।
अणुरूप नहीं मुनि के मन ही।।प्रभु.।।678।।
ॐ ह्रीं दूरसुदर्शनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नाथ! 'अणोरणियान्' कह्यो।
अति सूक्ष्म योगि सुगोचर हो।।प्रभु.।।679।।
ॐ ह्रीं अणोरणीयसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनणू' तुम ज्ञान शरीर कहे।
अणु-पुद्गल नाहिं महान् कहें।।प्रभु.।।680।।
ॐ ह्रीं अनणवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुरुराद्यगरीयसा' के जग में।
गुरुओं मधि श्रेष्ठ गुरु प्रभु हैं।।प्रभु.।।681।।
ॐ ह्रीं गरीयसामाद्यगुरवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदयोग' सदा तुम योग धरा।
सब योनि सदा तुम ध्यान धरा।।प्रभु.।।682।।
ॐ ह्रीं सदायोगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदभोग' सुपुष्प सदा बरसें।
सुर दुंदुभि आदि करें हरसें।।प्रभु.।।683।।
ॐ ह्रीं सदाभोगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सद्तृप्त' सदाप्रभु तृप्त रहो।
क्षुध प्यास नहीं प्रभु तुष्ट रहो।।प्रभु.।।684।।
ॐ ह्रीं सदातृप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सदाशिव' हो जग में।
नहिं कर्म कलंक छुआ तुमने।।प्रभु.।।685।।
ॐ ह्रीं सदाशिवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सदागति' ज्ञानमयी।
गति पंचम मोक्ष लिया तुमही।।प्रभु.।।686।।
ॐ ह्रीं सदागतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदसौख्य' सदा प्रभु सौख्य लह्यो।
सब सात असात सुखादि हर्यो।।प्रभु.।।687।।
ॐ ह्रीं सदासौख्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सदाविद्य' हो तुम जग में।
शुचि केवलज्ञान धरो निज में।।प्रभु.।।688।।
ॐ ह्रीं सदाविद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ! 'सदोदय' आप रहें।
नित उदितरूप रवि आप कहें।।प्रभु.।।689।।
ॐ ह्रीं सदोदयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वनि उत्तमनाथ! 'सुघोष' तुम्हीं।
इक योजन जीव सुनें सबहीं।।।प्रभु.।।690।।
ॐ ह्रीं सुघोषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुमुख' सुंदर मुख हो।
विकसंत कमल मंदस्मित हो।।प्रभु.।।691।।
ॐ ह्रीं सुमुखाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौम्य' तुम्हीं शशि सुंदर हो।
तुम गावत गीत पुरंदर हो।।
प्रभु पार्श्व सुमंत्र जपूँ नित ही।
भव वारिध पार करो अब ही।।692।।

ॐ ह्रीं सौम्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुखदं' सब जीव शुभंकर हो।
सुखदायि जिनेश्वर आपहि हो।।प्रभु.।।693।।

ॐ ह्रीं सुखदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुहितं' प्रभु सर्वहितंकर हो।
मुझको निज दास करो शिव हो।।प्रभु.।।694।।

ॐ ह्रीं सुहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुहृत्' सबके मितु हो।
मुझ चित्त बसों सब ही वश हों।।प्रभु.।।695।।

ॐ ह्रीं सुहृदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुगुप्त' सुरक्षित हो।
तुम भक्त सभी अरि रक्षित हों।।प्रभु.।।696।।

ॐ ह्रीं सुगुप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गुप्तिभृता' त्रयगुप्ति धरी।
तुम भक्ति किया मुझ धन्य घरी।।प्रभु.।।697।।

ॐ ह्रीं गुप्तिभृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गोप्ता' रक्षक हो जग के।
मुझ पे अब नाथ कृपा कर दे।।प्रभु.।।698।।

ॐ ह्रीं गोप्त्रे सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकअध्यक्ष' त्रिलोकपती।
मुझ व्याधि उपाधि हरो जलदी।।प्रभु.।।699।।

ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'दमेश्वर' हो नित ही।
सब इंद्रिय जीत अतीन्द्रिय ही।।तुम.।।700।।

ॐ ह्रीं दमेश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

प्रभु असंस्कृतादि से लेकर, सौ नाम पढ़े जो भव्य सदा।
सब भूत पिशाच उपद्रव भी, नश जांय सभी नशती विपदा।।
ज्वर कुष्ठ भगंदर कामल आदिक, रोग सभी नशते क्षण में।
पूर्णार्घ चढ़ाकर वंदत हूँ प्रभु, पार्श्व बसो नित मुझ मन में।।7।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामसमन्वित–श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(8) अष्टम शतक

–दोहा–

'बृहद्वृहस्पति' पार्श्व जिन, सुरगुरु के गुरु आप।
काव्य कला प्रतिभा मिले, नमूँ नमूँ दिनरात।।701।।

ॐ ह्रीं बृहद्वृहस्पतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वाग्मी' द्वादश गण सुनें, तुम प्रशस्त वच नित्य।
पूजत वचसिद्धी मिले, ध्याते हो सुख नित्य।।702।।

ॐ ह्रीं वाग्मिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वाचस्पति' भाषा सभी, धरें पार्श्व भगवान।
त्रिभुवन गुरुओं के गुरु, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।703।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'उदारधी' जगत में, तुम सम नहिं दातार।
ज्ञानदान देकर मुझे, करो जगत से पार।।704।।

ॐ ह्रीं उदारधिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मनीषी' बुद्धि में, सर्वोत्तम अभिनंद्य।
सद्बुद्धि शिवहेतु ही, दे दीजे जगवंद्य।।705।।

ॐ ह्रीं मनीषिणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धिषण' आप ही जगत में, केवलज्ञानी सिद्ध।
स्वपर भेद विज्ञान दो, ध्याकर बनूँ समृद्ध।।706।।
ॐ ह्रीं धिषणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धीमान' त्रिलोक में, पंचमज्ञान समेत।
स्वात्मज्ञान संपत्ति दो, नमूँ आप भव सेतु।।707।।
ॐ ह्रीं धीमते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शेमुषीश' त्रिभुवनपती, ज्ञान अनंत अपार।
ज्ञानज्योति देकर प्रभो! करिये मुझ उद्धार।।708।।
ॐ ह्रीं शेमुषीशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'गिरांपति' मान्य हो, दिव्यध्वनी के ईश।
सत्यमहाव्रत पूरिये, नमूँ नमूँ नत शीश।।709।।
ॐ ह्रीं गिरांपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकरूप' शिव बुद्ध तुम, ब्रह्मा विष्णु जिनेश।
नमत मिले समरस सुधा, परमानंद हमेश।।710।।
ॐ ह्रीं नैकरूपाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नयोत्तुंग' नय सप्तविध, नानाविध स्याद्वाद।
अनेकांत मत को कहा, नमत साम्यरस स्वाद।।711।।
ॐ ह्रीं नयोत्तुंगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकात्मा' आनन्त्य गुण, धरें आप अविरुद्ध।
नमत मिले गुण संपदा, कर्मास्रव हों रुद्ध।।712।।
ॐ ह्रीं नैकात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकधर्मकृत' मुनिधरम, श्रावक धर्म प्रकाश।
भवसमुद्र से तारते, भविजन कमल विकास।।713।।
ॐ ह्रीं नैकधर्मकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अविज्ञेय' सामान्य जन तुमको जाने नाहिं।
साधु ध्यान से जानते, बसो मेरे मन माहिं।।714।।
ॐ ह्रीं अविज्ञेयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतर्क्यात्मा' तुम्हीं, नहिं तर्कादिक गम्य।
मुझे अंतरात्मा करो, दोष करो सब क्षम्य।।715।।
ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कृतज्ञ' गुरु भक्त, बन सोलह कारण भाय।
स्वयं बुद्ध तीर्थेश हुये, नमूँ आपके पांय।।716।।
ॐ ह्रीं कृतज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतलक्षण' त्रैलोक्य में, वस्तु स्वरूप उचार।
शुभलक्षण देवो मुझे, नमूँ अनंतों बार।।717।।
ॐ ह्रीं शुभलक्षण श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानगर्भ' कैवल्य के, बीज आप भगवान।
रोग शोक दुख नाश के, पाऊँ भेद विज्ञान।।718।।
ॐ ह्रीं 'ज्ञानगर्भाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयागर्भ' त्रैलोक्य को, दिया अभय का दान।
दयादृष्टि मुझ पर करों, करो अहिंसावान।।719।।
ॐ ह्रीं दयागर्भाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रत्नगर्भ' प्रभुगर्भ से, छह महिने ही पूर्व।
रत्नवृष्टि धनपति किया, जजते सौख्य अपूर्व।।720।।
ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'प्रभास्वर' ज्ञानरवि, किया मोहतम नाश।
ज्ञान प्रभा मुझ में भरो, तुम्हीं त्रिलोक प्रकाश।।721।।
ॐ ह्रीं प्रभास्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मगर्भ' तुमको नमूँ, ज्ञानकली विकसाय।
कमलाकृति माँ गर्भ में, तुम तिष्ठे थे आय।।722।।
ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्गर्भ' तुम ज्ञान में, त्रिभुवन सब झलकंत।
मोहतिमिर मेरा नशें, नमत मिले भव अंत।।723।।
ॐ ह्रीं जगद्गर्भाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हेमगर्भ' तुम गर्भ में, पृथ्वी स्वर्णसमान।
पूजत दारिद दुख नशे, मिले नवों निधि आन।।724।।

ॐ ह्रीं हेमगर्भाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'सुदर्शन' आपका, धर्मचक्र अभिराम।
क्षायिक समकित हेतु मैं, शत शत करूँ प्रणाम।।725।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

अंतर लक्ष्मी सुगुण धन, बाह्य समवसरणादि।
इनसे 'लक्ष्मीवान' प्रभु, नमत मिले ज्ञानादि।।726।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिदशाध्यक्ष' जिनेंद्र हो, इंद्रगणों के ईश।
सिद्धिरमापति आपको, नमूँ नमाकर शीश।।727।।

ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दृढीयान्' प्रभु सिद्ध हो, पाया स्वात्म निकेत।
तुम सम व्रत में दृढ़ नहीं, नमूँ नमूँ शिवहेतु।।728।।

ॐ ह्रीं दृढीयसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन भुवन के ईश हो, 'इन' कहलाये आप।
मेरे सब अघ नाशिये, नमूँ नमूँ निष्पाप।।729।।

ॐ ह्रीं इनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपद देने में प्रभू, 'ईशित' जग में ख्यात।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, बनूं आत्मसुख सात।।730।।

ॐ ह्रीं ईशित्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रों का भी मन हरा, अतः 'मनोहर' सिद्ध।
हरि हर ब्रह्मा भी नमें, जजत करूँ अघविद्ध।।731।।

ॐ ह्रीं मनोहराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मनोज्ञांग' प्रभु रूप को, देखत इन्द्र अतृप्त।
नेत्र हजारों भी करे, जजत आत्मसुख तृप्त।।732।।

ॐ ह्रीं मनोज्ञांगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में आप सम, धीर नहीं हैं अन्य।
'धीर' पार्श्व तुमको नमूँ, हो नर जीवन धन्य।।733।।

ॐ ह्रीं धीराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गंभीर शासन' कहे, शरणागत प्रतिपाल।
जब तक जिनपद ना मिले, नमूँ नमूँ नत भाल।।734।।

ॐ ह्रीं गंभीरशासनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धूर्मयूप' वरधर्मप्रद, निर्भय पद दातार।
अभदान दीजे मुझे, नमूँ नमूँ शत बार।।735।।

ॐ ह्रीं धर्मयूपाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयायाग' कीजे दया, भवसागर से तार।
नमूँ नमूँ नित भक्ति से, शिवलक्ष्मी भरतार।।736।।

ॐ ह्रीं दयायागाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मनेमि' प्रभु आपही, धर्मधुरा धारंत।
नमूँ कोटि श्रद्धा लिये, करो भवोदधि अंत।।737।।

ॐ ह्रीं धर्मनेमये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों के पति आपही, कहें 'मुनीश्वर' सिद्ध।
नमूँ भक्ति से नित्य ही, पाऊँ सौख्य समृद्धि।।738।।

ॐ ह्रीं मुनीश्वराय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मचक्र आयुध' तुम्हीं, किया मृत्यु अरि नाश।
नमूँ भक्ति से पार्श्व जिन! दीजे ज्ञान प्रकाश।।739।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देव' स्वर्ग अपवर्ग को देने में प्रभु आप।
निजपद मुझको दीजिये, मिटे जगत संताप।।740।।

ॐ ह्रीं देवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धिरमा पति 'कर्महा', किया कर्मरिपु नष्ट।
दुष्टकर्म मेरे हरो, जजत मिले सब इष्ट।।741।।
ॐ ह्रीं कर्मघ्ने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'धर्मघोषण' तुम्हीं, अतिशय सुख दातार।
धर्मामृत दीजे मुझे, नमूँ अनंतों बार।।742।।
ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमोघवाक्' मुनि कहें, वचनसिद्धि भगवंत।
दिव्यध्वनी के नाथ हो, नमत करूँ दुख अंत।।743।।
ॐ ह्रीं अमोघवाचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमोघाज्ञ' प्रभु आपकी, आज्ञा पालें इन्द्र।
जो तुम आज्ञा पालते, बने जगत के इंद्र।।744।।
ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव मल धोयके, 'निर्मल' शिवपद प्राप्त।
मेरे अघमल दूर हों, नमत हरूँ भवताप।।745।।
ॐ ह्रीं निर्मलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमोघशासन' प्रभो, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय।
शासन नादि अनंत तुम, सब जन को सुखदाय।।746।।
ॐ ह्रीं अमोघशासनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुरूप' तुम रूप है, अनुपम त्रिभुवन मध्य।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, पाऊँ निजसुख नव्य।।747।।
ॐ ह्रीं सुरूपाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन को प्रिय हे प्रभो! 'सुभग' गणाधिप मान्य।
मैं पूजूँ रुचि धारके, मिले स्वात्म सुख साम्य।।748।।
ॐ ह्रीं सुभगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग सर्वसाम्राज्य को, किया विजन में ध्यान।
'त्यागी' पाया सिद्धपद, नमूँ चित्त धर ध्यान।।749।।
ॐ ह्रीं त्यागिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व पर ज्ञान से शिवभये, 'ज्ञाता' जगत प्रसिद्ध।
भेदज्ञान के हेतु मैं, नमूँ मिले सुख सिद्ध।।750।।
ॐ ह्रीं ज्ञात्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–इन्द्रवज्रा–

स्वामी 'समाहित' सुसमाधि ध्यानी।
प्राणी समाधान लहें तुम्हीं से।।
पूजूँ सदा पार्श्व जिनेन्द्र वंदूँ।
मोहारि शत्रू क्षण में नशेगा।।751।।
ॐ ह्रीं समाहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'सुस्थित' सुख से निवासा।
मुक्तीरमा आप स्वयं वरे हैं।।पूजूँ.।।752।।
ॐ ह्रीं सुस्थिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरोग्य आत्मा प्रभु ' स्वास्थ्यभाक्' हो।
संसार व्याधी नहिं पूर्णस्वस्था।।पूजूँ.।।753।।
ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाजे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'स्वस्थ' स्वामी भवरोग नाहीं।
आत्मस्थ हो सर्वविकार शून्या।।पूजूँ.।।754।।
ॐ ह्रीं स्वस्थाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'नीरजस्को' नहिं कर्मधूली।
मेरे प्रभो! कर्म समूल नाशो।।पूजूँ.।।755।।
ॐ ह्रीं नीरजस्काय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'निरुद्भव' जग में कहाते।
संपूर्ण ही उत्सव इंद्र कीने।।पूजूँ.।।756।।
ॐ ह्रीं निरुद्भवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम्हीं कर्म 'अलेप' मानें।
मेरे सभी लेप हटाय दीजे।।पूजूँ.।।757।।
ॐ ह्रीं अलेपाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निष्कलंकात्मन्' इन्द्र पूजें।
मैं भी सदा शीश नमाय वंदूँ।।
पूजूँ सदा पार्श्व जिनेन्द्र वंदूँ।
मोहारि शत्रू क्षण में नशेगा।।758।।

ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वीतरागी' गतराग द्वेषा।
रागादि मेरे मन से हटा दो।।पूजूँ.।।759।।

ॐ ह्रीं वीतरागाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'गतस्पृह' तुम ही यहाँ पे।
इच्छा निवारी जग के गुरु हो।।पूजूँ.।।760।।

ॐ ह्रीं गतस्पृहाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सु 'वश्येन्द्रिय' आप ही हो।
पाँचों हि इन्द्री वश में किया था।।पूजूँ.।।761।।

ॐ ह्रीं वश्येन्द्रियाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानें 'विमुक्तात्मन्' आप ही हैं।
कर्मारि बन्धन तुम काट डाले।।पूजूँ.।।762।।

ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'निःसपत्ना' नहिं शत्रु कोई।
संपूर्ण प्राणी तुम मित्र मानें।।पूजूँ.।।763।।

ॐ ह्रीं निःसपत्नाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीता स्व इन्द्रीय 'जितेन्द्रियों' हो।
जीतूं स्व इन्द्री प्रभु शक्ति देव।।पूजूँ.।।764।।

ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण शांतीश 'प्रशांत' माने।
वंदूँ तुम्हें शांति मिले मुझे भी।।पूजूँ।।765।।

ॐ ह्रीं प्रशांताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आनन्तधामर्षि' ऋषी गणों में।
तेजस्विता आप अनंत धारो।।पूजूँ.।।766।।

ॐ ह्रीं अनंतधामर्षये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी यहाँ 'मंगल' आप ही हैं।
नाशो अमंगल भवि प्राणियों के।।पूजूँ.।।767।।

ॐ ह्रीं मंगलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापारि नाशा 'मलहा' कहाये।
सम्पूर्ण धोये मल कर्म जैसे।।पूजूँ.।।768।।

ॐ ह्रीं मलघ्ने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'अनघ' पाप निमूल नाशा।
कीजे सभी पाप विनाश मेरा।।पूजूँ.।।769।।

ॐ ह्रीं अनघाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हूये 'अनीदृक्' नहिं आप जैसा।
इन्द्रादि वन्दे रुचि से तुम्हें ही।।पूजूँ.।।770।।

ॐ ह्रीं अनीदृशे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'उपमाभूत' इन्द्र भी तो।
दें आप की तो उपमा तुम्हीं से।।पूजूँ.।।771।।

ॐ ह्रीं उपमाभूताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो भव्य भाग्योदय हेतु स्वामी।
'दिष्टी' कहाते जग में इसी से ।।पूजूँ.।।772।।

ॐ ह्रीं दिष्टये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'देव' प्राणी शुभ भाग्य होते।
वंदूँ तुम्हें दैव समस्त नाशूँ।।पूजूँ.।।773।।

ॐ ह्रीं दैवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्यज्ञानी नभ में विहारी।
होते 'अगोचर' नहिं सर्व जानें।।पूजूँ.।।774।।

ॐ ह्रीं अगोचराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपादि से शून्य 'अमूर्त' स्वामी।
आत्मा अमूर्तीक मिले मुझे भी।।
पूजूँ सदा पार्श्व जिनेन्द्र वंदूँ।
मोहारिशत्रू क्षण में नशेगा।।775।।

ॐ ह्रीं अमूर्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सुखमा छंद–

'मूर्तीमन्' की पूजा करिये, नाहीं मन में शंका धरिये।
पार्श्व जिनेश्वर पूजूँ नित ही, व्याधी तन से भागे झट ही।।776।।

ॐ ह्रीं मूर्तिमते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एक' तुम्हें ही साधू कहते।
दूजा नहिं कोई भी तुमसे।।पार्श्व.।।777।।

ॐ ह्रीं एकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानागुण की पूर्ती तुम में।
स्वामी तुम ही 'नैक' जगत में।।पार्श्व.।।778।।

ॐ ह्रीं नैकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'नानैकतत्त्वदृक्' तुम ही।
आत्मा तज ना देखे कुछ ही।।पार्श्व.।।779।।

ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृशे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अध्यातमगम्या' हो प्रभु जी।
आत्म ग्रंथ से जाने मुनि जी।।पार्श्व.।।780।।

ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माने 'अगम्यात्मा' तुम हो।
मिथ्यादृश ना जाने तुम को।।पार्श्व.।।781।।

ॐ ह्रीं अगम्यात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'योगविद्' की जो शरणे।
मुक्ती तिय को निश्चित परणे।।पार्श्व.।।782।।

ॐ ह्रीं योगविदे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'योगिवंदित' हो जग में।
योगी जन ध्याते भी मन में।।पार्श्व.।।783।।

ॐ ह्रीं योगिवंदिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वत्रग' व्यापा त्रै जग को।
सो ही ज्ञान अपेक्षा समझो।।पार्श्व.।।784।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाभावी' हो जग में।
तिष्ठो नित ना नाश स्वपन में।।पार्श्व.।।785।।

ॐ ह्रीं सदाभाविने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'त्रिकालविषयार्थ' सुदृक् ही।
त्रैकालिक जाना सब कुछ ही ।।पार्श्व.।।786।।

ॐ ह्रीं त्रिकालविषयार्थदृशे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शंकर' भी भव्यन सुख दो।
नाशो मुझ दोषादी दुख को।।पार्श्व.।।787।।

ॐ ह्रीं शंकराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शंवद' शं सौख्यंकर ही।
तीनों जग में वंदे मुनि भी।।पार्श्व.।।788।।

ॐ ह्रीं शंवदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! चित्त अश्व को जीता।
'दांत' कहाये धर्म समेता।।पार्श्व.।।789।।

ॐ ह्रीं दांताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! दमी इंद्रियाँ दमते।
पूरी मन की इच्छा करते।।पार्श्व.।।790।।

ॐ ह्रीं दमिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' मानें तुमही।
ध्याते तुम को मृत्यू नश ही।।पार्श्व.।।791।।

ॐ ह्रीं क्षान्तिपरायणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'अधिप' बखाने जग में। इंद्रादिक पूजें आनंद में।।
पार्श्व जिनेश्वर पूजूँ नित ही, व्याधी तन से भागे झट ही।।792।।

ॐ ह्रीं अधिपाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'परमानंद' तृपत हो।
आत्मा मुझ आनंद मगन हो।।पार्श्व.।।793।।

ॐ ह्रीं परमानंदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो प्रभु! 'परात्मज्ञ' अतुल ही।
जाना पर को आत्मा निज भी।।पार्श्व.।।794।।

ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप 'परात्पर' भी जग में।
श्रेष्ठों मधि श्रेष्ठाधिप सब में।।पार्श्व.।।795।।

ॐ ह्रीं परात्पराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'त्रिजगद्वल्लभ' तुम हो।
तीनों जग में मनभावन हो।।पार्श्व.।।796।।

ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम 'अभ्यर्च्य' सुरन से।
सौ इंद्रन से साधू गण से।।पार्श्व.।।797।।

ॐ ह्रीं अभ्यर्च्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'त्रिजगन्मंगलोदय' हो।
तीनों जग में मंगल कर हो।।पार्श्व.।।798।।

ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्री' तुम हो।
सौ इंद्रन से पूज्य चरण हो।।पार्श्व.।।799।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रीलोकाग्रशिखामणि' जिन हो।
लोक शिखर के चूड़ामणि हो।।पार्श्व.।।800।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामणये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

वृहद्वृहस्पति आदि नाम सौ, भक्ति भाव से नित मैं पूजूँ।
सर्व अमंगल दोष नशाकर, आधि व्याधि संकट से छूटूँ।।
भूत प्रेत डाकिनि शाकिनि भी, तुम भक्तों से दूर भगे हैं।
नित नव मंगल संपति संतति यश भाग्योदय श्रेष्ठ जगे हैं।।8।।

ॐ ह्रीं वृहद्वृहस्पत्यादिशतनामसमन्वित–श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

(9) नवम शतक

–अनुष्टुप् छंद–

स्वामी 'त्रिकालदर्शी' हो, सभी पदार्थ दिखते।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।801।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'लोकेश' माने हो, तीन लोक प्रभु कहे।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।802।।

ॐ ह्रीं लोकेशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकधाता' तुम्हीं माने, तीनों जगत् पोषते।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।803।।

ॐ ह्रीं लोकधात्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'दृढ़व्रत' व्रतों में, पूर्ण स्थैर्य धारते।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।804।।

ॐ ह्रीं दृढव्रताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकातिग' स्वामिन्! सभी जग में श्रेष्ठ हो।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।805।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा के योग्य हो स्वामिन्! 'पूज्य' माने सभी सदा।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।806।।

ॐ ह्रीं पूज्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभीष्ट में पहुँचाते, 'सर्वलोकैकसारथी'।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।807।।
ॐ ह्रीं सर्वलोकैकसारथये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राचीन सबमें ही हो, माने 'पुराण' आपको।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।808।।
ॐ ह्रीं पुराणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणों को श्रेष्ठ आत्मा के, पाया 'पुरुष' आप हैं।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।809।।
ॐ ह्रीं पुरुषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वप्रथम होने से 'पूर्व' माने तुम्हीं प्रभो!।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।810।।
ॐ ह्रीं पूर्वाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग पूर्वादि विस्तारे, 'कृतपूर्वांग-विस्तरः'।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।811।।
ॐ ह्रीं कृतपूर्वांगविस्तराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों में मुख्य होने से, 'आदिदेव' तुम्हीं कहे।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।812।।
ॐ ह्रीं आदिदेवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणाद्य' प्रभो! माने, प्राचीनों में सुआदि हो।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।813।।
ॐ ह्रीं पुराणाद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरुदेव' तुम्हीं माने, श्रेष्ठ देव महान हो।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।814।।
ॐ ह्रीं पुरुदेवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के देव होने से, तुम्हीं हो 'अधिदेवता'।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।815।।
ॐ ह्रीं अधिदेवतायै श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगमुख्य' युगादी के, माने प्रधान आप हैं।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।816।।
ॐ ह्रीं युगमुख्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगज्येष्ठ' कहे स्वामी, युग में सर्व श्रेष्ठ हो।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।817।।
ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगादी में उपदेशा, 'युगादिस्थितिदेशकः'।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।818।।
ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्याणवर्ण' कांती से, सुवर्ण सम हो तुम्हीं।।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।819।।
ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'कल्याण' भव्यों के, हितकर्ता प्रसिद्ध हो।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।820।।
ॐ ह्रीं कल्याणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्य' नीरोग होने से, तत्पर मुक्ति हेतु हो।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।821।।
ॐ ह्रीं कल्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण हितकारी हैं, अतः 'कल्याणलक्षणः'।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।822।।
ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्याणप्रकृती' स्वामी, हो कल्याण स्वभाव ही।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।823।।
ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णवत् प्रभु दीप्तात्मा, 'दीप्रकल्याणआतमा'।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।824।।
ॐ ह्रीं दीप्रकल्याणात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विकल्मष' तुम्हीं स्वामी, कालिमाकर्म शून्य हो।
पार्श्वनाथ जजूँ तुमको, आत्म सौख्य सुधा मिले।।825।।
ॐ ह्रीं विकल्मषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चंपकमाला छंद–

कर्म कलंकादी निरमुक्ता, हो 'विकलंका' कर्म हरो मे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।826।।
ॐ ह्रीं विकलंकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह कला से हीन रहे हो ,नाथ! 'कलातीते' जग में हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।827।।
ॐ ह्रीं कलातीताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'कलिलघ्न' तुम्हीं अघ हीना, पाप हमारे क्षालन कीजे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।828।।
ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'कलाधर' सर्व कला से, पूर्ण तुम्हीं हो सर्व गुणों से।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।829।।
ॐ ह्रीं कलाधराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवदेव' हो तीन जगत् में, नाथ! सुदेवों के अधिदेवा।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।830।।
ॐ ह्रीं देवदेवाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगन्नाथा' जगस्वामी, जन्म मरण के दुःख हरोगे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।831।।
ॐ ह्रीं जगन्नाथाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगद्बंधू' भवि बंधू, भव्यजनों के पूर्ण हितैषी।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।832।।
ॐ ह्रीं जगद्बंधवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगद्विभु' तीन भुवन में, पालक हो सामर्थ्य समेता।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।833।।
ॐ ह्रीं जगद्विभवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्' हितैषी तीन जगत में, सर्वजनों को सौख्य दिया है।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।834।।
ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप कहे 'लोकज्ञ' जगत् को, जान लिया है पूर्ण तरह से।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।835।।
ॐ ह्रीं लोकज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वग' तीनों लोक सभी में, व्याप्त हुये प्रभु ज्ञान किरण से।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।836।।
ॐ ह्रीं सर्वगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जगदग्रज' ज्येष्ठ जगत में, सर्व दुखों को दूर करोगे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।837।।
ॐ ह्रीं जगदग्रजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'चराचरगुरु' कहे हो, स्थावर त्रस के पालक भी हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।838।।
ॐ ह्रीं चराचरगुरवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गोप्य' मुनी रक्खें मन में ही, नाथ! करो रक्षा अब मेरी।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।839।।
ॐ ह्रीं गोप्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'गूढ़ात्मा' तुम आत्मा, गोचर इन्द्री के नहिं होती।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।840।।
ॐ ह्रीं गूढ़ात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गूढ़ सुगोचर' गूढ़ तुम्हीं हो, योगिजनों के गम्य तुम्हीं हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।841।।
ॐ ह्रीं गूढ़गोचराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'सद्योजात' कहे हो, तत्क्षण जन्में रूप रहे हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।842।।
ॐ ह्रीं सद्योजाताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रकाशात्मा' मुनि मानें, ज्ञान सुज्योती रूप बखानें।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।843।।
ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'ज्वलज्जलनसप्रभ' हो, रत्नप्रभा सी कांति धरे हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।844।।
ॐ ह्रीं ज्वलज्जलनसप्रभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविवत् 'आदित्यवरण' स्वामी, हो प्रभु तेजस्वी जग नामी।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।845।।
ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण छवी 'भर्माभ' कहाये, देह दिपे भास्वत् शरमाये।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।846।।
ॐ ह्रीं भर्माभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रभ' शोभे कांति तुम्हारी, सूर्य शशी क्रोड़ों लजते हैं।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।847।।
ॐ ह्रीं सुप्रभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'कनकप्रभ' स्वर्ण प्रभा सी, चमक दिखे उत्तुंग तनु हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।848।।
ॐ ह्रीं कनकप्रभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'सुवर्णवर्ण' सुर गायें, देह रत्न सी दीप्ति धराये।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।849।।
ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो! 'रुक्माभ' कहाये, स्वर्ण छवी सी दीप्ति करो मे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।850।।
ॐ ह्रीं रुक्माभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

'सूर्यकोटिसमप्रभ' प्रभो, सूर्य करोड़ लजंत।
दीप्ति देह ही धारते, नमते स्वात्म दिपंत।।851।।
ॐ ह्रीं सूर्यकोटिसमप्रभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धप्रभो 'तपनीयनिभ' तपे कनक सम देह।
कर्ममैल मेरा हरो, नमूँ तुम्हें धर नेह।।852।।
ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तुंग' हस्त नव देह तुम, उच्च शरीर धरंत।
मरकत मणिसम कांति है, नमूँ पार्श्व भगवंत।।853।।
ॐ ह्रीं तुंगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उगते रविसम कांति तुम, भगवन्! 'बालार्काभ'।
मुझ आत्मा कंचन करो, होवे शिवपद लाभ।।854।।
ॐ ह्रीं बालार्काभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अनलप्रभ' अग्निसम, कर्म किया तुम भस्म।
मेरी आत्मा शुद्ध हो, करूँ कर्म मैं भस्म।।855।।
ॐ ह्रीं अनलप्रभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'संध्याभ्रबभ्रु' जजूँ, भक्ति राग से नित्य।
संध्यालाली सम छवी, जजत मिलें गुण नित्य।856।।
ॐ ह्रीं संध्याभ्रबभ्रवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा निर्मल स्वर्णसम, देह आप 'हेमाभ'।
रागादिक मल दूर हो, मिले निजातम लाभ।।857।।
ॐ ह्रीं हेमाभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तसुचामीकर प्रभा', सुवरण कांति लसंत।
मुझ आत्मा पावन करो, जजूँ पुष्प विकिरंत।।858।।
ॐ ह्रीं तप्तसुचामीकरप्रभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्टप्तकनकच्छवी' महादीप्ति दीपंत।
मेरी शुद्धात्मा करो, नमूँ भक्ति विलसंत।।859।।
ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कनत्कांचनसन्निभा', देदीप्यात्मा आप।
कैवल्यात्मा को नमूँ, मिले निजातम लाभ।।860।।
ॐ ह्रीं कनत्कांचनसन्निभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'हिरण्यवर्ण' तुम, खिला ज्ञान का सूर्य।
मुनि मनकमल खिलाइये, नमूँ तुम्हें जगसूर्य।।861।।
ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह तप से आत्म को, शुद्ध किया 'स्वर्णाभ'।
मैं भी तप को प्राप्त कर, करूँ मोक्ष का लाभ।।862।।
ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शातकुंभनिभप्रभ' प्रभो! शुद्ध निरंजन सिद्ध।
भव्यों को पावन किया, नमूँ लहूँ सब सिद्ध।।863।।
ॐ ह्रीं शातकुंभनिभप्रभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर सोने सम छवी, स्वामी तुम 'द्युम्नाभ'।
पुनर्जन्म से छूटहूँ, यही याचना नाथ।।864।।
ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ 'जातरूपाभ' को, नग्न दिगम्बर रूप।
जिनकल्पी मुनि कब बनूँ, मिले स्वात्म चिद्रूप ।।865।।
ॐ ह्रीं जातरूपाभाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तजाम्बुनदद्युति' प्रभो! किया निजातम शुद्ध।
श्रेष्ठ स्वर्णसम आतमा, जजते बने विशुद्ध।।866।।
ॐ ह्रीं तप्तजाम्बूनदद्युतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुधौतकलधौतश्री' नमूँ नमूँ नत भाल।
धोय कर्ममल आप ही, बने नाथ जगपाल।।867।।
ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप्त शरीर 'प्रदीप्त' हो, लोकशिखर राजंत।
ज्ञान ज्योति प्रगटित करो, यही चाह भगवंत।।868।।
ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हाटकद्युति' निज कांति से, भामंडल चमकंत।
भव्य वहाँ देखे सतत, सात स्व भव विलसंत।।869।।
ॐ ह्रीं हाटकद्युतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! आप 'शिष्टेष्ट' हो, जगत इष्ट आराध्य।
इष्ट वियोग अनिष्ट का, योग नष्ट हो अद्य।।870।।
ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के सब भव्य को, पोषें 'पुष्टिद' नाथ।
रत्नत्रय की पुष्टि कर कीजे मुझे सनाथ।।871।।
ॐ ह्रीं पुष्टिदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक तनु प्रभो!, 'पुष्ट' सौख्यभृत देव।
मुझ को पुष्टी तुष्टि दो, करूँ आपकी सेव।।872।।
ॐ ह्रीं पुष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपत् लोक अलोक को, जान लिया 'स्पष्ट'।
ज्ञान विमल मेरा करो, हरो व्याधि का कष्ट।।873।।
ॐ ह्रीं स्पष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'स्पष्टाक्षर' तुम्हीं, सब भाषा के ईश।
मेरे वच हितकर बनें, नमूँ तुम्हें जगदीश।।874।।
ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'क्षम' आप समर्थ हैं, किया मृत्यु का नाश।
शक्ति मुझे भी दीजिये, करूँ मोह का नाश।।875।।
ॐ ह्रीं क्षमाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–आर्या छंद–

कर्म शत्रु को मारा, इसीलिये 'शत्रुघ्न' सुरेंद्र कहें।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।876।।
ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अप्रतिघ' तुम्हीं हो, शत्रु न कोई रहा यहाँ जग में।
पार्श्वचरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।877।।
ॐ ह्रीं अप्रतिघाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमोघ' हो नित ही, स्वयं सफल हो किया सफल सबको।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।878।।
ॐ ह्रीं अमोघाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रशास्ता' तुम हो, सर्वोत्तम उपदेश दिया तुमने।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।879।।
ॐ ह्रीं प्रशास्त्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'शासिता' तुमही, रक्षा करते सदैव भक्तों की।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।880।।
ॐ ह्रीं शासित्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वभू' स्वयं जन्में हो, मात पिता बस निमित बने सच में।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।881।।
ॐ ह्रीं स्वभवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिनिष्ठ' प्रभु तुमहो, पूर्ण शांति को पाया पाप हना।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।882।।
ॐ ह्रीं शांतिनिष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'मुनिज्येष्ठ' कहाते, गणधर मुनि में बड़े तुम्हीं माने।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।883।।
ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शिवताति' जगत में, सब कल्याण परंपर को देते।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।884।।
ॐ ह्रीं शिवतातये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवप्रद' नाथ तुम्हीं हो, भविजन को सब सुख शिवसुख देते।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।885।।
ॐ ह्रीं शिवप्रदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिद' नाथ सभी को, शांति दिया है सुख भरपूर दिया।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।886।।
ॐ ह्रीं शांतिदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'शांतिकृत्' जग में, शांति करो मुझको भी शांति करो।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।887।।
ॐ ह्रीं शांतिकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'शांति' हो जगमें, त्रिभुवन में भी शांति करो भगवन् ।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।888।।
ॐ ह्रीं शांतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कांतिमान्' प्रभु मानें, सर्व कांतियुत सभामध्य तेजस्वी।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।889।।
ॐ ह्रीं कांतिमते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामितप्रद' भगवंता, भक्तों के मनरथ पूर्ण किया है।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।890।।
ॐ ह्रीं कामितप्रदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रेयोनिधि' जिनराजा, भविजन के हित तुम सब सुख के दाता।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।891।।
ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिष्ठान' तुमही हो, त्रिभुवन में दयाधर्म आधारा।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।892।।
ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतिष्ठ' हो भगवन्! परकृत बिना प्रतिष्ठा के पूजित हो।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।893।।
ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रतिष्ठित' जग में, नर सुरगण में महायशस्वी हो।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।894।।
ॐ ह्रीं प्रतिष्ठिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुस्थिर' त्रिभुवन में, अतिशय थिरता मिली तुम्हें निज में।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।895।।
ॐ ह्रीं सुस्थिराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! तुम्हीं 'स्थावर' हो, समवसरण में गमन रहित राजें।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।896।।
ॐ ह्रीं स्थावराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'स्थाणु' कहाये, अचल विस्तृत कहें सुरासुर भी।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।897।।
ॐ ह्रीं स्थाणवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रथीयान्' प्रभु मानें, अतिशय विस्तृत कहें सुरासुर भी।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।898।।
ॐ ह्रीं प्रथीयसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'प्रथित' तुम्हीं हो, त्रिभुवन में भी प्रसिद्ध अतिशायी।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।899।।
ॐ ह्रीं प्रथिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पृथु' ज्ञानादि गुणों से, गणि मुनिगण में महान हो प्रभुजी।
पार्श्व चरण मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।900।।
ॐ ह्रीं पृथवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

प्रभु त्रिकालदर्शी से लेकर, नाम शतक अतिशायी हैं।
गणधर मुनिगण चक्रवर्ति भी नाम जपें सुखदायी हैं।।

सुरपति खगपति पूजन करते, वंदन कर शिर नाते हैं।
हम भी पूजें अर्घ्य चढ़ाकर, निज समकित गुण पाते हैं।।9।।
ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामसमन्वित–श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

(10) दशम शतक

–शालिनी छंद–

'दिग्वासा' हो वस्त्र दिश् ही तुम्हारे।
ऐसी मुद्रा हो कभी नाथ मेरी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ पार्श्वनाथं।
दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।901।।
ॐ ह्रीं दिग्वाससे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सुन्दर 'वातरशना' तुम्हीं हो।
धारी वायू करधनी है कटी में।।श्रद्धा.।।902।।
ॐ ह्रीं वातरशनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'निर्ग्रंथेश' हो बाह्य अंतः।
चौबीसों ही ग्रन्थ में मुक्त मानें।।श्रद्धा.।।903।।
ॐ ह्रीं निर्ग्रंथाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी भूमी पे 'दिगम्बर' तुम्हीं हो।
धारा अम्बर दिक्मयी शील पूरे।।श्रद्धा.।।904।।
ॐ ह्रीं दिगम्बराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्किंचन' हो नाथ सर्वस्व त्यागी।
आत्मानंते सद्गुणों से भरी है।।श्रद्धा.।।905।।
ॐ ह्रीं निष्किंचनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा त्यागी हो 'निराशंस' स्वामी।
आशा मेरी पूरिये सिद्धि पाऊँ।।श्रद्धा.।।906।।
ॐ ह्रीं निराशंसाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी ज्ञान ही नेत्र पाया।
स्वामी मेरे 'ज्ञानचक्षू' तुम्हीं हो।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ पार्श्वनाथं।
दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।907।।

ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशा मोहारी 'अमोमुह' कहाये।
स्वामी मेरे मोह रागादि नाशो।।श्रद्धा.।।908।।

ॐ ह्रीं अमोमुहाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोराशी' तेज के पुंज स्वामी।
चंदा से भी सौम्य शीतल भये हो।।श्रद्धा.।।909।।

ॐ ह्रीं तेजोराशये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंते ओजस्वी 'अनंतौज' स्वामी।
मेरी शक्ति को बढ़ा दो सभी ही।।श्रद्धा.।।910।।

ॐ ह्रीं अनंतौजसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'ज्ञानाब्धी' ज्ञान के सिंधु स्वामी।
स्वामी मेरे ज्ञान को पूर्ण कीजे।।श्रद्धा.।।911।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलों से भृत 'शीलसागर' तुम्हीं हो।
अठरा साहस्र शील को पूरिये भी।।श्रद्धा.।।912।।

ॐ ह्रीं शीलसागराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोमय' हो नाथ! तेजः स्वरूपी।
आत्मा तेजोरूप मेरी करो भी।।श्रद्धा.।।913।।

ॐ ह्रीं तेजोमयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितज्योती' आप ज्योति अनंती।
मेरी आत्मा ज्योति से पूर दीजे।।श्रद्धा.।।914।।

ॐ ह्रीं अमितज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिर्मूर्ती' ज्योतिमय देह धारा।
मेरे घट में ज्ञान ज्योति भरीजे।।श्रद्धा.।।915।।

ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहारी हन के 'तमोपह' तुम्हीं हो।
मेरे चित्त का सर्व अज्ञान नाशो।।श्रद्धा.।।916।।

ॐ ह्रीं तमोपहाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल 'जगच्चूड़ामणी' आप ही हो।
तीनों लोकों के शिखारत्न स्वामी।।श्रद्धा.।।917।।

ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देदीप्यात्मा 'दीप्त' स्वामी तुम्हीं हो।
मेरी आत्मा दीप्त कीजे गुणों से।।श्रद्धा.।।918।।

ॐ ह्रीं दीप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंवान्' स्वामी सौख्य शांती तुम्हीं में।
मेरी आत्मा सौख्य से पूर्ण कीजे।।श्रद्धा.।।919।।

ॐ ह्रीं शंवते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी मेरे 'विघ्नवीनायका' हो।
मेरे विघ्नों को हरो नाथ! जल्दी।।श्रद्धा.।।920।।

ॐ ह्रीं विघ्नविनायकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों में 'कलिघ्ना' तुम्हीं हो।
मेरे कलिमल नाश के सौख्य दीजे।।श्रद्धा.।।921।।

ॐ ह्रीं कलिघ्नाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे स्वामी 'कर्मशत्रुघ्न' ही हो।
दुष्कर्मों को नष्ट कीजे प्रभू जी।।श्रद्धा.।।922।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'लोकालोक प्रकाशक' जिनेशा।
देखा तीनों लोक अलोक भी तो।।श्रद्धा.।।923।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जागे आत्मा में 'अनिद्रालु' स्वामी।
मेरी आत्म मोह निद्रा तजे भी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ पार्श्वनाथं।
दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।924।।

ॐ ह्रीं अनिद्रालवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलस नाशा हो 'अतन्द्रालु' स्वामी।
मेरी आत्मा ज्ञान से स्वस्थ होवे।श्रद्धा.।।925।।

ॐ ह्रीं अतन्द्रालवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–लोलतरंग छंद–

जाग्रत संतत 'जागरूक' हो।
मोह कि नींद हरो तुम ध्याऊँ।।
पार्श्व जिनेंद्र जपूँ मन लाके।
आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।926।।

ॐ ह्रीं जागरूकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रमामय' ज्ञानमयी हो।
ज्ञान गुणाधिक हो मुझ आत्मा।।पार्श्व.।।927।।

ॐ ह्रीं प्रमामयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! 'लक्ष्मीपति' जग में हो।
नंत चतुष्टय श्रीपति जिन हो।।पार्श्व.।।928।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगज्ज्योती' कहलाये।
ज्योति भरो तम को हर लीजे।।पार्श्व.।।929।।

ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म दयापति 'धर्मराज' हो।
नाथ हृदे मुझ धर्म विराजे।।पार्श्व.।।930।।

ॐ ह्रीं धर्मराजाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रजाहित' सर्व प्रज्ञा की।
पालन रीति नृपाल सिखायी।।पार्श्व.।।931।।

ॐ ह्रीं प्रजाहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'मुमुक्षु' कहें मुनि ज्ञानी।
इच्छुक कर्म अरी सब छूटें।।पार्श्व.।।932।।

ॐ ह्रीं मुमुक्षवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बंधमोक्षज्ञा' हो तुम स्वामी।
जानत बंध रु मोक्ष विधी को।।पार्श्व.।।933।।

ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जिताक्ष' जिता पण इंद्री।
जीत सकें विषयों को हम भी।।पार्श्व.।।934।।

ॐ ह्रीं जिताक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जितमन्मथ' काम विजेता।
काम अरी मुझ मार भगावो।।पार्श्व.।।935।।

ॐ ह्रीं जितमन्मथाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रशांतरसशैलुष' हो।
किया प्रदर्शन शांतिरसों का।।पार्श्व.।।936।।

ॐ ह्रीं प्रशांतरसशैलूषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव्यनपेटकनायक' मानें।
भव्य समूह कहें तुम स्वामी।।पार्श्व.।।937।।

ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म प्रधान कहा तीर्थंकर।
'मूलसुकर्ता' आप बखाने।।पार्श्व.।।938।।

ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पदारथ पूर्ण प्रकाशा।
नाथ! 'अखिलज्योती' सुर गाते।।पार्श्व.।।939।।

ॐ ह्रीं अखिलज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'मलघ्न' सभी मल हाने।
सर्व अघों मन नाश करो मे।।
पार्श्व जिनेंद्र जपूँ मन लाके।
आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।940।।

ॐ ह्रीं मलघ्नाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मूलसुकारण' मुक्ति सुपथ के।
नाथ! मुझे शिवमार्ग दिखा दो।।पार्श्व.।।941।।

ॐ ह्रीं मूलकारणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आप्त' यथारथ देव तुम्हीं हो।
नाथ! तपोनिधि दो सुखदाता।।पार्श्व.।।942।।

ॐ ह्रीं आप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वागीश्वर' दिव्यधुनी के।
लोल तरंग वचोऽमृत गंगा।।पार्श्व.।।943।।

ॐ ह्रीं वागीश्वराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'श्रेयान्' प्रभो! श्रिय दाता।
अंतर बाहिर श्री मुझको दो।।पार्श्व.।।944।।

ॐ ह्रीं श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रायसउक्ति' हितंकर वाणी।
नाथ! मुझे निज रत्नत्रयी दो।।पार्श्व.।।945।।

ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थकवाच 'निरुक्तवाक्' हो।
आप धुनी मन शांति करेगी।।पार्श्व.।।946।।

ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रवक्ता' श्रेष्ठ वचों से।
धर्मसुधा बरसा जन तोषा।।पार्श्व.।।947।।

ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'वचसामिश' मानें।
धर्म वचन के ईश्वर ही हो।।पार्श्व.।।948।।

ॐ ह्रीं वचसामीशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मारजीता' प्रभु कामजयी हो।
सर्व मनोरथ पूर्ण करो जी।।पार्श्व.।।949।।

ॐ ह्रीं मारजिते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वभाववित्' तीन जगत को।
जान लिया मुझ ज्ञान सुधा दो।।पार्श्व.।।950।।

ॐ ह्रीं विश्वभाववित्रे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

नाथ 'सुतनु' उत्तमतनू, अतिशय दीप्ति धरंत।
पूर्ण निरामय हेतु मैं, नमूं पार्श्व भगवंत।।951।।

ॐ ह्रीं सुतनवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तनुनिर्मुक्त' सुज्ञानतनु, मुक्तिपती अशरीर।
स्वात्म सुधारस प्राप्त हो, नमत मिले भवतीर।।952।।

ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी 'सुगत' हो, आत्मरूप में लीन।
सुगतिगमन के हेतु मैं, नमू करो दुखहीन।।953।।

ॐ ह्रीं सुगताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हतदुर्नय' सम्यक्सुनय, सापेक्षिक उपदिष्ट।
अनेकांत को प्राप्त कर, जजते हरूँ अनिष्ट।।954।।

ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीश' मुक्तिश्रीपती, कीजे मुझे निहाल।
तपलक्ष्मी को दीजिये, नमूँ नमूँ नत भाल।।955।।

ॐ ह्रीं श्रीशाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मीसेवित पद कमल, प्रभु 'श्रीश्रितपादाब्ज'।
लक्ष्मी इच्छुक भव्यजन, पूजें तुम पादाब्ज।।956।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वीतभी' भव्य को, दिया अभय का दान।
जन्म मरण भय नाशिये, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।957।।

ॐ ह्रीं वीतभिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'अभयंकर' जगत्, क्षेमंकर हितकार।
निर्भय पद दीजे मुझे, जजूँ मोक्ष दातार।।958।।

ॐ ह्रीं अभयंकराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'उत्सन्नदोष' हो, अठरह दोष विमुक्त।
जजूँ पार्श्व प्रभु भक्ति से, होऊँ दोष विमुक्त।।959।।

ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निर्विघ्न' तुम्हीं कहे, अंतराय से हीन।
शिवपथ विघ्न निवारिये, नमूँ आप गुणलीन।।960।।

ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला पर राजते, 'निश्चल' मुनिगण वंद्य।
मेरा मन सुस्थिर करो, नमूँ नमूँ सुख कंद।।961।।

ॐ ह्रीं निश्चलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'लोकवत्सल' तुम्हीं, भक्तों के आधार।
तुम पद प्रीती सौख्यप्रद, भरे सुगुण भंडार।।962।।

ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकोत्तर' विश्व में, सर्वश्रेष्ठ जग वंद्य।
नमत अनुत्तर पद मिले, जहाँ सौख्य अभिनंद्य।।963।।

ॐ ह्रीं लोकोत्तराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'लोकपति' त्रिजगपति, भविरक्षक भगवान्।
रत्नत्रय निधि दीजिये, जजत बनूं धनवान्।।964।।

ॐ ह्रीं लोकपतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकचक्षु' त्रैलोक्य को, ज्ञानचक्षु से देख।
लोक शिखर पर राजते, नमत हरूँ विधि लेख।।965।।

ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान अनंत 'अपारधी', हरो मोह अज्ञान।
ज्ञान ज्योति देकर मुझे, करिये त्रिजग महान्।।966।।

ॐ ह्रीं अपारधिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुस्थिर तिष्ठे 'धीरधी', गमनागमन विहीन।
मैं उपसर्ग विजयी बनूं, जजूँ आप गुण लीन।।967।।

ॐ ह्रीं धीरधिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'बुद्धसन्मार्ग' हो, दिखलाता शिव मार्ग।
नमूँ आपको भक्ति से पाऊँ निज सन्मार्ग।।968।।

ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यभाव नोकर्म से, रहित 'शुद्ध' परमात्म।
मेरा कलिमल दूर हो, नमत मिले शुद्धात्म।।969।।

ॐ ह्रीं शुद्धाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सत्यसूनृतवचन', तुम ध्वनि परम पवित्र।
परमौषधि अमृत सदृश, जजतें स्वात्म पवित्र।।970।।

ॐ ह्रीं सत्यसूनृतवाचे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'प्रज्ञापारमित', ज्ञान अनंत धरंत।
द्वादशांग श्रुत हेतु मैं, नमूँ पार्श्व भगवंत।।971।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राज्ञ' सर्वविद्या सहित, त्रिभुवन वंद्य महान्।
सब विद्यादाता तुम्हीं, नमूँ बनूँ श्रुतवान्।।972।।

ॐ ह्रीं प्राज्ञाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष हेतु चारित्र में, किया प्रयत्न जिनेश।
'यति' तुमको नितप्रति नमूँ, मिलें आप गुण लेश।।973।।

ॐ ह्रीं यतये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नियमितेन्द्रिय' आप ही, इन्द्रिय विजयी देव।
पंचेन्द्रिय मन जीत लूं, इसी हेतु तुम सेव।।974।।

ॐ ह्रीं नियमितेन्द्रियाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन जग में वंद्य हो, प्रभु 'भदंत' भगवान।
नमत अंतरात्मा बनूं, पुनः बनूं भगवान।।975।।

ॐ ह्रीं भदंताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विश्व, कल्याणकृत, आप 'भद्रकृत्' नाम।
मेरा हित कीजे प्रभो!, करूँ अनंत प्रणाम।।976।।

ॐ ह्रीं भद्रकृते श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व लोक मंगल करण, 'भद्र' तुम्हीं मुनिवंद्य।
हरो अमंगल भक्त के, नमन हरूँ भवफंद।।977।।

ॐ ह्रीं भद्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुंहमांगा फल देत हो, 'कल्पवृक्ष' जग सिद्ध।
एकहि फल अब दीजिये, मुझ आत्मा हो सिद्ध।।978।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वरप्रद' मुझ भक्त को, दे दीजे वरदान।
निश्चय रत्नत्रय अमल, जो है स्वात्म निधान।।979।।

ॐ ह्रीं वरप्रदाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समुन्मूलित कर्म अरी', किये कर्म निर्मूल।
जड़ से मोह विनाश कर, करूँ स्वात्म अनुकूल।।980।।

ॐ ह्रीं समुन्मूलितकर्मारिये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी' ध्यान अग्नि से आप।
कर्म भस्म कर शिव गये, जजत बनूं निष्पाप।।981।।

ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष सिद्धि में आप ही, निपुण अतः 'कर्मण्य'।
कार्य सिद्धि कर भव्यजन, जो जाते हैं धन्य।।982।।

ॐ ह्रीं कर्मण्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कर्मठ' कर्मारि के, नाशन हेतु समर्थ।
विषय कषायों को तजूँ, मैं पूजूँ इस अर्थ।।983।।

ॐ ह्रीं कर्मठाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रांशु' आप सर्वोच्च हैं, त्रिभुवन के गुरु मान्य।
पूजत ही सुखसंपदा, मिले सर्व धन धान्य।।984।।

ॐ ह्रीं प्रांशवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हेयादेयविचक्षणा' हित उपदेशी नाथ।
अहित मार्ग से दूर कर, हित कीजे मुझ नाथ।।985।।

ॐ ह्रीं हेयादेयविचक्षणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनंतशक्ती' तुम्हीं, गुण अनंत के सिंधु।
मुझको भी कुछ शक्ति दो, तिर जाऊँ भव सिंधु।।986।।

ॐ ह्रीं अनंतशक्तये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अच्छेद्य' त्रिलोक में, ज्ञान अखंड धरंत।
मेरा ज्ञान अखंड हो, नमूँ पार्श्व भगवंत।।987।।

ॐ ह्रीं अच्छेद्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म जरा मृति तीन पुर, नाश हुये 'त्रिपुरारि'।
तीन शत्रु के नाशने, नमूँ नमूँ त्रय बारि।।988।।

ॐ ह्रीं त्रिपुरारये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'त्रिलोचन' देखते, तीन लोक त्रयकाल।
एक ज्ञान के हेतु मैं, नमूँ नमाकर भाल।।989।।

ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'त्रिनेत्र' तुम जन्म से, मति श्रुत अवधि त्रिज्ञानि।
युगपत् त्रिभुवन देखते, नमत बनूँ निज ज्ञानि।।990।।

ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक पितु आप ही, 'त्र्यंबक' कहते साधु।
मेरी भी रक्षा करो, जजत स्वात्मरस स्वादु।।991।।

ॐ ह्रीं त्र्यंबकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन रत्न के हो धनी, कहें 'त्र्यक्ष' मुनिराज।
त्रिकरण शुद्धी से नमूँ, तीन रत्न के काज।।992।।

ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'केवलज्ञानवीक्षण' तुम्हीं, घाति चतुष्टय नाश।
प्राप्त अनंत चतुष्टयी, जजत हरूँ यमपाश।।993।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जग को मंगल करण, भगवन् 'समंतभद्र'।
मेरा भी मंगल करो, हरो उपद्रव सर्व।।994।।

ॐ ह्रीं समंतभद्राय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! आप 'शांतारि' हो, किया मोह अरि शांत।
मोह शत्रु के नाशने, शक्ती दो शिवकांत।।995।।

ॐ ह्रीं शांतारये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माचार्य' प्रसिद्ध हो, शिवपथ नेता नाथ।
मुझे धर्मनिधि दीजिये, नमूँ नमाऊँ माथ।।996।।

ॐ ह्रीं धर्माचार्याय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'दयानिधि' मान्य हो, करुणा के भंडार।
दयादृष्टि मुझ पर करो, भरो सौख्य भंडार।।997।।

ॐ ह्रीं दयानिधये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म अंतरित वस्तु सब, देख लिया इक साथ।
नाथ 'सूक्ष्मदर्शी' तुम्हीं, नमत सर्व सुख हाथ।।998।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितानंग' भगवान ने, किया कामरिपु नाश।
मेरी वांछा पूरिये, करिये भव का नाश।।999।।

ॐ ह्रीं जितानंगाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'कृपालु' करके कृपा, करिये भव से पार।
एक मोक्ष के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।1000।।

ॐ ह्रीं कृपालवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

शाश्वत धर्म निरूप्य, नाथ! 'धर्मदेशक' कहे।
नमत मिले निजरूप, जजत सर्वसुख संपदा।।1001।।

ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'शुभंयु' आप, त्रिभुवन में मंगल करो।
हरो मोहसंताप, जजूँ नित्य गुण गायके।।1002।।

ॐ ह्रीं शुभंयवे श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनवधि सुख विलसंत, 'सुखसाद्भूत' प्रसिद्ध हो।
निजसुख मिले अनंत, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के।।1003।।

ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यराशि' भगवंत, श्रेष्ठ पुण्य फलरूप हो।
जजत मिले भव अंत, शिरोरोग सब दूर हों।।1004।।

ॐ ह्रीं पुण्यराशये श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म जरा मृति रोग, शून्य 'अनामय' आप हो।
मिटें हृदय के रोग, पूर्ण स्वास्थ्य हो पूजते।।1005।।

ॐ ह्रीं अनामयाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मपाल' भगवान्, धर्मतीर्थ कर्ता तुम्हीं।
जजूँ पार्श्व गुणखान, रक्तचाप व्याधी नशे।।1006।।

ॐ ह्रीं धर्मपालाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्पाल' जिनदेव, त्रिभुवन गुरु जगपूज्य हो।
नमत करूँ भवछेव, शिवलक्ष्मी पाऊँ तुरत।।1007।।

ॐ ह्रीं जगत्पालाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मपरमसाम्राज्य', उसके स्वामी आप ही।
मिले स्वात्म साम्राज्य, जजूँ अर्घ्य ले भक्ति से।।1008।।

ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

दिग्वासादिक नाम एक सौ, आठ आपके सुरपति गाते।
नाममंत्र को मन में ध्याकर, योगीजन निज संपति पाते।।
मैं भी प्रतिक्षण नाममंत्र को, हृदय कमल में धारण कर लूँ।
प्रभु ऐसी दो शक्ती मुझको, तुम भक्ती से भवदधि तर लूँ।।10।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादि–अष्टोत्तरशतनामसमन्वित–श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार आठ गुणमणिमय, नामधार जिनपार्श्व प्रभो!।
गुण अनंत रत्नाकर भगवन्, नाममात्र गुणनिद्धि विभो!।।
इन गुणयुत प्रभु पद का वंदन, यम का खंडन करता है।
नमूँ अनंतों बार नमूँ मैं, पूजत शिवसुख भरता है।।11।।

ॐ ह्रीं अष्टाधिकसहस्रगुणधारक-श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(जाप्य मंत्र-108 बार)

जाप्य – **ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

(शंभु छंद-तर्ज-चंदन सा वदन.....)

जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।
जय जय प्रभु के श्रीचरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।।टेक.।।
नाना महिपाल तपस्वी बन, पंचाग्नी तप कर रहा जभी।
प्रभु पार्श्वनाथ को देख क्रोधवश, लकड़ी फरसे से काटी।।
तब सर्प युगल उपदेश सुना, मर कर सुर पद को पाये हैं।।जय.।।1।।
यह सर्प सर्पिणी धरणीपति, पद्मावति यक्षी हुए अहो।
नाना मर शंबर ज्योतिष सुर, समकित बिन ऐसी गती अहो।।
नहिं ब्याह किया प्रभु दीक्षा ली, सुर नर पशु भी हर्षाये हैं।।जय.।।2।।
प्रभु अश्वबाग में ध्यान लीन, कमठासुर शंवर आ पहुँचा।
क्रोधित हो सात दिनों तक बहु, उपसर्ग किया पत्थर वर्षा।।
प्रभु स्वात्म ध्यान में अविचल थे, आसन कंपते सुर आये हैं।।जय.।।3।।
धरणेंद्र व पद्मावति ने फण पर, लेकर प्रभु की भक्ती की।
रवि केवलज्ञान उगा तत्क्षण, सुर समवसरण की रचना की।।
अहिच्छत्र नाम से तीर्थ बना, अगणित सुरगण हर्षाए हैं।।जय.।।4।।

यह देख कमठचर शत्रू भी, सम्यक्त्वी बन प्रभु भक्त बने।
मुनिनाथ स्वयंभू आदिक दश, गणधर थे ऋद्धीवंत घने।।
सोलह हजार मुनिराज प्रभू के, चरणों में शिर नाये हैं।।जय.।।5।।
गणिनी सुलोचना प्रमुख आर्यिका, छत्तिस सहस धर्मरत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकायें, त्रय लाख वहाँ जिन भाक्तिक थीं।।
प्रभु सर्प चिन्ह तनु हरित वर्ण, लखकर रवि शशि शर्माये हैं।।जय.।।6।।
नव हाथ तुंग सौ वर्ष आयु, प्रभु उग्र वंश के भास्कर हो।
उपसर्गजयी संकटमोचन, भक्तों के हित करुणाकर हो।।
प्रभु महासहिष्णू क्षमासिंधु, हम भक्ती करने आये हैं।।जय.।।7।।
चौंतिस अतिशय के स्वामी हो, वर प्रातिहार्य हैं आठ कहे।
आनन्त्य चतुष्टय गुण छ्यालिस, फिर भी सब गुण आनन्त्य कहे।।
बस केवल 'ज्ञानमती' हेतू, प्रभु तुम गुण गाने आये हैं।।
जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।।जय.।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो पार्श्वनाथ विधान भविजन, भक्ति श्रद्धा से करें।
वे पापकर्म सहस्र नाशें, सहस मंगल विस्तरें।।
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो, हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों, कामनायें भी फलें।।1।।

इत्याशीर्वादः

बड़ी जयमाला

–स्रग्विणी छंद–

हे प्रभो! आप सौ इन्द्र से वंद्य हैं।
तीन ही लोक के ईश अभिनंद्य हैं।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।1।।

चार गति में भ्रमा सौख्य का लेश ना।
जन्म औ मृत्यु ये दुःख देवें घना।।पूरिये.।।2।।

नाथ! नीगोद में एक ही श्वांस में।
आठ दश बार जन्मा मरा नाथ! मैं।।पूरिये.।।3।।

भू पवन अग्नि जल औ वनस्पति हुआ।
एक इन्द्रीय तनु धार बहु दुख सहा।।पूरिये.।।4।।

केंचुआ शंख चींटी ततैया हुआ।
जन्म धर धर मुआ जन्म धर धर मुआ।।पूरिये.।।5।।

पंच इंद्री पशू योनि धर दुख सहा।
क्रूर सिंहादि हो पाप करता रहा।।पूरिये.।।6।।

पाप से नर्क में नारकी हो गया।
सागरों वर्ष की आयु धर दुख सहा।।पूरिये.।।7।।

नर्क की वेदना जो सही नाथ! मैं।
भारती भी न कहने में सक्षम उन्हें।।पूरिये.।।8।।

आप हो केवली सर्व कुछ जानते।
शीघ्र रक्षा करो भक्त मुझ मानके।।पूरिये.।।9।।

मैं मनुज योनि में भी दुखी ही दुखी।
इष्ट वीयोग आनिष्ट संयोग भी।।पूरिये.।।10।।

रोग शोकादि दारिद्र संकट घने।
नाथ! सम्यक्त्व बिन दुख ही दुख घने।।पूरिये.।।11।।

देव की योनि में मानसिक ताप से।
दुख पाया विभो! अब कहूँ आप से।।पूरिये.।।12।।

मैं सुना शास्त्र में आपही हो सुखी।
सिद्धसुख की नहीं कोइ उपमा कभी।।पूरिये.।।13।।

एक ही शास्त्र को जान आनंद हो।
आप त्रैलोक्य जाना महानंद हो।।पूरिये.।।14।।

चक्रि के भोगभूमिज व धरणेन्द्र के।
इन्द्र अहमिंद्र के सुख अनंते गुणें।।पूरिये.।।15।।

इन सभी के त्रिकालीक सुख लीजिये।
इन सुखों को अनंते गुणा कीजिये।।पूरिये.।।16।।

स्वात्म सुख क्षण का भि उत्कृष्ट है।
तोल सकते न इसको परम श्रेष्ठ है।।पूरिये.।।17।।

स्वात्म सुख की नहीं कल्पना हो सके।
जीव छद्मस्थ इस स्वाद ना ले सकें।।पूरिये.।।18।।

आज मैं आपकी अर्चना कर रहा।
आत्मसुख चाह से वंदना कर रहा।।पूरिये.।।19।।

धन्य मेरा जनम धन्य है ये घड़ी।
धन्य अवसर मिला ज्ञान बल्ली बढ़ी।।पूरिये.।।20।।

पूर्ण शशि रश्मि से जैसे सागर बढ़े।
वैसे प्रभु सामने ज्ञान सिंधु बढ़े।।पूरिये.।।21।।

मैं नमूँ मैं नमूँ कोटि कोटी नमूँ।
सर्वमिथ्यात्व क्रोधदि विष को वमूँ।।पूरिये.।।22।।

तीन ही रत्न के हेतु फिर फिर नमूँ।
''ज्ञानमती'' पूर्ण हो नाथ! ये ही चहूँ।।पूरिये.।।23।।

पार्श्वप्रभु भक्ति ही सर्व वरदायिनी।
आप गुण कीर्ति गुण संपदा दायिनी।।पूरिये.।।24।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रगुणसमन्विताय सर्वोपद्रवनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथाय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतेय शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो पार्श्वनाथ विधान भविजन, भक्ति श्रद्धा से करें।
वे पापकर्म सहस्र नाशें, सहस मंगल विस्तरें।।
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो, हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों, कामनायें भी फलें।।1।।

इत्याशीर्वादः।

प्रशस्ति

चौबीस तीर्थंकर को वंदूँ, मां सरस्वती को नमन करूँ।
गणधर गुरु के सब साधू के, श्री चरणों में नित शीश धरूँ।।
इस युग में कुंदकुंदसूरी, का अन्वय जगत प्रसिद्ध हुआ।
इसमें सरस्वती गच्छ बलात्कार–गण अतिशायि समृद्ध हुआ।।1।।

इस परंपरा में साधु मार्ग, उद्धारक दिग् अम्बर धारी।
श्री प्रथमाचार्य शांतिसागर, चारित्र–चक्रि पद के धारी।।
इन गुरु के पट्टाधीश हुये, आचार्य वीरसागर गुरुवर।
इनकी मैं शिष्या गणिनी–ज्ञानमती आर्यिका प्रथित भू पर।।2।।

वीराब्द पच्चीस शतक चालिस, भादों सुदि अष्टमि तिथि शुभतम।
श्री हस्तिनागपुर तीर्थ क्षेत्र, में सोलहकारण व्रत उत्तम।।
यह पार्श्वनाथ जिनवर विधान, भक्ती से मैं संकलन किया।
वर एक हजार आठ नामों, से पार्श्वनाथ स्तवन किया।।3।।

तीर्थंकर प्रभु की भक्ती से, मैंने विधान रचना की है।
उपसर्गजयी श्री पार्श्वनाथ, जिनवर गुण की निधियाँ ही हैं।।
मैंने जिनवर की भक्तीवश, बहुतेक विधान रचे सुंदर।
इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र पूजा मनहर।।4।।

श्री जंबूद्वीप व तीनलोक, आदिक विधान जगमान्य हुये।
भक्तीप्रधान इस युग में तो, भक्तों को अतिशय मान्य हुये।।
श्री पार्श्वनाथ का यह विधान, भव्यों को अतिशय प्रिय होवे।
जब तक जिनधर्म रहे जग में, तब तक भक्तों का अघ धोवे।।5।।

इति सर्वोपद्रवनिवारक-श्रीपार्श्वनाथविधानं संपूर्णम्।
वर्धतां जिनशासनम्।।

श्री पार्श्वजिन स्तोत्र

भवसंकट हर्ता पार्श्वनाथ! विघ्नों के संहारक तुम हो।
हे महामना हे क्षमाशील! मुझमें भी पूर्ण क्षमा भर दो।।
यद्यपि मैंने शिव पथ पाया, पर यह विघ्नों से भरा हुआ।
इन विघ्नों को अब दूर करो, सब सिद्धि लहूँ निर्विघ्नतया।।1।।

वाराणसि नगरी धन्य हुई, धन धन्य हुए सब नर नारी।
हे अश्वसेननंदन ! तुम से, वामा माँ भी मंगलकारी।।
वैशाख वदी वह दूज भली, माता उर आप पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता से प्रश्न विचारे थे।।2।।

शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि थी, जब आए प्रभु साक्षात् यहां।
शैशव में सुर संग खेल रहे, अहियुग को दीना मंत्र महा।।
तब नागयुगल धरणेन्द्र तथा, पद्मावति होकर भक्त बने।
शुभ पौष वदी ग्यारस के दिन, प्रभु दीक्षा ले मुनि श्रेष्ठ बने।।3।।

तत्क्षण मनपर्ययज्ञानी हो, सब ऋद्धी से परिपूर्ण हुए।
इक समय सघन वन के भीतर, प्रभु निश्चल ध्यानारूढ़ हुए।।
कमठासुर ने उपसर्ग किया, अग्नी ज्वाला को उगल-उगल।
पत्थर फेंके मूसलधारा, वर्षायी आंधी उछल-उछल।।4।।

निष्कारण ही कमठासुर ने, दश भव तक बैर निकाला था।
प्रभु को दुख दे देकर उसने, खुद को दुर्गति में डाला था।।
प्रभु महासहिष्णु क्षमा सिन्धु, भव-भव से सहते आये हैं।
तन से ममता को छोड़ दिया, नहिं किंचित् भी घबराए हैं।।5।।

प्रभु क्षपक श्रेणि में चढ़ करके, मोहनी कर्म का नाश किया।
उस ही क्षण धरणीपति पद्मावति, आ करके बहुभक्ति किया।।
प्रभु को मस्तक पर धारण कर, ऊपर से फण का छत्र किया।
प्रभुवर ने ही उस ही क्षण में, कैवल्य श्री को वरण किया।।6।।

पृथ्वी से बीस हजार हाथ, ऊपर पहुँचे अर्हन्त बने।
इन्द्रों के आसन कांप उठे, प्रभु समवसरण गगनांगण में।।
वदि चैत्र चतुर्थी तिथि उत्तम, जब प्रभु में ज्ञान प्रकाश हुआ।
उस स्थल का उस ही क्षण से, 'अहिच्छत्र' तीर्थ यह नाम हुआ।।7।।

नव हाथ देह सौ वर्ष आयु, मरकतमणि सम आभाधारी।
अहि चिह्न सहित वे पार्श्वप्रभो! मुझको हों नित मंगलकारी।।
श्रावण सुदि सप्तमि तिथि के दिन, सिद्धीकांता से प्रीति लगी।
मैं नमूं 'ज्ञानमती' तुम्हें सदा, मेरी हो सर्वसहा मती।।8।।

भगवान श्री पार्श्वनाथ की आरती

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–करती हूं तुम्हारी पूजा.....

करते हैं प्रभू की आरति, मन का दीप जलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।टेक.।।

हे अश्वसेन के नन्दन, वामा माता के प्यारे।
तेईसवें तीर्थंकर पारस, प्रभु तुम जग से न्यारे।।
तेरी भक्ती गंगा में जो स्नान करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।जय पारस देवा-4।।1।।

वाराणसि में जन्में, निर्वाण शिखरजी से पाया।
इक लोहा भी प्रभु चरणों में, सोना बनने आया।।
सोना ही क्या वह लोहा, पारसनाथ बनेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।जय पारस देवा-4।।2।।

सुनते हैं जग में वैर सदा, दो तरफा चलता है।
पर पार्श्वनाथ का जीवन, इसे चुनौती करता है।।
इक तरफा वैरी ही कब तक, उपसर्ग करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।3।।

कमठासुर ने बहुतेक भवों में, आ उपसर्ग किया।
पारसप्रभु ने सब सहकर, केवलपद को प्राप्त किया।।
कैवल्य ज्योति से पापों का, अंधेर मिटेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।4।।

प्रभु तेरी आरति से मैं भी, यह शक्ती पा जाऊं।
''चंदनामती'' तव गुणमणि की, माला यदि पा जाऊं।
तब जग में नहिं शत्रू का, मुझ पर वार चलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।5।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–पंखिड़ा.....

वंदना करूँ मैं प्रभू पार्श्वनाथ की।
अश्वसेन और माता वामा लाल की।।
वंदना.....वंदना.....वंदना.....वंदना.....।। टेक.।।

देखो वाराणसी से प्रभू के भक्त आये हैं।
प्रभु के जन्म की खुशी में सुन्दर रत्न लाए हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।1।।

देखो अहिच्छत्र से प्रभू के भक्त आए हैं।
केवलज्ञान की खुशी में सुन्दर गीत गाये हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।2।।

देखो गिरि सम्मेद से प्रभू के भक्त आए हैं।
प्रभु के मोक्ष की खुशी में सभी लाडू लाए हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।3।।

सारे देश के पुजारी भक्त दर पे आते हैं।
'चन्दनामती' ये भक्ति करके पुण्य पाते हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।4।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है।
तीन लोक के सौ इन्द्रों ने, किया तुम्हें वंदन है।।
सौ-सौ बार नमन है-2
पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में, सौ-सौ बार नमन है।।टेक.।।

तीन तीर्थ माने हैं जिनके, पंचकल्याण से पावन,
वाराणसि, अहिच्छत्र और सम्मेदशिखर मनभावन।
इनके दर्शन से भक्तों के, पावन होते मन हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।1।।

वर्तमान में पार्श्वनाथ का, अतिशय खूब बखाना,
अंतरिक्ष, शिरपुर, चंवलेश्वर, मक्सी, अडिन्दा जाना।
अतिशायी कचनेर में जाकर, करो प्रभू दर्शन है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।2।।

कर्नाटक के बीजापुर में, सहस्रफणा पारस हैं,
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में, चिन्तामणि पारस हैं।
भारत के अनेक नगरों में, पारस प्रभु मंदिर हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।3।।

गणिनी ज्ञानमती माता, कहती हैं सब भक्तों को,
पारस प्रभु के अतिशय से, परिचित करवाओ सबको।
सभी ''चन्दनामती'' हमेशा, उत्सव करो सफल है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।4।।